नबी ﷺ के सम्मान की रक्षा

लेखिका:

डॉक्टर क़ज़ला बिंत मुहम्मद अल-क़हतानी

इसी के साथ संलग्न है:

ईद मीलादुन्नबी ﷺ मनाना कैसा है?

लेखिका:

डॉक्टर क़ज़ला बिंत मुहम्मद अल-क़हतानी

अनुवाद:

साबिर हुसैन मुहम्मद मोजीबुर रहमान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जरूरी संदेश...

हरेक उस व्यक्ति के नाम जो अल्लाह के रब (पालनहार), मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी तथा इस्लाम के दीन होने का ईमान रखता है।

पूरब एवं पश्चिम में रहने वाले उन प्रत्येक मुस्लिम पुरुषों एवं महिलाओं के नाम जो सर्वोत्तम मानव एवं रसूलों के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध किए जा रहे कुंठित व घृणित हमलों को देख या सुन रहे हैं, वह नबी जिनके समक्ष मूर्तियों ने आत्मसमर्पण कर दिया था और जो अपनी इच्छा से कुछ नहीं बोलते बल्कि वह जो कुछ भी बोलते हैं वह उनकी ओर की गई वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) होती है, वह हौज़ (कुंड) वाले जहाँ प्यासे आएंगे और पताका (झण्डा) वाले जो उनके लिए गाड़ा जाएगा, चमकते ललाट तथा दमकते अंगों वाली उम्मत के सरदार और जो क़यामत (महाप्रलय) के दिन अल्लाह की प्रशंसा करने वालों के ध्वजवाहक होंगे।

उन समस्त मुश्रिक (बहुदेववादी) अथवा नास्तिकों के नाम जो हक़ (सत्य) की खोज में हैं, और जो प्रकाश एवं सीधे मार्ग की ओर आना चाहते हैं।

प्राक्कथन

إن الحمد لله نحمده ونستعينه، ونستغفره ونتوب إليه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعما لنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله، أدى الأمانة ونصح الأمة، وجاهد في الله حق جهاده.

وبعد:

समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी ही प्रशंसा करते हैं एवं उससे ही सहायता मांगते हैं, हम उससे अपने पापों की क्षमा चाहते हैं तथा उसके समक्ष तौबा करते हैं, हम अपनी जान (आत्मा) की बुराइयों एवं अपने कर्म की बुराइयों से अल्लाह की शरण चाहते हैं, जिसको अल्लाह हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) नहीं कर सकता एवं जिसे दिगभ्रमित कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा माबूद (उपास्य, पूज्य) नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदा व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) हैं जिन्होंने अमानत (जिम्मेवारी) अदा कर दिया एवं उम्मत को नसीहत (सदुपदेश, सलाह) कर दी, एवं अल्लाह के मार्ग में पूर्णरूपेण प्रयासरत रहे और उसका हक़ अदा कर दिया।

इन समस्त प्रशंसाओं के पश्चातः

हमारे प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर मीडिया द्वारा किए जा रहे पूर्वाग्रह से ग्रसित, कुंठित एव घृणित हमले किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की स्वच्छ छवी को धूमिल एवं दाग़दार करना है, ऐसी परिस्थिति में हम मुसलमानों के ऊपर अनिवार्य हो जाता है कि हम नबी -ए- करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए, एवं आपके सम्मान की रक्षा के लिए तैयार हो जाएं, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान की रक्षा में अपने प्राण एवं धन की आहुती देने में भी पीछे न हटें, आपसे प्रेम करने एवं आपको अपने प्राण, धन एवं संतान पर प्राथमिकता देने की यही सच्ची निशानी है, और इसी अर्थ को परिभाषित करने वाली हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में आई है किः "तुम में से कोई भी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके समक्ष उसकी संतान, उसके माता-पिता तथा समस्त लोगों से अधिक प्रिय न हो जाउँ"।

वास्तविकता तो यह है कि यह समस्त हमले चाहे इसके अंदर जितनी भी कुंठा, पूर्वाग्रह, जलन, ईर्ष्या, डाह एवं इस्लाम विरोधी षड्यंत्र हों, यह खोखली बातें मात्र हैं जिनसे धर्मों एवं पंथों के इतर समस्त संसार के हृदय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति जो प्रेम है उसमें रत्ती भर भी कमी नहीं आती, लोगों के दिलों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति जो स्नेह, सम्मान एवं श्रद्धा है उसको हरेक युग के न्यायप्रिय इतिहासकारों ने स्वीकारा है।

इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि किस प्रकार ईसाई राजा उस पत्र का सम्मान करते थे जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के पास भेजा करते थे।

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "सुहैली ने उल्लेख किया है कि उन्हें यह ख़बर पहूँची है कि हिरक़्ल ने आपके पत्र का सम्मान करते हुए उसे सोने के एक बर्तन में रखा था, और इसी प्रकार से उसके वंश में इसका स्थानांतरण होता रहा यहाँ तक कि फ्रांस के उस राजा तक पहूँचा जिसने स्पेन की राजधानी टोलेडो (Toledo) पर विजय प्राप्त किया था, उसके बाद वह पत्र उसके नाती के पास रहा, मुझे एक मित्र ने बताया कि मुस्लिमों के क़ायद (सरदार) अब्दुल मलिक बिन साद की जब उस राजा से भेंट हुई तो उसने उन्हें यह पत्र दिखाया जिसे देख कर उनकी आंखों से अश्रुधारा फूट पड़ी और उन्होंने उसे चूमने की अनुमति चाही जो उन्हें नहीं मिल सकी"।

केनेडियन मुसतशरिक़[1] डॉक्टर ज़्वेमर अपनी पुस्तक "पूरब एवं उनका स्वभाव" में लिखते हैं:

"इसमें कोई संशय नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुसलमानों के सबसे बड़े धार्मिक रहनुमा थे, उनके संबंध में यह कहना बिल्कुल उचित है कि वह एक सामर्थ्य सुधारक, भाषा पर मज़बूत पकड़ रखने वाले तथा अपनी बात को सुंदर एवं मनोहर रूप में स्वाभाविकता एवं प्रवाहशीलता के साथ रखने की कला में पारंगत थे, निडर योद्धा तथा महान दार्शनिक थे, हमारे लिए किसी भी प्रकार से यह उचित नहीं है कि हम उनके बारे में ऐसी बातें कहें जो पूर्वोल्लेखित गुणों के विपरीत हो, यह क़ुरआन जिसको ले कर वह अवतरित हुए हैं तथा उनका सम्पूर्ण इतिहास हमारे द्वारा कही गई बातों को सच साबित करती हैं"।

अंग्रेज दार्शनिक बर्नाडशॉ अपनी पुस्तक "मुहम्मद" में अपने उदगार इस प्रकार व्यक्त करता हैः

"संसार को एक ऐसे व्यक्ति की अत्यंत आवश्यकता है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समान सोच रखने वाला हो, यह वह नबी हैं जिन्होंने अपने धर्म को सदा सम्मान के साथ लोगों के समक्ष रखा, यह धर्म संसार के सभी सामाजिक ज़ुल्म, अत्याचार एवं अन्याय के विरूद्ध एक ठोस धर्म है जो सर्वदा रहने वाला है, मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि हमारे समुदाय के बहुतेरे लोग सोच-समझ कर इस धर्म को स्वीकार कर चुके हैं, इस महाद्वीप में इस धर्म को बड़ी प्रसिद्धी मिलने वाली है"।

ये तो मैंने बस कुछ उदाहरण आप के सामने रखे हैं, और मेरा अपना अनुमान है कि इन्हीं हमलों की ओट से यूरोप, अमेरिका एवं समस्त संसार में इस्लाम के लिए एक बड़ी सफलता, उसकी विजय और प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त होगा।

इसी उद्देश्य से यह पुस्तिका हमने आपके समक्ष रखा है ताकि हमारे प्रिय एवं आँखों की ठंडक मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद का ह़क़ अदा हो सके जोकि आप के हमारे ऊपर जो ह़क़

[1] Orientalist, पश्चिमी देशों के उस ज्ञानी व्यक्ति को कहा जाता है जो पूर्वी एशिया के देशों, विशेषतः इस्लाम धर्म की भाषा, संस्कृति, इतिहास या रीति-रिवाजों का अध्ययन करता है।

हैं उनमें सबसे तुच्छ हक़ है, अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इसे ख़ालिस अपनी रज़ा के लिए स्वीकार कर ले, अल्लाह मुझे और उन समस्त लोगों को जिन्होंने आपकी मदद करने में भाग लिया और आपके सम्मान की रक्षा के लिए सीना तान कर खड़े हो गए आपके संग उठाए, अल्लाह तआला हमें क़यामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ नसीब करे और हमें उस सम्मानित हौज़ (कुंड) से पिलाए जिसको पीने के पश्चात हम कभी प्यासे न हों ... आमीन।

وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه وسلم

असंख्या दरूद व सलाम उतरे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर एवं उनके घर वालों तथा उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर।

डॉक्टर क़ज़ला बिन्त मुहम्मद अल-क़हतानी

वेबसाइट का लिंकः

https://d-gathla.com

पहला अध्याय

इस अध्याय में दो पाठ हैं:

प्रथम पाठः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत का प्रमाण

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत ऐसा शाश्वत सत्य है जिसमें किसी प्रकार के वाद-विवाद की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि आप की नबूवत का इंकार वास्तव में अल्लाह तआला की रूबूबियत एवं उलूहियत का इंकार करना है, बल्कि यह अल्लाह द्वारा उतारी गई समस्त किताबों, शरीअतों (विधानों) एवं आपके पहले आने वाले सभी नबियों का इंकार करना है, इसको ऐसे समझें कि पूर्व के उन धर्मों को सही ढंग से आपके द्वारा ही जाना व समझा जा सकता है, इसी प्रकार से आपके पूर्व जितने भी नबी आए सभों ने आपकी नबूवत के बारे में शुभ-सूचना दी थी, अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाना मानो उन समस्त नबियों को झुठलाना है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी आश्चर्यचकित कर देने वाली आयतें (निशानियां, चमत्कार) एवं बड़ी-बड़ी दलीलें ले कर आए जो आप से पूर्व के कोई भी नबी ले कर नहीं आए थे, इतनी स्पष्ट निशानियों के बाद भी यदि कोई आपकी नबूवत में संशय करता है तो माना जाएगा कि अन्य नबियों की नबूवत में वह इससे बढ़ कर संशय कर रहा है।[1]

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि इस प्रकार के घृणित हमले उस समुदाय की ओर से हो रहे हैं जो अहले किताब (यहूदी व ईसाई) हैं, जब्कि होना तो यह चाहिए था कि अहले -ए- किताब यदि रसूलों और रिसालतों पर ईमान न भी रखते तो कम से कम उनका सम्मान तो करते, उन लोगों की ओर से ऐसे कृत्य को अंजाम देना इस बात का प्रमाण है कि ये मुल्क कुफ्र, शिर्क तथा गुमराही व पथभ्रष्टता वाले स्थान हैं जो ऐसी ईसाईयत का अनुसरण कर रहे हैं जिसमें हेर-फेर कर दिया गया तथा उस मूर्ति पूजन का निचोड़ है जो यूनानी आस्था के बचे खुचे टुकड़े हैं।

यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत को साबित करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप की सच्चाई के समक्ष सभी प्रमाण तुच्छ हैं, और (आपके अपमान वाले कृत्य पर) इस्लामी दुनियाँ में जिस प्रकार से मुसलमानों की ओर से नागवारी एवं रोष प्रकट किया जा रहा है वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूत को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है।

यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे न होते तो क्या आपके द्वारा लाया गया धर्म १४४२ हिजरी तक बाक़ी रहता? और क्या उसे अन्य समस्त धर्मों पर विजय व प्रभुत्व प्राप्त होता? आपने ग़ैब (छिप्त, अनुपस्थित) के बारे में जो भी सूचना दी थी वह सभी आप की मृत्यु के कुछेक वर्षों के अंदर ही बिल्कुल स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगीं।

निम्न में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत को साबित करने वाले कुछ प्रमाणों का उल्लेख किया जा रहा है:

---

[1] हिदायतुल हयाराः ३५९ – ३६५।

पहला: बड़े-बड़े मोअजज़ात (चमत्कारों) के द्वारा आप की नबूवत को प्रबलता प्रदान करना, जिनमें सबसे महान क़ुरआन है।

दूसरा: नबूवत मिलने के पहले एवं बाद की आपकी स्थितियों में सोच-विचार एवं विशलेषण करने के द्वारा आपकी नबूवत को प्रमाणित करना।

तीसरा: आपने नबियों के बारे में जो सूचना दी है और पिछली क़ौम के बारे में जो क़िस्से बयान किए हैं उनके द्वारा आप की नबूवत को साबित करना।

चौथा: संसार के प्रारंभ से ही नबियों के वजूद व अस्तित्व को साबित करने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की सच्चाई को जग जाहिर करना।

पाँचवां: ऐसे युग में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अवतरित होना जिसमें लोगों को एक रसूल की अत्यंत आवश्यकता थी।

छठा: पिछली आसमानी किताबों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की शुभ-सूचना का होना।

अब इसको विस्तार से समझते हैं :

पहला: बड़े-बड़े मोअजज़ात (चमत्कारों) के द्वारा आप की नबूवत को प्रबलता प्रदान करना, जिनमें सबसे महान क़ुरआन है।

अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐसे बड़े-बड़े मोअजज़ात (चमत्कार) के द्वारा समर्थन किया जो आप से पूर्व किसी नबी के लिए इकट्ठा नहीं किए गए थे, बल्कि कुछ उलेमा का कहना है किः "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह समस्त फ़ज़ाइल (प्रधानता) एवं मोअजज़ात एकमुश्त दिए गए जो अन्य नबियों को अलग-अलग दिए गए थे"।[1]

अल-ह़लीमी रह़िमहुल्लाह कहते हैं : "कुछ उलेमा ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की निशानियाँ एक हज़ार तक पहूँचती हैं"।

आपकी नबूवत की सबसे बड़ी निशानी क़ुरआन है जो पूर्णरूपेण हिदायत (पथ-प्रदर्शन) का सबसे बड़ा स्रोत है, जिसके न तो सामने और न ही पीछे से बातिल आ सकता है, स़हीह़ैन में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "प्रत्येक नबी को जो निशानियाँ दी गईं वह मोअजज़ात उन से पहले नबी को भी दी गई थीं जिन पर लोगों ने ईमान लाया, मुझे जो निशानी दी

[1] देखें: अबू नुऐम की पुस्तक "दलाइल अल-नबूवत" (२/ ५८७) व अल-शफ़ा (५२३-५२५)।

गई है वह यह वह्य (प्रकाशना) है जिसकी वह्य अल्लाह तआला ने मेरी ओर की है, मैं आशा करता हूँ कि क़्यामत के दिन समस्त नबियों की तुलना में मेरे अनुयायी सबसे अधिक होंगे"।[1]

इमाम ज़हबी रहिमहुल्लाह इस ह़दीस़ पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं: "मेरा मानना है कि क़ुरआन -ए- करीम एक महान मोअजज़ा (चमत्कार) है, क्योंकि आप के पूर्व के सभी नबी जिन निशानियों के संग अवतरित होते थे वो उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती थी और इसी कारण उनके अनुयायी भी कम हुआ करते थे, जब्कि उनकी तुलना में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने वालों की तादाद असंख्य है क्योंकि आप का यह मोअजज़ा आपकी मृत्यु पश्चात भी उसी प्रकार से बाकी व सुरक्षित है, प्रत्येक युग में बहुतेरे लोग क़ुरआन को सुन कर अल्लाह एवं उसके रसूल पर ईमान लाते रहे हैं, इसी कारण से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः मुझे आशा है कि समस्त नबियों की तुलना में क़्यामत के दिन मेरे अनुयायी सबसे अधिक होंगे"।[2]

इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह ने इस ह़दीस़ के विभिन्न अर्थ बताए हैं, उनमें से कुछ निम्न हैं:

क़ुरआन वह महान मोअजज़ा है जिसके द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब व अजम (गैर अरब) के लोगों को चुनौती दी, यह आपका विशेष मोअजज़ा है, लेकिन इसका कदापि यह अर्थ नहीं है कि इसके अलावा कोई और दूसरा मोअजज़ा आपको नहीं दिया गया।

इसका एक अर्थ यह भी है किः अन्य मोअजज़ा की तुलना में इस क़ुरआन का कोई समतुल्य नहीं।

एक अर्थ यह है किः आपके पूर्व प्रत्येक नबी को जो मोअजज़ा दिया गया वह मोअजज़ा उनके अलावा अन्य नबियों को भी दिया गया था, किंतु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समान किसी और को सम्मानित नहीं किया गया।

इस ह़दीस़ का एक अर्थ यह भी है किः नबियों को जो मोअजज़ा दिया गया था वह उनका युग बीतने के साथ-साथ समाप्त हो गया किंतु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो मोअजज़ा दिया गया वह सदा बाकी रहने वाला है।

इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह अनेक कथनों का उल्लेख करने के पश्चात लिखते हैं किः "इन समस्त कथनों का सार केवल एक कथन में पेश किया जाना संभव है क्योंकि सभी का भावार्थ एक ही है, इनके मध्य कोई मतभेद नहीं है"।[3]

---

[1] इमाम बुख़ारी ने इसे फ़ज़ाइल -ए- क़ुरआन के अध्याय में, वह्य (प्रकाशना) कैसे अवतरित हुई और सर्वप्रथम क्या उतरा, पाठ के अंतर्गत उल्लेखित किया है, ह़दीस़ नम्बरः ४६९६, (४/ १९०५), एवं इसी ह़दीस़ को किताब व सुन्नत को मज़बूती के साथ पकड़ने के अध्याय में, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमान कि मुझे जवामे अल-कलिम दे कर भेजा गया, के तहत भी उल्लेखित किया है, ह़दीस़ नम्बरः ६८४६ (६/ २६५४), तथा इमाम मुस्लिम ने भी इस ह़दीस़ को किताबुल ईमान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत पर ईमान लाना वाजिब व अपरिहार्य है, के तहत उल्लेख किया है, ह़दीस़ नम्बरः २३९ (१/ १३४)।

[2] देखें : इमान ज़हबी की किताब "अल-सीरत" पृष्ठः २८६ ।

[3] फ़त्हुल बारी (८/ ६२३)।

क़ुरआन की चुनौती का उल्लेख इसके अनेक आयतों (श्लोकों) में हुआ है:

﴿وَإِن كُنتُمۡ فِي رَيۡبٖ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلَىٰ عَبۡدِنَا فَأۡتُواْ بِسُورَةٖ مِّن مِّثۡلِهِۦ وَٱدۡعُواْ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٢٣ فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن تَفۡعَلُواْ فَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِي وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلۡحِجَارَةُۖ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ ٢٤﴾

(हमने जो कुछ अपने बंदे पर अवतरित किया है यदि उसमें तुम्हें किसी प्रकार का संशय है और तुम सच्चे हो तो इसके समान एक सूरत तो बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जो भी तुम्हारे सहायक हैं उनको भी बुला लो। और यदि तुमने ऐसा नहीं किया और कदापि तुम ऐसा नहीं कर सकते (तो इसे सच्चा मान कर) उस आग से भय खाओ जिसके ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे जो काफिरों के लिए तैयार की गई है।) सूरह बक़रहः २३-२४।

इस आयत में अल्लाह तआला के इस कथनः ﴿ فَأۡتُواْ بِسُورَةٖ مِّن مِّثۡلِهِۦ ﴾ में स्पष्ट एवं खुली हुई चुनौती है, अर्थात इस जैसी एक सूरत तो बना लाओ, तत्पश्चात दूसरी चुनौती अल्लाह तआला के इस कथन में हैः ﴿وَٱدۡعُواْ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ﴾ अर्थात तुम चाहो तो अल्लाह तआला के सिवा तुम अपने दूसरे सहायकों को भी बुला सकते हो, तथा तीसरी चुनौती अल्लाह तआला के इस फ़रमान में हैः ﴿ فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن تَفۡعَلُواْ فَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِي ﴾ अर्थान यदि तुमने ऐसा नहीं किया और तुम ऐसा कर भी नहीं सकते तो (इसे सच्चा मान कर) आग से बचो।

इसके साथ ही इस आयत में इस बारे में भी सूचना दी गई है कि वह भविष्य में भी ऐसा नहीं कर सकेंगे, और ऐसा ही हुआ, और इस प्रकार की बातों की इतने यक़ीन व विश्वास के साथ वही सूचना दे सकता है जो छिप्त, ग़ैब एवं राज़ का ज्ञान रखने वाला हो।

दूसरी चुनौतीः इसकी दलील अल्लाह तआला के इस फ़रमान में हैः ﴿وَمَا كَانَ هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانُ أَن يُفۡتَرَىٰ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِن تَصۡدِيقَ ٱلَّذِي بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيلَ ٱلۡكِتَٰبِ لَا رَيۡبَ فِيهِ مِن رَّبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٣٧ أَمۡ يَقُولُونَ ٱفۡتَرَىٰهُۖ قُلۡ فَأۡتُواْ بِسُورَةٖ مِّثۡلِهِۦ وَٱدۡعُواْ مَنِ ٱسۡتَطَعۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٣٨﴾ (और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह (की वह्य) के बिना (अपने से ही) झूठ-मूठ बना डाले, बल्कि ये तो (उन किताबों की) पुष्टि करने वाला है जो उसके पूर्व में अवतरित हो चुकी हैं, और किताब (आवश्यक आदेशों) को विस्तार से बयान करने वाला है, निःसंदेह यह सारे संसार के रब (पालनहार) की ओर से है। क्या ये लोग कहते हैं कि आपने इसे स्वयं ही झूठ-मूठ बना लिया है, तो फिर आप कह दीजिए कि तुम इस के समान एक सूरत ही लाकर दिखला दो, और अल्लाह के सिवा जिनको तुम बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सच्चे हो)। सूरह यूनुसः ३७-३८।

इन दोनों आयतों (श्लोकों) में से अल्लाह तआला के इस कथन में चुनौती हैः ﴿وَمَا كَانَ هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانُ أَن يُفۡتَرَىٰ﴾ अर्थात यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि इसे अल्लाह की वह्य के बिना स्वयं ही झूठ-मूठ बना

लिया गया है, दूसरी चुनौती अल्लाह तआला के इस कथन में है: ﴿قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ﴾ अर्थात आप कह दीजिए कि तो फिर तुम उस जैसी एक सूरत ही बना कर ले आओ। वास्तविकता तो यह है कि कोई भी मानव ऐसा करने में सक्षम न हो सका, और अल्लाह तआला के इस कथन में:

﴿وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ﴾, अल्लाह तआला के सिवाय जिन-जिन को बुला सकते हो बुला लो, तो चुनौती की पराकाष्ठा है।

तीसरी चुनौती: अल्लाह तआला के इस कथन में है: ﴿أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾﴾ (क्या यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को इसी ने अपनी तरफ से गढ़ लिया है, तो आप उनसे कहिए कि फिर तुम भी इस के समान दस सूरतें गढ़ कर ले आओ तथा अल्लाह के सिवा जिसे चाहो उसे बुला लो, यदि तुम सच्चे हो। फिर यदि वो आपकी इस बात को स्वीकार न करें तो विश्वास कर लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के इल्म व ज्ञान के साथ उतारा गया है, और ये कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद (पूज्य, उपास्य) नहीं, तो क्या तुम अब भी मुसलमान होते हो)। सूरह हूदः १३-१४।

चौथी चुनौती: अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: ﴿قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾﴾ (हे रसूल, आप कह दीजिए कि यदि समस्त संसार के इंसान एवं जिन्नात (मानव एवं दानव) मिल कर भी इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सब के लिए ऐसा करना अंभव है, यद्यपि वह आपस में एक-दूजे के सहायक ही क्यों न बन जाएं)। सूरह इस्राः ८८।

कोई मख़लूक़ (रचना, मानव) इस प्रकार से ललकार कर चुनौती नहीं दे सकती, क्योंकि यह भविष्य के ज्ञान पर आश्रित है, विशेषरूप से किसी ऐसे नबी की ओर से तो बिल्कुल भी संभव नहीं है जो अपने समुदाय को अल्लाह तआला की उपासना की दावत देता हो, जिसका समुदाय उसे झुठलाता हो, और वह अपनी सच्चाई प्रमाणित करता हो, जिससे ज्ञात होता है कि यह अल्लाह तआला की ओर से है।

पाँचवीं चुनौती: अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है:

﴿قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾ فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾﴾

(कह दीजिए कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब जो इन दोनों से अधिक हिदायत वाली हो ले आओ, मैं उसी का अनुसरण करूँगा, फिर यदि वो आपकी न मानें तो समझ लें कि ये लोग बस अपनी इच्छाओं का अनुसरण (मनमानी) कर रहे हैं, और उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन हो सकता है जो अपनी इच्छाओं की पूर्ती में लगा हुआ हो बिना अल्लाह की हिदायत के, निःसंदेह अल्लाह तआला ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता)। सूरह अल-क़सस़ः ४९-५०।

इन आयतों में पहली चुनौती अल्लाह तआला के इस कथन में हैः ﴿قُلۡ فَأۡتُواْ بِكِتَٰبٖ مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِ﴾ अर्थात कह दीजिए कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ। दूसरी चुनौती अल्लाह तआला के इस फ़रमान में हैः ﴿فَإِن لَّمۡ يَسۡتَجِيبُواْ لَكَ فَٱعۡلَمۡ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهۡوَآءَهُمۡۚ﴾ अर्थात फिर भी ये लोग यदि आप की बात न मानें तो आप समझ लें कि ये केवल अपनी इच्छाओं के पीछे भाग रहे हैं। क्योंकि इसमें उन्हें फटकारा जा रहा है कि वो अपनी असमर्थता के चलते इस चुनौती को स्वीकार न कर सके। तीसरी चुनौती अल्लाह तआला के इस फ़रमान में हैः ﴿وَمَنۡ أَضَلُّ مِمَّنِ ٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ بِغَيۡرِ هُدٗى مِّنَ ٱللَّهِۚ﴾ अर्थात उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन हो सकता है जो अपनी कामनाओं की पूर्ति में लगा हुआ हो बिना अल्लाह की हिदायत के।

छठी चुनौतीः अल्लाह तआला के इस फ़रमान में हैः ﴿أَمۡ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥۚ بَل لَّا يُؤۡمِنُونَ ٣٣ فَلۡيَأۡتُواْ بِحَدِيثٖ مِّثۡلِهِۦٓ إِن كَانُواْ صَٰدِقِينَ ٣٤﴾ (क्या यह कहते हैं कि इस नबी ने (क़ुरआन) को स्वयं अपनी ओर से गढ़ कर बना लिया है, बल्कि सच्चाई तो यह है कि वो ईमान नहीं लाते। यदि ये (अपने इस कथन में) सच्चे हैं तो इस के समान एक कलाम व बात बना कर ले आएं)।

ये वो आयतें हैं जिनमें खुले एवं स्पष्ट रूप से ललकारा तथा चुनौती दी गई है, जब्कि वो आयतें (श्लोक) जिनमें प्रसंगवश एवं आनुषंगिक रूप से चुनौतियों का उल्लेख हुआ है वो बहुतेरे हैं[1], ये आयतें एक दूसरे के साथ मिल कर (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से दिफा करने के) माध्यम को सशक्त करती हैं तथा प्रतिबद्धता एवं निश्चय को और अधिक प्रोत्साहित करती हैं[2]।

इन सबके बाद भी वो लोग इन चुनौतियों के समक्ष असहाय रहे, उनकी असमर्थता को निम्नलिखित दो और चीज़ें भी प्रमाणित करती हैं:

प्रथमः यदि वह ऐसा करने में सक्षम होते तो यह बात अवश्य प्रसिद्ध हो जाती क्योंकि इसकी प्रसिद्धि के सभी माध्यम व साधन उपलब्ध थे, इसके उत्तर में ऐसा कहना अनुचित है किः ऐसा हुआ होगा किंतु वह हम तक नहीं पहूँच सका क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जिसको छुपाना असंभव है, इसके अतिरिक्त (यदि इस

---

[1] उदाहरणस्वरूप देखें : सूरह यूनुस, आयतः ४२-४३, सूरह रअद, आयतः ३१, सूरह अन्कबूत, आयतः ५१, सूरह ह़श्र, आयतः २१।

[2] देखें : अह़मद अल-ज़ैदी की किताब "इस्बात नुबूव्वतिन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)" २२-२५।

को मान लिया जाए तो) ऐसा सभी नबियों के मोअजज़ात और निशानियों के बारे में कहा जा सकता है, जिसका अर्थ यह होगा कि सभी नबियों की समस्त आयात (चमत्कार) एवं निशानियां बातिल एवं व्यर्थ हैं।

द्वितीय: यदि वो इस प्रकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्तर देने एवं विरोध करने में सक्षम होते तो यह उनके पास एक बड़ी दलील एवं प्रमाण होता, और उन्हें रक्तपात करने, मार देने, धन लुटाने एवं वंशों को दास बनाने की आवश्यकता न होती।

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यदि उनकी असमर्थता का विश्वास न होता तो आप उनको चुनौती भी नहीं देते, विशेषतः ऐसी परिस्थिति में जब वो बहुसंख्यक थे और भाषा पर उनकी मजबूत पकड़ का सारा संसार प्रशंसक था, जिसका स्पष्ट अर्थ यह निकलता है कि आप को पूर्ण विश्वास था कि वो उस चुनौती का उत्तर देने में अक्षम थे।[1]

कुछ उलेमा का कहना है किः "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत के प्रमाण "किताब -ए- अज़ीज़" में मौजूद हैं, यह "किताब -ए- अज़ीज़" पूर्णरूपेण आप की रिसालत की सच्चाई को प्रमाणित करती है, बल्कि इसकी हरेक सूरत इसको प्रमाणित करती है क्योंकि इसके समान कुछ और लाना असंभव है ..., अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि इसको असंभव करार देने वाले प्रमाणों की संख्या एक हज़ार से भी अधिक है जो कि क़ुरआन के रहस्य एवं इसके आश्चर्यचकित कर देने वाले चमत्कार में से है"।[2]

---

[1] देखें : बाक़िल्लानी की किताबः ऐजाज़ुल क़ुरआनः २३, मावर्दी की किताबः ऐलामुन्नबूवतः ७१, एवं इब्ने कसीर कीः शमाइलुर्रसूलः १२७। बाक़िल्लानी कहते हैं किः "कुछ लोग यह दावा करते हैं कि इब्नुल मुक़फ़्फ़ा ने क़ुरआन पर आपत्ति जताई और उसका विरोध किया, इस दावा को सही साबित करने के लिए उन्होंने दो बड़ी अजीब चीज़ों का सहारा लिया, और वह है यह दो पुस्तकें: एक पुस्तक में प्रसिद्ध हिकमतें (चतुराई, तत्वज्ञान) की बातें हैं जो प्रत्येक समुदाय के हकीमों के पास हुआ करती हैं ... अतः इस पुस्तक में किसी प्रकार की कोई शाब्दिक अथवा अर्थगत उत्कृष्टता या अछूतापन नहीं है। दूसरी पुस्तक यात्रा वृत्तांत से संबंधित है जिसमें लेखक ने इतने तकल्लुफ़ एवं बनावटीपन से काम लिया है कि कोई भी समझदार व्यक्ति आसानी से इसे समझ सकता है, उसकी वह पुस्तक जो हिकमत के विषय में है वास्तव में वह बज़र जमहर की पुस्तक से नक़ल की गई है जो कि हिकमत ही के विषय से संबंधित है, इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि उसने यह पुस्तक लिख कर कौन सा बड़ा कारनामा अंजाम दे दिया है और किस प्रकार की विशेषता उसे प्राप्त हो गई है? उसकी कोई भी ऐसी पुस्तक ऐसी नहीं है जिसके बारे में यह कहा जा सके कि उसमें उसने क़ुरआन की मुख़ालफ़त (क़ुरआन के समान कोई कलाम व बात) करने का दुस्साहस किया हो, बल्कि लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि वह एक मुद्दत तक ऐसा करने के लिए प्रयासरत रहा, अंततः उसने अपने द्वारा संकलित समस्त चीज़ों को बिखेर एवं फेंक दिया तथा उसे स्वयं इसे लोगों के समक्ष लाने में लज्जा आने लगी थी"। ऐजाज़ुल क़ुरआनः ५६।

[2] देखें : अल-रसाइल अल-मुनीरीय्या के अंतर्गत इब्नुल हंबली की किताब "इस्तिख़राजुल जिदाल मिन अल-क़ुरआन अल-करीम" (३/ ५४)।

क़ुरआन के ऐजाज़ (मोअजज़ा, चमत्कार, अलौकिक कर्म) की किस्मों के बारे में उलेमा के विभिन्न कथन हैं, जो संक्षिप्त रूप में निम्नांकित हैं[1]:

पहला ऐजाज़: बयान एवं बलाग़त (साहित्य की आलंकारिक शैली) तथा आश्चर्यजनक संकलन एवं अद्भुत लेखनी के आधार पर क़ुरआन का ऐजाज़ (चमत्कार), जिसकी व्याख्या कुछ यों है:

1- सामूहिक रूप से क़ुरआन मानव के आम एवं परिचित वाक्य तथा वार्तालाप के ढंग से पूर्णतः भिन्न है, जब्कि मानव वार्तालाप के भी विभिन्न एवं अलग-अलग रूप हैं।

2- अरबों के यहाँ बलाग़त एवं बयान (वाग्मिता एवं वाक्पटुता) से ओत-प्रोत इतना लम्बा कलाम (वाक्य, ग्रंथ) नहीं पाया जाता है, बल्कि उनके कवियों एवं भाषाविदों की ओर जो कुछ भी मंसूब किया जाता है वह गिनती के कुछ वाक्य एवं सामान्य हिकमत अर्थात बुद्धिमत्ता की कुछ बातें हैं, यही कारण है कि उनमें का कोई व्यक्ति यदि किसी एक कला में माहिर भी हो जाए तो वह दूसरी कला से अनभिज्ञ रहता है, इसके अतिरिक्त ये सामान्य एवं गिनती के कुछ वाक्य कभी-कभी परस्पर एक दूसरे के विरोधी भी होते हैं, उनमें दोष एवं सामंजस्य की कमी दृष्टिगोचर होती रहती है, जब्कि इसके विपरीत क़ुरआन -ए-करीम के इस कदर लम्बा व विस्तारित होने के बावजूद इसके समस्त सूरतों एवं आयतों में सब कुछ उसी अनुपात एवं वाग्मिता के साथ है जो उसे उच्च, उत्कृष्ट एवं अलौकिक बनाते हैं।

3- क़ुरआन की बेहतरीन एवं सर्वोत्तम क्रमबद्धता, विभिन्न विषय होने के बावजूद इसके पारों का एक दूसरे से लयबद्ध होना, इसमें जहाँ वादा है वहीं धमकी भी है, इसमें प्रोत्साहन भी है तो हतोत्साहन भी है, इसमें क़िस्सा भी है एवं सीरत अर्थात जीवनी भी है, अहकाम (आदेश) एवं शरीअतों (विधानों) का भी उल्लेख है, इन सब के बावजूद न तो इसमें कोई विरोधाभास है और न ही (अर्थगत) विभिन्नता।

संक्षिप्तता एवं लघुता के बावजूद अनेक अर्थों को अपने भीतर समाए होना, अल्लाह तआला के इस फ़रमान में विचार करें: ﴿وَلَكُمۡ فِي ٱلۡقِصَاصِ حَيَوٰةٞ يَٰٓأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٧٩﴾ (हे बुद्धिजीवियों, क़िसास[2] में तुम्हारे लिए जीवन है, इस कारण तुम (नाहक क़त्ल से) रुकोगे)। सूरह बक़रहः १७९।

---

[1] देखें : बाक़िल्लानी की पुस्तकः "ऐजाज़ुल क़ुरआन" (५७ – ६६), अबुल ज़ैदी की पुस्तक "इस्बातु नबूव्वतिन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)", मावरदी कि पुस्तकः "आलामुन्नबूवत" (५८-८३), अल-शफ़ा (१/ ३५८-३९६), क़ुर्तबी की पुस्तक "अल-ऐलाम" (३/ ३२३-३४७), इब्ने कसीर की "अल-शमाइल" (१२६-१३५), ज़रकशी की "अल-बुरहान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन" (२/ ९०-११७), "बसाइरु ज़वी अल-तमयीज़" (१/ ६५), सुयूती की "अल-इतक़ान" (२/ २५२-२७०), राफ़ई की "ऐजाज़ुल क़ुरआन" (५६) एवं उसके बाद के पृष्ठ, शैख़ मन्नाअ अल-क़त्तान की "मबाहिस फ़ी उलूम अल-क़ुरआन" (२५७-२७५)।

[2] (प्रतिहिंसा) इस्लामी शरीअत का एक आदेश जिसमें किसी को नाहक मार देने पर प्राण के बदले प्राण लेने का प्रावधान है।

अल्लामा फ़ैरोज़ाबादी[1] रहिमहुल्लाह कहते हैं कि "यह चार कलमा (वाक्य) एवं सोलह हुरूफ़ (अक्षर, वर्ण) हैं जिनके अंदर एक लाख मसला समाया हुआ है, जिन्हें शरीअत -ए- इस्लाम के ज्ञानियों ने बयान किया है और जो हज़ारों जिल्दों में मौजूद हैं, इन सबके बावजूद इसकी वास्तविकता तक कोई नहीं पहूँच सका"।[2]

अल्लाह तआला के इस कथन में ग़ौर करें: ﴿ٱلۡأَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذِۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ إِلَّا ٱلۡمُتَّقِينَ ٦٧﴾ (उस दिन अंतरंग मित्र भी एक-दूजे के शत्रु बन जाएंगे सिवाय परहेज़गारों (संयमियों) के)। सूरह अल-ज़ुख़रुफ़: ६७।

अल्लाह तआला के इस कथन में भी गहन सोच-विचार करने की आवश्यकता है: ﴿خُذِ ٱلۡعَفۡوَ وَأۡمُرۡ بِٱلۡعُرۡفِ وَأَعۡرِضۡ عَنِ ٱلۡجَٰهِلِينَ ١٩٩﴾ (आप क्षमा करें, सदकर्म की शिक्षा दें एवं अज्ञानियों से दूरी बरतें)। सूरह अल-आराफ़: १९९।

ये आयतें समस्त शिष्टाचार एवं सत्वगुणों को आधारित हैं।

दूसरा मोअजज़ा (चमत्कार): ग़ैब (क्षिप्त, परलोक) की जो सूचनाएं इस क़ुरआन में दी गई हैं, उनकी जानकारी एक व्यक्ति विशेष के पास होना असंभव है, जैसाकि इस आयत में आया है:

﴿غُلِبَتِ ٱلرُّومُ ٢ فِيٓ أَدۡنَى ٱلۡأَرۡضِ وَهُم مِّنۢ بَعۡدِ غَلَبِهِمۡ سَيَغۡلِبُونَ ٣﴾ (रोम वाले पराजित हो गए, निकटवर्ती धर्ती पर और वो पराजित होने के पश्चात जल्दी ही विजयी होंगे)। सूरह अल-रूम: २-३।

इस आयत में जैसी सूचना दी गई है वैसा ही वास्तव में घटित भी हुआ।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿لَّقَدۡ صَدَقَ ٱللَّهُ رَسُولَهُ ٱلرُّءۡيَا بِٱلۡحَقِّۖ لَتَدۡخُلُنَّ ٱلۡمَسۡجِدَ ٱلۡحَرَامَ إِن شَآءَ ٱللَّهُ ءَامِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمۡ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَۖ فَعَلِمَ مَا لَمۡ تَعۡلَمُواْ فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتۡحًا قَرِيبًا ٢٧﴾

(निःसंदेह अल्लाह तआला ने अपने रसूल के स्वप्न को सच्चा कर दिखाया कि यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम अवश्य पूर्ण शांति के साथ मस्जिद -ए- ह़राम में प्रवेश करोगे सिर मुंडाते हुए और सिर के बाल कतरवाते हुए चैन के साथ निडर हो कर, वह उन चीज़ों को जानता है जो तुम नहीं जानते, अतः उसने इससे पहले एक निकटवर्ती विजय आप को दी)। सूरह अल-फ़त्ह़: २७।

---

[1] मुहम्मद पुत्र याक़ूब पुत्र मुह़म्मद पुत्र इब्राहीम पुत्र उमर, अबू त़ाहिर मज्दुद्दीन अल-शीराज़ी अल-फ़ैरोज़ाबादी: साहित्य एवं भाषा के प्रकांड विद्वान हैं, आपका जन्म कारज़ीन में हुआ जोकि शीराज़ का एक नगर है, वहाँ से आप इराक़ चले गए और मिस्र एवं सीरीया की यात्रा की, रोम एवं भारत भी गए, भाषा, आप ह़दीस़ एवं तफ़्सीर में अपने समय के बड़े विद्वान थे, आप की मृत्यु ज़बीद में सन ८१७ हिज्री में हुई, आपकी सबसे सुप्रसिद्ध पुस्तक का नाम है "अल-क़ामूस अल-मुहीत़"। आपकी जीवनी को विस्तार से पढ़ने के लिए देखें: अल-आलाम (७/ १४६-१४७)।

[2] बस़ाइर ज़वी अल-तमयीज़ (१/ ६९)।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿هُوَ ٱلَّذِىٓ أَرۡسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلۡهُدَىٰ وَدِينِ ٱلۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهُۥ عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوۡ كَرِهَ ٱلۡمُشۡرِكُونَ ٩﴾ (वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत एवं सच्चा दीन (धर्म) दे कर भेजा ताकि उसे समस्त अन्य धर्मों पर विजय दे, यद्यपि मुश्रिकीन इसे अप्रिय रखते हों)। सूरह सफ्फः ९।

अल्लाह तआला ने जो वादा किया था उस वादा को पूरा किया और इस धर्म को सभी धर्मों पर प्रभुत्व दिया।

अल्लाह तआला का कथन है: ﴿أَمۡ يَقُولُونَ نَحۡنُ جَمِيعٞ مُّنتَصِرٞ ٤٤ سَيُهۡزَمُ ٱلۡجَمۡعُ وَيُوَلُّونَ ٱلدُّبُرَ ٤٥﴾ (अथवा यह कहते हैं कि हम विजयी होने वाले समूह हैं, शीघ्र ही इस समूह की प्राजय होगी और यह पीठ फेर कर भागेगी)। सूरह अल-क़मरः ४४-४५।

और ग़ज़वा -ए- बद्र में ऐसी हुआ।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿قُلۡ إِن كَانَتۡ لَكُمُ ٱلدَّارُ ٱلۡأٓخِرَةُ عِندَ ٱللَّهِ خَالِصَةٗ مِّن دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُاْ ٱلۡمَوۡتَ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٩٤﴾ (आप कह दीजिए कि यदि आख़िरत (परलोक) का घर अल्लाह के निकट केवल तुम्हारे लिए ही है अन्य किसी और के लिए नहीं तो आओ अपनी सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए मृत्यु की इच्छा करो)। सूरह अल-बक़रहः ९४।

उनमें से किसी ने भी मृत्यु की इच्छा नहीं जताई, जिससे आपका मोअजज़ा प्रमाणित हो गया और उन के विरुद्ध आप की सच्चाई जग जाहिर हो गई। والحمد لله رب العالمين, वलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन (समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो समस्त संसार का रब एवं पालनहार है)।

तीसरा मोअजज़ा: क़ुरआन -ए- करीम के अंदर हलाक (नाश) एवं तबाह की हुई समुदायों की सूचनाएं एवं उनके ऐसे क़िस्से मौजूद हैं जिनकी जानकारी किसी इंसान के पास होना असंभव है, उनमें से अल्प सूचनाएं हीं अहले किताब के कुछ ज्ञानियों के पास हैं, हाँ यह और बात है कि वो सूचनाएं भी हेर-फेर वाली, अपूर्ण एवं त्रुटिपूर्ण हैं, तथा उनमें नबियों (अलैहिमुस्सलाम) की ओर शर्मनाक एवं लज्जाजनक कार्य की निस्बत की गई है, अल्लाह तआला का इर्शाद है: ﴿نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَيۡكَ أَحۡسَنَ ٱلۡقَصَصِ بِمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانَ وَإِن كُنتَ مِن قَبۡلِهِۦ لَمِنَ ٱلۡغَٰفِلِينَ ٣﴾ (हम आपके समक्ष सर्वोत्तम बयान (कथा) पेश करते हैं इस कारण कि हमने आपकी ओर यह क़ुरआन वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) के द्वारा अवतरित किया है, और निःसंदेह आप इसके पूर्व अनभिज्ञों में से थे)। सूरह यूसुफ़ः ३।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ذَٰلِكَ مِنۡ أَنۢبَآءِ ٱلۡغَيۡبِ نُوحِيهِ إِلَيۡكَۖ وَمَا كُنتَ لَدَيۡهِمۡ إِذۡ أَجۡمَعُوٓاْ أَمۡرَهُمۡ وَهُمۡ يَمۡكُرُونَ ١٠٢﴾ (यह ग़ैब की सूचनाओं में से है जिसकी हम आपकी ओर वह्य कर रहे हैं, आप उनके निकट नहीं थे जब उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वह फ़रेब (षड्यंत्र) करने लगे थे)। सूरह यूसुफ़ः १०२।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला का इर्शाद है: ﴿لَقَدۡ كَانَ فِي قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٞ لِّأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِۗ مَا كَانَ حَدِيثٗا يُفۡتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصۡدِيقَ ٱلَّذِي بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيلَ كُلِّ شَيۡءٖ وَهُدٗى وَرَحۡمَةٗ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ١١١﴾ (उनके बयान में बुद्धिजीवियों के लिए निःसंदेह उपदेश एवं चेतावनी है, यह क़ुरआन झूठ-मूठ की बनाई हुई बात नहीं है बल्कि यह उन किताबों को प्रमाणित करता है जो इससे पहले की हैं, खोल-खोल कर बयान करने वाला है हर चीज़ को एवं हिदायत तथा रहमत है ईमानदार लोगों के लिए)। सूरह यूसुफ़: १११।

अल्लाह तआला का कथन है: ﴿تِلۡكَ مِنۡ أَنۢبَآءِ ٱلۡغَيۡبِ نُوحِيهَآ إِلَيۡكَۖ مَا كُنتَ تَعۡلَمُهَآ أَنتَ وَلَا قَوۡمُكَ مِن قَبۡلِ هَٰذَاۖ فَٱصۡبِرۡۖ إِنَّ ٱلۡعَٰقِبَةَ لِلۡمُتَّقِينَ ٤٩﴾ (यह सूचनाएं ग़ैब की सूचनाओं में से हैं जिनकी वह्य (प्रकाशना) हम आपकी ओर करते हैं इन्हें इसके पूर्व न आप जानते थे और न आपकी क़ौम, अतः सब्र करते रहिए, विश्वास रखिए कि (उत्तम) अंजाम परहेज़गारों एवं संयमियों के लिए ही है)। सूरह हूद: ४९।

चौथा मोअज़्ज़ा: दिलों में छुपे हुए राज़ की सूचनाएं भी क़ुरआन में दी गई हैं, जैसाकि अल्लाह तआला के इस कथन में है: ﴿إِذۡ هَمَّت طَّآئِفَتَانِ مِنكُمۡ أَن تَفۡشَلَا وَٱللَّهُ وَلِيُّهُمَاۗ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ١٢٢﴾ (जब तुम्हारे दो समुदाय पसपाई (पराजय) का विचार बना चुके थे, अल्लाह तआला उनका वली एवं सहायता करने वाला है और उसकी पाक ज़ात पर मोमिनों को तवक्कुल व भरोसा रखना चाहिए)। सूरह आले इमरान: १२२।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَإِذَا جَآءُوكَ حَيَّوۡكَ بِمَا لَمۡ يُحَيِّكَ بِهِ ٱللَّهُ وَيَقُولُونَ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ لَوۡلَا يُعَذِّبُنَا ٱللَّهُ بِمَا نَقُولُۚ ٨﴾ (और जब आप के पास आते हैं तो उन शब्दों के द्वारा आपको सलाम करते हैं जिन शब्दों के द्वारा (सलाम करने को) अल्लाह ने नहीं कहा, तथा दिल ही दिल में कहते हैं कि अल्लाह तआला हमें उस पर जो हम कहते हैं सज़ा क्यों नहीं देता)। सूरह अल-मुजादला: ८।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَلَن يَتَمَنَّوۡهُ أَبَدَۢا بِمَا قَدَّمَتۡ أَيۡدِيهِمۡۗ وَٱللَّهُ عَلِيمُۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ٩٥﴾ (अपनी काली करतूतों को देख कर वो लोग कभी भी मृत्यु की इच्छा नहीं करेंगे, और अल्लाह तआला ज़ालिमों से भली भांति परिचित है)। सूरह अल-बक़रह: ९५।

पाँचवां मोअज़्ज़ा: क़ुरआन की तिलावत एवं पाठ करते समय हृदय में जिस प्रकार की हैबत व ख़शीयत तथा डर व भय का संचार होता है और दिलों पर इसका जो अलौकिक प्रभाव पड़ता है वह अद्भुत है, इससे बारंबार पढ़ने एवं दोहराते रहने से भी उकताहट नहीं होती है, जिसके कारण बहुतेरे सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने केवल इसे सुन कर ही इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿لَوۡ أَنزَلۡنَا هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانَ عَلَىٰ جَبَلٖ لَّرَأَيۡتَهُۥ خَٰشِعٗا مُّتَصَدِّعٗا مِّنۡ خَشۡيَةِ ٱللَّهِۚ ٢١﴾ यदि हमने इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तुम देखते कि अल्लाह के भय से वह पस्त हो कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता)। सूरह अल-ह़श्रः २१ ।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह का फ़रमान है: ﴿ٱللَّهُ نَزَّلَ أَحۡسَنَ ٱلۡحَدِيثِ كِتَٰبٗا مُّتَشَٰبِهٗا مَّثَانِيَ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُودُ ٱلَّذِينَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ٢٣﴾ (अल्लाह तआला ने सर्वोत्तम कलाम उतारा है जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती एवं बार-बार दोहराई हुई आयतों की है, जिससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से भय खाते हैं)। सूरह अल-ज़ुमरः २३ ।

छठा मोअजज़ा: क़ुरआन की लाई हुई शरीअत और अह़काम (आदेश) का ऐजाज़ (चमत्कार) जो कि समस्त सांसारिक व्यवस्थाओं, नियमों एवं कानूनों से श्रेष्ठ है।

सातवाँ मोअजज़ा: अल्लाह तआला का इसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेना, कोई भी इंसान इसके अंदर किसी भी प्रकार का कोई भी जोड़-घटाव नहीं कर सकता है, और यदि कोई मानव ऐसा करने की चेष्ठा करेगा तो उसका यह कृत्य दुनियाँ के लोगों के समक्ष खुल कर आ जाएगा।

आठवाँ मोअजज़ा: क़ुरआन का साइंटेफिक ऐजाज़ व चमत्कार, जोकि क़ुरआन के द्वारा सोच-विचार करने एवं अल्लाह की रचना में चिंतन-मनन करने की दावत देने से स्पष्ट होता है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿قُلِ ٱنظُرُواْ مَاذَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ وَمَا تُغۡنِي ٱلۡأٓيَٰتُ وَٱلنُّذُرُ عَن قَوۡمٖ لَّا يُؤۡمِنُونَ ١٠١﴾ (आप कह दीजिए कि तुम सोच-विचार किया करो कि क्या क्या चीज़ें आकाशों एवं धराओं में हैं और जो लोग ईमान नहीं लाते उनको निशानियाँ एवं चेतावनियाँ कुछ लाभ नहीं पहूँचातीं)। सूरह यूनुसः १०१ ।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَفِيٓ أَنفُسِكُمۡۚ أَفَلَا تُبۡصِرُونَ ٢١﴾ (तुम्हारे अपने (शरीर) में भी (निशानियाँ) हैं, तो क्या तुम देखते नहीं हो)। सूरह अल-ज़ारीयातः २१ ।

डॉक्टर मॉरिस बोकाय कहते हैं : "इन (निशानियों) की कुछ विशेष विवरणों की सटीकता ने मुझ आश्चर्य में डाल दिया, ये वो विवरण हैं जिन्हें केवल मूल मत्न (लेख) को सामने रख कर ही समझा जा सकता है, मैं इस बात से भी आश्चर्यचकित हूँ कि इन (निशानियों) के जो अर्थ हम आज समझ रहे हैं क़ुरआन बिल्कुल उनके अनुरूप है, जिनके बारे में कोई विचार एवं अंदाज़ा लगाना मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में किसी भी मानव के लिए असंभव था ..."।[1]

एक स्थान पर वह लिखते हैं किः "मूल अरबी नुसूस (ग्रंथों) का अध्ययन करने के पश्चात में एक विषय-सूची बनाने में सफल हुआ जिसको मुकम्मल करने के पश्चात मुझे यह समझ आया कि क़ुरआन में

[1] दिरासतुल कुतुब अल-मुक़द्दसा फ़ी ज़ौइ अल-मआरिफ़ अल-ह़दासाः १४४-१४५ ।

कोई एक भी ऐसी आयत (श्लोक) नहीं है जिनकी इस नए युग में साइंटेफिक सिद्धांतों के अनुसार आलोचना की जा सके"।[1]

कुछ उलेमा[2] "अस्सर्फ़ा" अर्थात क़ुरआन के आयात को न समझ पाना" को भी एक प्रकार का मोअजज़ा समझते हैं, जब्कि यह सही नहीं है क्योंकि अज्ञानता, ऐजाज़ (चमत्कार) नहीं है, जहाँ तक इसको ऐजाज़ मानने की बात है तो कुछ "अहले कलाम" इसके पक्षधर रहे हैं, और जिन से इस प्रकार के कथन प्रसिद्ध है उनमें मोअतज़ला (मुसलमानों का एक पंथ) का एक इमाम अल-नज़्ज़ाम[3] भी है जिसका मानना है किः "क़ुरआन के शब्दों तथा वाक्यों की संगठित एवं संयोजित रचना न तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोअजज़ा है और न ही इसमें आप के नबूवत के दावा की सच्चाई का कोई प्रमाण है, इसमें केवल यह प्रमाण है कि ग़ैब से संबंधित जिन चीज़ों के विषय में इसमें सूचना दी गई है वो सही हैं, किंतु जहाँ तक बात है क़ुरआन के शब्दों तथा वाक्यों के संगठित एवं संयोजित रचना की तो एक इंसान भी ऐसा बल्कि इससे बेहतर रचना कर सकता है"।[4]

इसी के पक्षधर अबुल मआली अल-जुवैनी[5], कुछेक क़दरीय्या (तक़दीर व भाग्य का इंकार करने वाले) तथा इब्ने ह़ज़्म अंदलुसी भी हैं।

इस कथन का अर्थ यह निकलता है कि फ़साह़त बलाग़त (साहित्य की आलंकारिक शैली) तथा संयोजन एवं शैली में क़ुरआन का जो ऐजाज़ है उसे निरर्थक प्रमाणित करना तथा यह गुमान रखना कि अरब उस जैसी कोई चीज़ लाने में इसलिए अक्षम रहे कि उनको असमर्थ बना दिया गया था तथा उसे इस मामले से फेर दिया गया था।

इस राय को मानने वाले के दो सिद्धांत हैं :

---

(1) दिरासतुल कुतुब अल-मुक़द्दसा फ़ी ज़ौइ अल-मआरिफ़ अल-ह़दासाः १३।

(2) जैसे अबुल क़ासिम अल-तैमी ने अपनी पुस्तक "अल-ह़ुज्जा अला तारिकिल मह़ज्जा" (१/ ३५०) में, तथा अबुल ह़ुसैन ज़ैदी ने अपनी पुस्तक "इस्बातु नबूवतिन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)" (२८) में लिखा है किः कुरानी चुनौती से संबंधित कोई एक आयत ही उनके कानों पर बिजली गिराने के लिए काफ़ी है, भला ऐसा कहना कैसे सही हो सकता है कि उन तक यह आयतें पहूँची ही नहीं, हाँ, यह अलग बात है कि अल्लाह तआला ने उन्हें इन आयतों के सुनने से रोक रखा हो, और यदि यह सच है तो यह रोकना ही अपने आप में एक बड़ा चमत्कार है। इसी प्रकार का उदगार किरमानी ने भी प्रकट किया है जैसाकि इमाम सुयूती ने "अल-इत्क़ान" में उल्लेख किया है।

(3) इब्राहीम पुत्र सय्यार पुत्र हानी अल-बसरी, अबू इस्ह़ाक़ अल-नज़्ज़ाम, मोअतज़ला पंथ का प्रकांड ज्ञाता है जिसे फ़लसफ़ा में महारत तथा फ़लसफ़ियों द्वारा लिखित अधिकतर पुस्तकों की जानकारी थी, उसके अपने भी कुछ विचार तथा राय हैं जिनके बारे में मोअतज़ला का एक गिरोह "अल-नज़्ज़ामीय्या" उसके साथ है, अल-नज़्ज़ाम के विरोध में कई पुस्तकें लिखी गईं जिनमें उसे काफ़िर एवं पथभ्रष्ट करार दिया गया, उसकी मृत्यु २३१ हिजरी में हुई। अधिक जानकारी के लिए देखें: ज़िरिकली की पुस्तकः अल-आलाम (१/ ४३), तारीख़ -ए- बग़दाद (६/ ९७), एवं बग़दादी की पुस्तकः अल-फ़र्क बैन अल-फ़िरक़ (११३)।

(4) देखें: अल-फ़र्क़ बैन अल-फ़िरक़ (१२८), एवं अल-ख़ैयात़ की किताब अल-इख़्तेसार (६८)।

(5) देखें: अल-अक़ीदा अल-नज़्ज़ामीय्या (७३-७४), जिसमें इस राय का उन्होंने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है।

पहला सिद्धांत: अरब, किसी बाहरी कारण की वजह से क़ुरआन का मुकाबला करने में असमर्थ रहे, और इसी बाहरी कारण की वजह से उनके अंदर क़ुरआन का मुकाबल करने की क्षमता नहीं पनप सकी, यह अल-नज़्ज़ाम की राय है।

दूसरा सिद्धांत: यह है कि अल्लाह तआला ने अरब के अंदर से उनके ज्ञान, फ़साहत व बलाग़त तथा भाषा पर पकड़ की क्षमता के ही समाप्त कर दिया था।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या के अनुसार यह सबसे कमज़ोर कथन तथा बेकार राय है, निम्नांकित कारणों से आप इसके बेकार व फ़ासिद होने का सहज अंदाज़ा लगा सकते हैं :

1- अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿قُل لَّئِنِ ٱجْتَمَعَتِ ٱلْإِنسُ وَٱلْجِنُّ عَلَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِمِثْلِ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾﴾ (कह दीजिए कि यदि समस्त इंसान एवं सभी जिन्नात मिल कर इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सभी से इसके समान लाना असंभव है, यद्यपि वो (इस कार्य में) एक दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाएं। । सूरह इस्राः ८८ ।

यदि क़ुरआन (के अर्थों को समझने) से फेर कर क़ुरआन का ऐजाज़ प्रमाणित होता तो उनके आपस में मिल बैठ कर उसके समान कोई अन्य चीज़ लाने की चुनौती का कोई औचित्य नहीं रह जाता, क्योंकि ऐसी दशा में उनका इकट्ठा होना मृतकों के आपस में मिलने के समान होता क्योंकि उनसे मुकाबला करने का क्षमता ही छीन ली गई होती।

2- इस कथन को यदि सही मान लिया जाए तो इसका अर्थ यह होगा कि क़ुरआन में ऐजाज़ नहीं है, जब्कि यह बात सर्वविदित है कि (क़ुरआन का मुकाबला करने से अरब को) फेर दिए जाने वाले राय के आने से पहले ही क़ुरआन के ऐजाज़ पर सभी उलेमा एकमत हो चुके थे, जैसाकि अल्लामा क़ुर्तुबी[1] तथा सुयूती[2] रहिमहुमल्लाह आदि ने इसका उल्लेख किया है।

3- इस कथन को सही मान लेने पर हमें यह भी मानना पड़ेगा कि जिस युग में यह चुनौती दी गई थी उस युग के समाप्त होते ही क़ुरआन का ऐजाज़ भी समाप्त हो गया जो कि इज्माअ (किसी मसले पर उलेमा का एकमत होना) के विरुद्ध है।

4- यह कथन यदि सही होता तो अरब की पुरातन कविताओं में क़ुरआन का विरोध अवश्य पाया जाता, जब्कि हम ऐसा कुछ नहीं देखते हैं।

5- इस कथन का अर्थ यह भी निकलता है कि क़ुरआन अन्य आम रचनाओं के समान ही एक रचना है जिसकी कोई विशेषता नहीं है सिवाय इसके कि इसके समान कोई रचना नहीं रची जा सकती है क्योंकि अल्लाह तआला ने बंदों से ऐसा करने की शक्ति हर ली है।

6- अल्लाह तआला ने क़ुरआन को ऐसी विशेषताओं से विशेषित किया है जिनसे किसी दूसरे कलाम (रचना) को विशेषित नहीं किया जा सकता है, जैसाकि अल्लाह तआला का यह फ़रमानः

---

[1] देखें: अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन (१/ ६६)।

[2] देखेः अल-इत्क़ान (२/ २५५-२५६) एवं अल-ख़साइस अल-कुब्रा (१/ १९४)।

﴿وَلَوۡ أَنَّ قُرۡءَانٗا سُيِّرَتۡ بِهِ ٱلۡجِبَالُ أَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ ٱلۡأَرۡضُ أَوۡ كُلِّمَ بِهِ ٱلۡمَوۡتَىٰۗ بَل لِّلَّهِ ٱلۡأَمۡرُ جَمِيعًاۗ أَفَلَمۡ يَاْيۡـَٔسِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَن لَّوۡ يَشَآءُ ٱللَّهُ لَهَدَى ٱلنَّاسَ جَمِيعٗاۗ ٣١﴾ (यदि कोई ऐसा क़ुरआन होता जिससे पर्वत खिसका दिए जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इसके द्वारा मुर्दों से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते), बात यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाए हैं, वह निराश नहीं हुए कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधे मार्ग पर कर देता)। सूरह रअदः ३१ ।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का ने फ़रमायाः ﴿ٱللَّهُ نَزَّلَ أَحۡسَنَ ٱلۡحَدِيثِ كِتَٰبٗا مُّتَشَٰبِهٗا مَّثَانِيَ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُودُ ٱلَّذِينَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمۡ وَقُلُوبُهُمۡ إِلَىٰ ذِكۡرِ ٱللَّهِۚ ذَٰلِكَ هُدَى ٱللَّهِ يَهۡدِي بِهِۦ مَن يَشَآءُۚ وَمَن يُضۡلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِنۡ هَادٍ ٢٣﴾ (अल्लाह ही है जिसने सर्वोत्तम ह़दीस़ (क़ुरआन) को अवतरित किया है, ऐसी किताब जिसकी आयतें मिलती जुलती बारंबार दोहराई जाने वाली हैं, जिसे (सुन कर) उनके रोंगटे खड़े जाते हैं जो अपने रब (पालनहार) से डरते हैं, फिर कोमल हो जाते हैं उनके अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण की ओर, यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिसके द्वारा वह जिसे चाहता है संमार्ग पर लगा देता है, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उसका कोई पथ प्रदर्शक नहीं है)। सूरह ज़ुमरः २३ ।

ये तथा इन जैसी दूसरी आयतें इस बात को प्रमाणित करती हैं कि क़ुरआन स्वयं अपने आप में एक मोअजज़ा व चमत्कार है।

7- उनके इस कथन के आधार पर यह बात सही लगती है (जो कि गलत है) कि क़ुरआन -ए- करीम फ़स़ाह़त व बलाग़त (वाक्पटुता एवं वाग्मिता) के सबसे निचले पायदान पर है ताकि उसके समान कोई रचना पेश करने में असमर्थता की चुनौती अधिक प्रभावी लगे।

8– यह बात तवातुर[1] (आवृत्ति) के साथ प्रमाणित है कि उस समय क़ुरआन के विरोध के सभी साधन उपलब्ध थे, मुकाबला करने के लिए वो लोग पूर्णरूपेण तैयार थे, इसके साथ-साथ उनके हृदय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए जिस प्रकार की नफ़रत थी वह बिल्कुल जग जाहिर है, इन सबके बाद भी क़ुरआन ने उनको चुनौती दी कि इसके जैसी एक रचना ला कर दिखला दें, और यदि उनकी योग्यताएं एवं ज्ञान छीन लिया जाता तो उनके समक्ष यह बात खुल जाती तथा उन्हें यह दावा करने का मौका मिल जाता कि यह जादू है, और उनके लिए ऐसा कहना उचित होता कि हम ऐसा करने में सक्षम थे किंतु तुम हमारे एवं हमारी योग्यता के मध्य अपनी जादू के द्वारा रुकावट बन गए।

9- इस कथन का मूल ब्रह्मियत[2] के कथन में है।

---

[1] निरंतरता, अर्थात इन ह़दीस़ों को इतने अधिक लोगों ने रिवायत किया है जिनसे भूल-चूक होना या सभी मिल कर इस के बारे में झूठ बोलें ऐसा होना असंभव है।

[2] **ब्रह्मियतः** प्राचीन भारत का एक धर्म है, और वे वह़दतुल वुजूद (अर्थात उनका कहना है कि भगवान कण-कण में विराजमान हैं) एवं पुनर्जन्म अर्थात शरीरों में आत्माओं की वापसी में विश्वास करते हैं, वे गायों को पवित्र मानते हैं तथा गौकशी करने से रोकते हैं क्योंकि उनका मानना है कि शुद्ध आत्मा उनमें वास करती है, वे सांपों तथा मगरमच्छों को भी पवित्र मानते हैं, उनके रीति-रिवाजों के अनुसार वे अपने मृतकों को जलाते हैं, और उनकी पवित्र पुस्तकों में "वेद", "महाभारत", "रामायण" तथा "पुराण" शामिल हैं। "वेद" के अंदर केवल प्राचीन ब्रह्मवाद का उल्लेख है, जब्कि "पुराण"

10- (क़ुरआन का मुकाबला करने से अरब को) फेर देने वाली राय से क़ुरआन के स्वयं अपने आप में मोअजज़ा (चमत्कार) होने का इंकार हो जाता है, जब्कि यह बात सर्वविदित है कि पिछले नबियों के मोअजज़े स्वयं अपने आप में मोअजज़ा हुआ करते थे, इसी कारणवश न तो कोई उसका विरोध कर सका तथा न ही उसके समान कोई चीज़ पेश करने में सक्षम हो सका, ऐसे में क्या यह समझना उचित होगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सदाबहार मोअजज़ा आप से पूर्व के नबियों के मोअजज़ा की तुलना में तुच्छ व कमज़ो है।

11- यह राय बिल्कुल इस राय के समान है कि "क़ुरआन एक अत्यंत प्रभावी जादू है" क्योंकि दोनों कथनों का उद्देश्य यह प्रमाणित करना है कि क़ुरआन का ऐजाज़ क़ुरआन से बाहर की चीज़ है।

12- यह बात बहुतेरी रिवायतों से साबित है कि अरब, क़ुरआन की बलाग़त (अलंकार) तथा स्वयं क़ुरआन की शैली एवं पद्धति से प्रभावित होते थे, कभी-कभी तो क़ुरआन का केवल श्रवण करना (सुनना) भर ही उनके इस्लाम स्वीकार करने का कारण बना, जैसे उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु आदि के संग हुआ था।

13- यदि यह कहा जाए किः क़ुरआन का विरोध करने में काफिरों का असमर्थ होना किसी ऐसे कारण की वजह से था जो उनको हतोत्साहत करके भाषा पर उनकी मज़बूत पकड़ में आड़े आ गया था तो, (इसका जवाब यह दिया जाएगा कि) यदि ऐसा हुआ होता तो यह बात हम तक अवश्य पहूँचती तथा मुश्रिकीन इसका दावा ज़रूर किए होते कि यह एक संभव चीज़ है, लेकिन जब क़ुरआन के विरोध तथा आपत्ति पर उनका एकजुट होना प्रमाणित ही नहीं है तो यही चीज़ इस राय के व्यर्थ तथा बातिल होने का प्रमाण है।

14- इस राय का यह अर्थ भी निकलता है कि जाहिलीय्यत वाले युग में अरब के अंदर भाषा पर मजबूत पकड़ की जो योग्यता थी उसमें गिरावट तथा गद्य एवं पद्य का जो उच्च मानक था उसमें कमी आ गई थी, जोकि सही नहीं है।

15- अरब के आश्चर्य तथा अचरज का कारण स्वयं क़ुरआन था, क्योंकि क़ुरआन विभिन्न प्रकार के मोअजज़ों पर आधारित है, वो इसलिए आश्चर्यचकित नहीं थे कि उनके अंदर मुकाबला तथा विरोध करने की योग्यता ही नहीं थी।[1]

अरब को क़ुरआन का विरोध तथा उसका मुकाबला करने से फेर दिए जाने वाले राय के व्यर्थ तथा बातिल प्रमाणित हो जाने के पश्चात हम पुनः क़ुरआन के ऐजाज़ के विषय में बात करते हैं, मेरी राय यह है

में "तस़लीस़ अर्थात तीन देव" तथा विष्णु के भगवान होने से संबंधित कुछ विशेष आस्थाओं का उल्लेख किया गया है। देखें : दाइरतु मआरिफ़ अल-क़र्न अल-इशरीन (२/ १९५) तथा उसके बाद के पृष्ठ।

[1] देखें : बाक़िल्लानी की पुस्तकः ऐजाज़ुल क़ुरआन (५३-५४) अल-शफ़ा (१/ ३७३, ५३०), मावरदी की पुस्तकः आलामुन्नबूवत (७२) तथा उसके बाद के पृष्ठ, जुर्जानी कीः अर्रिसाला अश्शाफीया फी वुजूहिल ऐजाज़ (६११-६१६), अल-बिदाया व अल-निहाया (६/ ८१), अल-जवाब अल-सहीह (४/ ७५), अल-इत्क़ान (२/ २५५-२५६), अल-ख़साइस अल-कुब्रा (१/ १९४), लवामिउल अनवार (१/ १७४) तथा ऐजाज़ुल क़ुरआन (५३-५४, १४६) तथा इसके बाद के पृष्ठ राफिई की, मुहम्मद अबू ज़हरा की अल-मोअजज़ा अल-कुब्रा (७९-८५), मनाहिलुल इरफ़ान (२/ ३१०-३१२), (१/ २१०-२१६), इज़्हारुल हक़ (३/ ७९८-८००), मबाहिस़ फ़ी ऐजाज़िल क़ुरआन (५७-६२)।

किः उपरोक्त कारणों को समझ लेने का बाद क़ुरआन के ऐजाज़ के भिन्न-भिन्न पक्ष दृष्टिगोचर होते हैं, यह कहना उचित नहीं होगा कि क़ुरआन का मोअजज़ा होना किसी एक प्रकार के ही ऐजाज़ के कारण समझ में आया, दूसरे अन्य किसी और ऐजाज़ का इससे कोई लेना देना नहीं है, क्योंकि बिल्कुल स्पष्ट चुनौति दी गई है कि क़ुरआन के समान कोई और रचना पेश करना असंभव है, तथा क़ुरआन ऐजाज़ के उपरोक्त समस्त प्रकार पर आधारित है।

अल्लामा ज़रकशी[1] रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "शोधकर्ताओं का कहना है कि जितने भी (ऐजाज़ के) भेदों का वर्णन हुआ है वह सब एक दूसरे से मिल कर ऐजाज़ उत्पन्न करती हैं न कि उनमें से हरेक अलग-अलग ऐजाज़ उत्पन्न करती हैं, क्योंकि ऐजाज़ उन समस्त भेदों के समूह का नाम है, अतः इस आधार पर ऐजाज़ को मात्र किसी एक प्रकार की ओर मंसूब करने का कोई औचित्य बाकी नहीं रह जाता जब्कि ऐजाज़ इन समस्त भेदों के संगठन का नाम है, बल्कि इन के अतिरिक्त ऐजाज़ के और भी प्रकार हैं जिनका यहाँ वर्णन ही नहीं हुआ है"।[2]

क़ुरआन के मोअजज़ा के इतने अधिक भेद हैं कि इनसे उस सिद्धांत का खण्डन हो जाता है कि चुनौति केवल उसी को दी जाती है जो ठोस राय तथा बुद्धिमत्ता रखता है, क्योंकि ऐजाज़ के इन विभिन्न भेदों को आम व खास सभी व्यक्ति समझ सकता है।[3]

क़ुरआन के समक्ष इस जैसी कोई अन्य पुस्तक बना लेने में इंसान तथा जिन्नात (मानव एवं दानव) दोनों असमर्थ हैं, यदि कोई कहे किः जिन्नातों की असमर्थता को हम कैसे जान सकते हैं ?

तो इसका उत्तर विभिन्न प्रकार से दिया जाना संभव हैः

1- अल्लाह तआला ने जिन्नात एवं इंसान दोनों को एक संग मिल कर (क़ुरआन के समान कोई पुस्तक पेश करने में) असमर्थता की सूचना दी है, जिससे अलग-अलग हो कर इस के समान किताब पेश करने में उनकी असमर्थता और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

2- जिन्नातों से वर्णित कुछ काव्य तथा कथन बयान किए जाते हैं जो कि सुरक्षित हैं जो कि मानव द्वारा कहे काव्य तथा कथन की कसौटी पर परखने पर उनसे उच्च प्रतीत नहीं होते बल्कि यदा-कदा तो वो मानव द्वारा कहे गए काव्य तथा कथन से भी कमज़ोर प्रतीत होते हैं।

3- अल्लाह तआला ने क़ुरआन में यह उल्लेख किया है कि किस प्रकार से जिन्नों ने क़ुरआन को सुन कर आश्चर्य प्रकट किया थाः ﴿وَإِذْ صَرَفْنَآ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ ٱلْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ ٱلْقُرْءَانَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓا۟ أَنصِتُوا۟ ۖ فَلَمَّا قُضِىَ وَلَّوْا۟ إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿٢٩﴾﴾ (और स्मरण करो कि जब हमने जिन्नातों के एक समूह का

---

[1] बदरुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद पुत्र बहादुर पुत्र अब्दुल्लाह मिस्री ज़रकशी शाफ़ई, इमाम अल्लामा, लेखक तथा मुहर्रिर थे, उनका जन्म सन ७४५ हिजरी में हुआ, आप फ़क़ीह, उसूली तथा अदीब व साहित्यकार थे, आपकी मृत्यु सन ७९४ हिजरी में मिस्र के अंदर हुई। अधिक जानकारी के लिए देखें : शज़रात अल-ज़हब (६/ ३३५), अल-दुरर अल-कामिना फ़ी आयान अल-मेअतुस्सामिना (३/ ३९७-३९८)।

[2] अल-बुरहान फ़ी उलूम अल-क़ुरआन (२/ १०६)।

[3] देखें : क़ुर्तुबी की किताब अल-ऐलाम (३/ ३२६)।

ध्यानाकर्षण तेरी ओर किया था ताकि वो क़ुरआन का श्रवण करें, और जब वो नबी के समीप पहूँच गए तो एक-दूजे से कहने लगे कि चुप हो जाओ, फिर जब वह समाप्त हो गया तो अपने समुदाय को डराने के लिए वापस लौट गए। सूरह अल-अह़क़ाफ़ः २९।

इस आयत में भी अल्लाह तआला ने इसका उल्लेख किया हैः ﴿قُلۡ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ ٱسۡتَمَعَ نَفَرٞ مِّنَ ٱلۡجِنِّ فَقَالُوٓاْ إِنَّا سَمِعۡنَا قُرۡءَانًا عَجَبٗا ۝١﴾ (हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप कह दीजिए कि मेरी ओर प्रकाशना की गई है कि जिन्नातों के एक समूह ने क़ुरआन सुना और कहा कि हमने आश्चर्यजनक क़ुरआन सुना है)। सूरह अल-जिन्नः १।

इन स्पष्टीकरण तथा इन पहलुओं के माध्यम से उनकी असमर्थता पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जाती है।[1]

क़ुरआन के अतिरिक्त आपको जो आयात (निशानियाँ) तथा चमत्कार दिए गए वो बहुतेरे हैं, जिन्हें अनेक पुस्तकों में उल्लेखित किया गया है, जिनमें से कुछ निम्नांकित हैं :

चंद्रमा के दो टुकड़े होना, खाने की मात्रा को बढ़ा देना, वृक्ष का आपका आज्ञापालन करना एवं आपके नबी होने की गवाही देना, वृक्ष के तना का आपके लिए लालायित होना, आपकी मुबारक हथेलियों में कंकड़ियों का तस्बीह़ पढ़ना, अनेक स्थान पर आपके द्वारा की गई प्रार्थनाओं का अतिशीघ्र स्वीकृत हो जाना, पशुओं एवं दरिंदों का आपसे वार्तालाप करना, उनका आपके समक्ष समर्पण कर देना, वृक्ष एवं पत्थरों का आपको सलाम (अभिवादन) करना, आपकी उँगलियों के बीच से पानी का फ़व्वारा निकलना, बद्र युद्ध में आप के संग फ़रिश्तों का युद्ध लड़ना, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों के हाथों जो करामात (विस्मयकारी एवं अद्भुत घटनाएं) हुई हैं वो सभी आपके नबूवत के प्रमाण हैं, इन सबके अतिरिक्त भी बहुतेरी दलीलें, ह़दीसें तथा आसार (ताबेईन तथा उनके बाद के लोगों से वर्णित कथन अथवा कर्म) हैं जिनका उल्लेख तवालत एवं दीर्घता से बचने हेतु नहीं किया जा रहा है।[2]

बाद में आने वाले कुछ लोगों के बारे में कहा जाता है कि वो उन मोअजज़ात (चमत्कार) का खण्डन करते हैं तथा यह गुमान रखते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोअजज़ा विशेष रूप से क़ुरआन ही में है, यह राय एवं सुन्नत का इंकार तथा ह़दीस़ को अस्वीकार करना और इसे चुनौती देना है, तथा यह शरीअत एवं शरीअत के प्रावधानों को नकारने तक ले जाने वाला प्रारंभिक पथ है, इसलिए कि जिन की रिवायतों से ये मोअजज़ात हम तक पहूँची हैं उन्होंने ही हम से ये अह़काम (शरीअत के प्रावधान) हम तक पहूँचाए हैं, विशेष रूप से हमें जब यह ज्ञात है कि प्रकांड विद्वानों एवं महात्माओं ने नुस़ूस़ (ग्रंथों)

---

[1] देखें : बाक़िल्लानी की पुस्तकः ऐजाज़ुल क़ुरआन (६५), अल-मिन्हाज फ़ी शुअबिल ईमान (१/ ३८३) एवं अल-बुर्हान फ़ी अलूमिल क़ुरआन (२/ १११)।

[2] देखें : फ़रयाबी की पुस्तकः दलाइलुन्नबूवत,अबू नुऐम अल-असबहानी की पुस्तकः दलाइलुन्नबूवत, बैहिक़ी की पुस्तकः दलाइलुन्नबूवत, क़ाज़ी अयाज़ की पुस्तकः अल-शफ़ा, इब्नुल जौज़ी की पुस्तकः अल-वफ़ा, इब्ने कसीर की पुस्तकः अल-शमाइल, सुयूती की पुस्तकः अल-ख़साइस़ अल-कुब्रा।

की जाँच-पड़ताल तथा अनुसंधान एवं सनदों पर हुक्म लगाने एवं उसकी छान-बीन करने में कितना परिश्रम किया है, बहुतेरी ह़दीसें ऐसी हैं जो तवातुर[1] के साथ वर्णित हैं।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह जैसे बहुतेरे उलेमा ने इन को मुतवातिर कहा है, चुनाँचे वह कहते हैं : "इन ह़दीसों में कुछ मुतवातिर ह़दीसें हैं जिन्हें सामान्य एवं विशेष सभी लोग जानते हैं जैसे कि आपकी उँगलियों से फ़व्वारा निकलना, खाने-पीने की वस्तुओं का अधिक कर देना, वृक्ष के तना का आप के लिए लालायित होना और इन जैसी अन्य ह़दीसें, निःसंदेह ये समस्त ह़दीसें मुतवातिर सनद से प्रमाणित हैं तथा प्रख्यात एवं प्रसिद्ध हैं एवं पीढ़ी दर पीढ़ी उम्मत ने इसे नक़ल किया है, हर पीढ़ी ने इसे अपने पूर्वजों से नक़ल किया है, प्रत्येक पीढ़ी के हरेक वर्ग में ये रिवायतें विख्यात,सुप्रसिद्ध तथा फैली हुई हैं"।[2]

इब्ने ह़जर रह़िमहुल्लाह ने भी इन ह़दीसों के मुतवातिर होने का हुक्म लगाया है, चुनाँचे वह कहते हैं: "इन सब के समूहों से ह़ातिम की दानशीलता तथा अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वीरता की तरह निःसंदेह यह बात भी मालूम हो जाती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों जो मोअजज़े व चमत्कार हुए हैं यद्यपि ये रिवायतें व्यक्तिगत रूप से आई हैं जो ज़न्न अर्थात गुमान का लाभ देती हैं तथा आह़ाद (अर्थात तवातुर के विपरीत जिसे एक बड़े समूह ने रिवायत न किया हो) हैं, किंतु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऐसे बहुतेरे मोअजज़े हैं जो सुप्रसिद्ध तथा विख्यात हैं जिन्हें रावियों (वाचकों) की एक बड़ी संख्या ने रिवायत किया है, ह़दीस़ से संबंधित ज्ञान रखने वाले बहुतेरे प्रकांड विद्वानों ने इन रिवायतों को क़तई अर्थात शत प्रतिशत सही कहा है, अब यदि कोई यह दावा करे कि इस प्रकार के अधिकतर वृत्तांत के शत प्रतिशत सही होने का लाभ मिलता है तो ऐसा कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी"।[3]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की दूसरी स्पष्ट दलीलः नबूवत के पूर्व तथा पश्चात के आप की स्थितियों तथा विशेषताओं में चिंतन-मनन एवं विशलेषण करके आपकी नबूवत को प्रमाणित करनाः

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَإِذَا تُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡ ءَايَاتُنَا بَيِّنَٰتٖ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرۡجُونَ لِقَآءَنَا ٱئۡتِ بِقُرۡءَانٍ غَيۡرِ هَٰذَآ أَوۡ بَدِّلۡهُۚ قُلۡ مَا يَكُونُ لِيٓ أَنۡ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلۡقَآيِٕ نَفۡسِيٓۖ إِنۡ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّۖ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّي عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ۝١٥ قُل لَّوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَا تَلَوۡتُهُۥ عَلَيۡكُمۡ وَلَآ أَدۡرَىٰكُم بِهِۦۖ فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِيكُمۡ عُمُرٗا مِّن قَبۡلِهِۦٓۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ۝١٦ فَمَنۡ أَظۡلَمُ مِمَّنِ ٱفۡتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَوۡ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓۚ إِنَّهُۥ لَا يُفۡلِحُ ٱلۡمُجۡرِمُونَ ۝١٧﴾ (और -हे नबी- जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनाई जाती हैं तो जो हम से

---

[1] निरंतरता, अर्थात इन ह़दीसों को इतने अधिक लोगों ने रिवायत किया है जिनसे भूल-चूक होना या सभी मिल कर इस के बारे में झूठ बोलें ऐसा होना असंभव है।

[2] अल-जवाब अल-स़ह़ीह़ (४/ २२७)।

[3] फ़त्हुल बारी (६/ ६७३-६७४), विस्तार से उनका खण्डन पढ़ने के लिए शैख़ मुस्तफ़ा हिब्री की पुस्तकः अल-क़ौलुल फ़स्ल बैन अल्लज़ीन यूमिनून बिलग़ैब वल्लज़ीन लायूमिमून।

मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ, या इसमें परिवर्तन कर दो, उनसे कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इसमें परिवर्तन कर दूँ, मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है, यदि मैं अपने रब व पालनहार की अवज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ। आप कह दें, यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें क़ुरआन सुनाता ही नहीं, और न वह तुम्हें इस से सूचित करता, फिर मैं इसके पूर्व तुम्हारे बीच एक उम्र बिता चुका हूँ, तो क्या तुम समझ-बूझ नहीं रखते हो। फिर उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाए, अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे ? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते)। सूरह यूनुसः १५-१७।

इन आयतों में नबूवत को विभन्न प्रकार से प्रमाणित किया गया हैः

पहला: आप ऐसी स्पष्ट निशानियों तथा खुले संकेतों के साथ पधारे कि कोई अत्याचारी, जिद्दी तथा अभिमानी ही इसमें संदेह कर सकता है।

दूसरा: यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से है, जिसके प्रमाण निम्नांकित हैं :

1- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके विषय में सूचना दी है, और आप ऐसे सच्चे और ईमानदार (निष्ठावान) थे कि झूठ से आपका थोड़ा भी नाता नहीं था, आपको (नबूवत मिलने के पूर्व भी) सादिक़ (सच्चा व सत्यवादि) के नाम से पुकारा जाता था, भला ऐसा आदमी अल्लाह तआला के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है।

2- यदि यह क़ुरआन आपकी ओर से होता तो आप इसके अधिक पात्र थे कि इसे स्वयं से सम्बद्ध करें, अर्थात आप यह कहते कि यह मेरी रचना है।

तीसरा: आपका लालन-पालन अनपढ़ समाज में हुआ, आप स्वयं पढ़े लिखे नहीं थे, न तो आप को पढ़ना आता था एवं न ही लिखना, चालीस वर्षों तक आप ऐसे ही रहे, फिर आप उस वह्य (प्रकाशना) तथा ज्ञान के साथ प्रकट हुए जिससे निश्चित रूप से आप के सच्चे नबी होने एवं स्वयं आपकी भी सच्चाई प्रमाणित होती है।

चौथा: समस्त मक्का वासी यह जानते थे कि नबूवत के पूर्व आप ने न तो किसी प्रकार का कोई ज्ञान अर्जित किया था तथा न ही किसी ज्ञानी के पास आपका आना जाना था, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿قُل لَّوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَا تَلَوۡتُهُۥ عَلَيۡكُمۡ وَلَآ أَدۡرَىٰكُم بِهِۦۖ فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِيكُمۡ عُمُرٗا مِّن قَبۡلِهِۦٓۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ١٦﴾ (आप कह दें, यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें क़ुरआन सुनाता ही नहीं, और न वह तुम्हें इस से सूचित करता, फिर मैं इसके पूर्व तुम्हारे बीच एक उम्र बिता चुका हूँ, तो क्या तुम समझ-बूझ नहीं रखते हो)। सूरह यूनुसः १६।

पाँचवां: अल्लाह की ओर से सौंपी गई दावत के कार्य का निर्वहन करने में आप को बहुतेरी परेशानियों एवं परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा परंतु आपने सभी को सहज रूप से बर्दाश्त किया, इन सब से आपके दावत वाले कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और आप अडिग रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने

इस्लाम धर्म को प्रभुत्व दिया, यदि आप झूठे होते तो आपकी असफलता तथा बदनामी खुल कर सामने आ जाती।

छठा: नबूवत मिलने के पूर्व भी आप के सदगुण एवं सदाचार सुप्रसिद्ध थे, कभी आपके मुख से गंदी बात नहीं निकली, बल्कि आप अमानतदार एवं सच्चे थे, आपका मामला उन जादूगरों एवं ज्योतिष्यों के समान कैसे हो सकता है जो सर्वाधिक कपटी, अनैतिक तथा सबसे ज्यादा बेईमान होते हैं।[1]

अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जाहिलीय्यत के लोग जिन बुराइयों को अंजाम देते थे मैंने उन जैसी किसी बुराई का इरादा तक नहीं किया सिवाय दो बार के, और दोनों ही दफा अल्लाह ने मुझे इससे सुरक्षित रखा:

एक रात जब हम अपने खानदान की बकरियां मक्का के ऊँचे इलाका में चरा रहे थे, तो मैंने क़ुरैश के एक युवक से कहा: मेरी बकरियों की देख-रेख करना ताकि मैं भी अन्य युवकों की भांति आज रात किस्सागोई के सम्मेलन में शरीक हो सकूँ, उसने हामी भर ली और मैं निकल पड़ा, जब मैं मक्का के निकटतम घर तक पहूँचा तो गाने बजाने, दुफ़्फ़ तथा बाँसुरी की ध्वनी आने लगी, मैंने पूछा यह क्या हो रहा है? लोगों ने उत्तर दिया कि: अमूक पुरूष का विवाह अमूक महिला से हो रहा है, क़ुरैश का कोई पुरूष क़ुरैश ही की किसी महिला से विवाह रचा रहा है, मैं उस गाने-बजाने में ऐसा गुम हो गया कि मुझे नींद आ गई, फिर सुर्य की किरणों ने ही मुझे उस निद्रा से जगाया, मैं अपने चरवाहा मित्र के पास लौट गया, उसने पूछा: क्या किया? मैंने उसे सारा वृत्तांत सुना दिया, फिर एक अन्य दूसरी रात्रि में भी मैंने उससे वही बात कही और वह पुनः मान गया, मैं निकल गया और मुझे उसी प्रकार की ध्वनी सुनाई देने लगी, और पूर्व की ही भांति मुझे बताया गया कि किसी का विवाह हो रहा है, मैंने जो ध्वनी सुनी थी उसी में गुम हो गया यहाँ तक कि मैं सो गया और जब सूरज की किरणें मेरे शरीर के गरमाने लगीं तो में नींद से जागा, फिर मैं अपने मित्र के पास पहूँचा, उसने पूछा क्या किया? मैंने कहा: कुछ न कर सका, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: अल्लाह की क़सम, इन दो घटनाओं के पश्चात मैंने जाहिलीय्यत युग में अंजाम दी जाने वाली किसी बुराई का इरादा नहीं किया, और फिर अल्लाह तआला ने मुझे नबूवत जैसे सर्वोच्च पद से नवाज़ दिया"।[2]

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपकी भेंट बलदह नामक स्थान के तराई में ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल से हुई, यह उस समय की बात है जब आप पर वह्य (आकाशवाणी) नहीं उतरी थी, उन्होंने आपके समक्ष एक दस्तरख़्वान पेश किया जिसमें मांस था, आपने उसे खाने से इंकार कर दिया तथा फ़रमाया: "तुम अपने बुतों के ऊपर जो

---

[1] देखें : ईसारुल हक़ अलल ख़ल्क़ (२३५-२४१)।

[2] अबू नुऐम ने इसे दलाइलुन्नबूवत (१/ १८६) में, हैसमी ने मजमउज़्ज़वाइद में तथा बज़्ज़ार ने (मुसनद) में रिवायत किया है, इसके रावी (वाचक) सिक़ात (अर्थात सच्चे व उच्च स्मरण शक्ति के स्वामी) हैं। (८/ २२६)।

चढ़ावा चढ़ाते हो मैं उसे नहीं खाता, मैं केवल वही खाता हूँ जिसकी बलि अल्लाह के नाम पर दी गई हो"।[1]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की तीसरी स्पष्ट दलील: गुज़श्ता क़ौम के विषय में तथा पिछले नबियों के बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो सूचनाएं दी हैं, उनके द्वारा आपकी नबूवत को प्रमाणित करना:

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَٱتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَأَ نُوحٍ إِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهِۦ يَٰقَوۡمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُم مَّقَامِي وَتَذۡكِيرِي بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَعَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلۡتُ فَأَجۡمِعُوٓاْ أَمۡرَكُمۡ وَشُرَكَآءَكُمۡ ثُمَّ لَا يَكُنۡ أَمۡرُكُمۡ عَلَيۡكُمۡ غُمَّةٗ ثُمَّ ٱقۡضُوٓاْ إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ ٧١﴾ (आप उन्हें नूह -अलैहिस्सलाम- की कथा सुनाएं, जब उन्होंने अपने समुदाय से कहा: हे मेरे समुदाय के लोगो, यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों -निशानियों- द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया है, तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों -देवी देवताओं- को भी बुला लो, फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाए, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो)। सूरह यूनुस: ७१।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۢ بَعۡدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوۡمِهِمۡ فَجَآءُوهُم بِٱلۡبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانُواْ لِيُؤۡمِنُواْ بِمَا كَذَّبُواْ بِهِۦ مِن قَبۡلُۚ كَذَٰلِكَ نَطۡبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلۡمُعۡتَدِينَ ٧٤﴾ (फिर हमने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाए तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं)। सूरह यूनुस: ७४।

और अल्लाह तआला के इस कथन को देखें: ﴿ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۢ بَعۡدِهِم مُّوسَىٰ وَهَٰرُونَ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ وَمَلَإِيْهِۦ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱسۡتَكۡبَرُواْ وَكَانُواْ قَوۡمٗا مُّجۡرِمِينَ ٧٥﴾ (फिर हमने उनके पश्चात मूसा व हारून (अलैहिमस्सलाम) को फ़िरऔन और उसके प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने अभिमान किया, और वह थे ही अपराध करने वाले)। सूरह यूनुस: ७५।

इनके अतिरिक्त क़ुरआन के वो क़िस्से भी हैं जिन में अल्लाह तआला ने नबियों आदि की परिस्थितियां तथा उनके संबंध में सूचनाएं दी हैं, जैसे अस्हाब -ए- कहफ़ (गुफा वाले), मरियम अलैहस्सलाम, ख़िज़्र अलैहिस्सलाम एवं उन लोगों की सूचना जो हज़ारों की संख्या में थे तथा मृत्यु के डर से अपने घरों से निकल गए थे, और उनका क़िस्सा भी बयान किया है जिनका गुज़र ऐसी बस्ती से हुआ जो छत के बल ओंधी पड़ी हुई थी।

---

[1] इसे इमाम अहमद ने मुस्नद (७/ १९६-१९७) में रिवायत किया है, प्रकाशक: दार अल-ग़र्ब, अन्वेषक अहमद शाकिर ने इस सनद को सहीह कहा है (७/ १९६) तथा इसे इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी रिवायत किया है।

स्पष्ट रूप से आगे यह भी आने वाला है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये क़िस्से किसी अहल -ए- किताब से नहीं लिया था, बल्कि उन अहले किताब के पास तो जो कुछ भी है उसमें हेर-फेर तथा मिलावट है एवं उसमें नबियों का संबंध ऐसी बातों से जोड़ दिया गया है जो उनकी शान के बिल्कुल उलट है बल्कि इस प्रकार से कहना अधिक बेहतर है कि इस प्रकार की दुस्साहसी बातें अल्लाह के उन नबियों पर लांछन मात्र हैं।

अब आप यह बताइए कि, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यदि अल्लाह तआला समर्थित नबी नहीं होते तो क्या वह इस प्रकार की सूचनाएं दे सकते थे, जब्कि आप पढ़े लिखे नहीं थे और न ही आपने कहीं से कोई शिक्षा-दीक्षा ली थी ?!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की चौथी स्पष्ट दलील: प्रारंभ काल से नबियों की उपस्थिति को साबित करके आपकी नबूवत की सच्चाई को सामने लाना:

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌۖ فَإِذَا جَآءَ رَسُولُهُمۡ قُضِيَ بَيۡنَهُم بِٱلۡقِسۡطِ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ٤٧﴾ (और प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल है, फिर जब उनका रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता)। सूरह यूनुसः ४७।

फिर अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान करने के बाद फ़रमायाः ﴿وَمَا كَانَ هَٰذَا ٱلۡقُرۡءَانُ أَن يُفۡتَرَىٰ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِن تَصۡدِيقَ ٱلَّذِي بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيلَ ٱلۡكِتَٰبِ لَا رَيۡبَ فِيهِ مِن رَّبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٣٧﴾ (और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाए, परंतु उनकी पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं, और यह किताब (क़ुरआन) विवरण है, इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के रब (पालनहार) की ओर से है)। सूरह यूनुसः ३७।

तथा अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۢ بَعۡدِهِۦ رُسُلًا إِلَىٰ قَوۡمِهِمۡ فَجَآءُوهُم بِٱلۡبَيِّنَٰتِ فَمَا كَانُواْ لِيُؤۡمِنُواْ بِمَا كَذَّبُواْ بِهِۦ مِن قَبۡلُۚ كَذَٰلِكَ نَطۡبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلۡمُعۡتَدِينَ﴾ (फिर उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उनके समुदाय के पास भेजा, वह उनके पास खुली व स्पष्ट निशानियां व तर्क लाए तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं)। सूरह यूनुसः ७४।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿فَهَلۡ يَنتَظِرُونَ إِلَّا مِثۡلَ أَيَّامِ ٱلَّذِينَ خَلَوۡاْ مِن قَبۡلِهِمۡۚ قُلۡ فَٱنتَظِرُوٓاْ إِنِّي مَعَكُم مِّنَ ٱلۡمُنتَظِرِينَ ١٠٢ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْۚ كَذَٰلِكَ حَقًّا عَلَيۡنَا نُنجِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ ١٠٣﴾ (तो क्या वो इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिए फिर तो तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे संग प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। फिर हम अपने

रसूलों को और जो ईमान लाए बचा लेते हैं, इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि हम ईमान वालों को बचा लेते हैं)। सूरह यूनुसः १०२-१०३ ।

एक अन्य सूरत में अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿إِنَّآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ كَمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ نُوحٖ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعۡدِهِۦۚ وَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِيمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَٰرُونَ وَسُلَيۡمَٰنَۚ وَءَاتَيۡنَا دَاوُۥدَ زَبُورٗا﴾ (निश्चय ही हमने आपकी ओर उसी प्रकार से वह्य की है जैसे कि नूह अलैहिस्सलाम और उनके बाद वाले नबियों की ओर की, और हमने वह्य की इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब, हारून तथा सुलैमान -अलैहिमुस्सलाम- की ओर, और हमने दाऊद -अलैहिस्सलाम- को ज़बूर दिया)। सूरह अल-निसाः १६३ ।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान कुछ यों हैः ﴿وَلَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ فِي شِيَعِ ٱلۡأَوَّلِينَ﴾ (हमने आपके पूर्व अगले समुदाय के लिए भी अपने रसूल बराबर भेजे)। सूरह हिज्रः १० ।

और अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدۡ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبۡلِكَۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغۡفِرَةٖ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٖ ٤٣﴾ (आप से भी वही कहा जाता है जो आपके पूर्व के रसूलों से कहा गया है, निश्चय ही आपका रब क्षमा करने वाला एवं भयंकर यातना -देने- वाला है)। सूरह फ़ुस्सिलतः ४३ ।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का कथन हैः ﴿إِنَّآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَيۡكُمۡ رَسُولٗا شَٰهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ أَرۡسَلۡنَآ إِلَىٰ فِرۡعَوۡنَ رَسُولٗا ١٥ فَعَصَىٰ فِرۡعَوۡنُ ٱلرَّسُولَ فَأَخَذۡنَٰهُ أَخۡذٗا وَبِيلٗا ١٦﴾ (निस्संदेह हमने तुम्हारी ओर भी तुम्हारे लिए गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है जैसाकि हम ने फ़िरऔन के पास रसूल भेजा था, तो फ़िरऔन ने उस रसूल की अवज्ञा की तो हमने उसे घोर संकट वाली विपत्ति में जकड़ लिया)। सूरह अल-मुज़म्मिलः १५-१६ ।

इन नबियों के क़िस्से प्रसिद्ध हैं एवं उनके लक्षण एवं चिह्न अब तक सुरक्षित हैं, बहुतेरे अहले -ए-किताब उन नबियों की नबूवत पर ईमान रखते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले नबी बन कर अवतरित हुए थे।

(इस संबंध में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं)

पहली बात तो यह है कि ये समस्त रसूल एक ही जाति एवं समूह से हैं।

दूसरी बात जैसा कि पूर्वोल्लेखित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत आप के पहले के नबियों की तुलना में अधिक स्पष्ट एवं खुला हुआ है।

तीसरी बात यह कि आपकी नबूवत का इंकार करना मानो आपके पूर्व के नबियों का इंकार है क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही हमें उन नबियों के विषय में सूचना मिली है।

चौथी बात यह कि यह सर्विदित है कि बिना किसी साँठ-गाँठ तथा मिलीभगत के सभी नबियों की दावत एक समान थी, इसी लिए जब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा वह्य (प्रकाशना) के प्रारंभ में आप को ले कर वरक़ा बिन नौफ़ल[1] के पास आईं तथा उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का किस्सा बयान किया तो उन्होंने कहा किः यह वही नामूस (आदरणीय भेदी फरिश्ता) है जिसको अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था, हाय काश मैं उस समय जवान होता, काश मैं उस समय जीवित होता जब आपकी क़ौम आपको यहाँ से निकालेगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आश्चर्य से पूछाः क्या वो मुझे सच में निकालेंगे? उसने कहाः हाँ, जिस चीज़ को ले कर आप आए हैं उसको लेकर जो भी नबी आए उनकी क़ौम ने उनसे दुश्मनी की, यदि मुझे आपका ज़माना मिल जाए तो मैं आपकी भरपूर सहायता करूँगा। अल-ह़दीस़।[2]

जब यह बात पता चल गई तो आपकी नबूवत की सत्यता भी प्रमाणित हो गई, यही कारण है कि जब अरब के मुश्रिकों के समक्ष आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई के प्रमाण स्पष्ट हो गए तो उन्होंने इस्लाम धर्म को अपना लिया।[3]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की पाँचवीं स्पष्ट दलीलः आप की नबूवत के सत्य होने का एक प्रमाण यह भी है कि आपको ऐसे युग में नबी बना कर भेजा गया जब लोगों को एक रसूल की अत्यंत आवश्यकता थीः

उस समय जाहिलीय्यत से ओत-प्रोत समाज का जो हाल था उस का अध्ययन करने वाला सहज रूप से अंदाजा लगा सकता है कि लोगों को ऐसे पथप्रदर्शक की अत्यंत आवश्यकता थी जो उनका पथप्रदर्शन करे एवं उन्हें सीधा मार्ग दिखाए, उस समय मूर्तियों, पत्थरों, आग तथा तारों की उपासना की जाती थी, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَيَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنفَعُهُمۡ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِۚ قُلۡ أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعۡلَمُ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِۚ سُبۡحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشۡرِكُونَ ١٨﴾ (और वो अल्लाह के सिवा उसकी इबादत (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहूँचा सकता है और न लाभ, और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफ़ारिशी) हैं, आप कहिए क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिसके होने न होने को वह न आकाशों

---

[1] वरक़ा पुत्र नौफ़ल पुत्र असद पुत्र अब्दुल उज़्ज़ा पुत्र क़ुसैय अल-क़ुरशी अल-असदी, जाहिलीय्यत युग में इनकी गिनती क़ुरैश के बड़े ज्ञानियों में होती थी, इस्लाम आने के पूर्व ही उन्होंने मूर्तिपूजन छोड़ दिया था तथा मूर्ति के नाम पर दी गई बलि को खाना छोड़ कर ईसाई बन गए थे, आकाश से अवतरित पुस्तकों का अध्ययन करते थे, नबूवत का प्रारंभिक युग उन्हें मिला किंतु जब दावत का दौर आरंभ हुआ तब तक वह काल के गाल में समा चुके थे, वह उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के चचेरे भाई थे। इमाम त़बरी, बग़वी, इब्ने क़ानेअ तथा इब्नुस्सकन आदि ने उन्हें सहाबी माना है। देखें: अल-इस़ाबा (६/ ३१७-३१८) एवं अल-ऐलाम (८/ ११४-११५)।

[2] इस ह़दीस़ की तख़रीज (विस्तारित वर्णन) पूर्व में की जा चुकी है।

[3] देखें: अल-नबूवात (३४-३५), शर्हुल अक़ीदा अल-अस़्फ़हानीय्या (१५२-१५३) तथा अल-फ़वायद (१९)।

में जानता है और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद, बहुदेववादिता) से जो वे कर रहे हैं)। सूरह यूनुसः १८।

इसके अतिरिक्त उस समय समाज में नैतिक पतन की बाहुल्यता थी, जैसे व्यभिचार, बालिकाओं को जीवित धरती में गाड़ देना, अल्लाह के द्वारा ह़राम क़रार दी गई जान (जीव, प्राण) को क़त्ल करना, संबंध तोड़ लेना तथा सूदी लेन-देन करना इत्यादि।

ऐसी विषम परिस्थिति में लोगों को अंधकार से निकाल कर उजियारे में लाने के लिए अंतिम नबी अवतरित हुए, चुनाँचे अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلۡأُمِّيِّـۧنَ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَـٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَـٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَإِن كَانُواْ مِن قَبۡلُ لَفِى ضَلَـٰلٖ مُّبِينٖ ۝٢﴾ (वही है जिसने अनपढ़ लोगों के बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनको पाक व पवित्र करता है और उन्हें किताब व ह़िकमत (तत्वज्ञान) सिखाता है, निश्चय ही इसके पूर्व वे लोग खुली हुई गुमराही में थे)। सूरह अल-जुमाः २।

बंदों के प्रति अल्लाह तआला की रह़मत व कृपा की माँग यह थी कि लोगों को बिना धर्म व दीन के यों ही न छोड़ दिया जाए, और ज्ञात हो कि यह अल्लाह तआला की रह़मत व कृपा थी न कि ऐसा करना अल्लाह के लिए अनिवार्य था जैसाकि मोअतज़िला अक़ीदा (आस्था) रखते हैं।[1]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की छठी स्पष्ट दलीलः प्राचीन आसमानी किताबों में मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की शुभ-सूचना का पाया जानाः

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿وَلَقَدۡ بَوَّأۡنَا بَنِىٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ مُبَوَّأَ صِدۡقٖ وَرَزَقۡنَـٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَـٰتِ فَمَا ٱخۡتَلَفُواْ حَتَّىٰ جَآءَهُمُ ٱلۡعِلۡمُۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقۡضِى بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَـٰمَةِ فِيمَا كَانُواْ فِيهِ يَخۡتَلِفُونَ ۝٩٣ فَإِن كُنتَ فِى شَكّٖ مِّمَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ فَسۡـَٔلِ ٱلَّذِينَ يَقۡرَءُونَ ٱلۡكِتَـٰبَ مِن قَبۡلِكَۚ لَقَدۡ جَآءَكَ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُمۡتَرِينَ ۝٩٤﴾ (और हमने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की, फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उनके पास ज्ञान आ गया, निश्चय ही अल्लाह उनके मध्य प्रलय के दिन उसका निर्णय कर देगा जिसमें वो विभेद कर रहे थे। फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह हो जो हमने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं, आप के पास आप के रब (पालनहार) की ओर से सत्य आ गया है, अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों)। सूरह यूनुसः ९३-९४।

---

[1] मोअतज़ला यह आस्था रखते हैं कि रसूलों अलैहिमुस्सलाम को भेजना अल्लाह तआला के ऊपर वाजिब व अनिवार्य था जैसाकि क़ाज़ी अब्दुल जब्बार ने "शर्ह़ुल उस़ूल अल-ख़मसा" (५६४) में उल्लेख किया है, ऐसी आस्था रखना बातिल व निरर्थक है, क्योंकि किसी चीज़ को अल्लाह तआला के लिए अनिवार्य करार देना उसकी मशीअत व क़ुदरत के विरुद्ध है क्योंकि वह हरेक चीज़ का मालिक व स्वामी है। उनके इस आस्था के खण्डन के विषय में और अधिक जानकारी के लिए देखें : "अल-मोअतज़िला व उस़ूलुहुम अल-ख़मसा व मौक़िफ अहलुस्सुन्नति मिन्हा" (२०५)।

सूरह यूनुस की इन पवित्र आयतों में अहल -ए- किताब (यहूदी व ईसाई) के यहाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने की शुभ-सूचना पाए जाने की बात कही गई है, अहल -ए- किताब इस सच्चाई से भलि-भांति अवगत हैं तथा उनके न्यायप्रिय लोग इसका इकरार भी करते हैं।

इब्ने जरीर रहिमहुल्लाह इस आयत की तफ़्सीर (व्याख्या) में लिखते हैं:

"हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, यदि आप को उस के सत्य होने में संदेह है जिसकी सूचना हमने आप को दी है और जो आपकी ओर उतारा गया है कि आपके नबी होने के पूर्व बनी इस्राईल के मध्य आपकी नबूवत के विषय में कोई मतभेद नहीं था, क्योंकि इसका वर्णन वो अपनी पुस्तकों में पाते हैं और आप को उन विशेषताओं के साथ जानते हैं जिनसे उनकी पुस्तक तौरात व इंजील में आप को विशेषित किया गया है"।[1]

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि: "इस के अंदर उम्मत को (सत्य धर्म इस्लाम पर) अडिग रहने की सूचना दी गई है तथा उन्हें यह बताया जा रहा है कि उनके नबी की विशेषताएं उन प्राचीन पुस्तकों में भी हैं जो अहल -ए- किताब के पास हैं"।

अहल -ए- किताब के यहाँ आपका वर्णन मौजूद है इसको स्पष्ट करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلرَّسُولَ ٱلنَّبِيَّ ٱلۡأُمِّيَّ ٱلَّذِي يَجِدُونَهُۥ مَكۡتُوبًا عِندَهُمۡ فِي ٱلتَّوۡرَىٰةِ وَٱلۡإِنجِيلِ يَأۡمُرُهُم بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَيَنۡهَىٰهُمۡ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡخَبَٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنۡهُمۡ إِصۡرَهُمۡ وَٱلۡأَغۡلَٰلَ ٱلَّتِي كَانَتۡ عَلَيۡهِمۡۚ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِهِۦ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَٱتَّبَعُواْ ٱلنُّورَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ مَعَهُۥٓۙ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ١٥٧﴾ (जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी (बिना पढ़ा लिखा) नबी हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वो अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं, जो सदाचार का आदेश देंगे और दुराचार से रोकेंगे, और उनके लिए स्वच्छ चीज़ों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीज़ों को हराम (अवैध) करेंगे, और उनसे उन के बोझ को उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुए होंगे, अतः जो लोग आप पर ईमान लाए और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (क़ुरआन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे)। सूरह आराफ़: १५७।

बहुतेरे पोप, पादरियों एवं रब्बियों (यहूदी धर्मशास्त्री) का इस्लाम धर्म स्वीकार करना भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की सत्यता को प्रमाणित करता है, क्योंकि उन्होंने आप की सत्यता तथा आपके संदेश की सच्चाई को परखने के बाद ही इस्लाम स्वीकार किया।

इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने की घटना का उल्लेख किया है, वह कहते हैं कि:

---

[1] जामे अल-बयान (११/ १६७)।

"अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने की सूचना मिली तो वह आपके पास आए और कहाः मैं आप से तीन प्रश्न करना चाहता हूँ जिनका उत्तर कोई नबी ही दे सकता हैः क़्यामत (महा प्रलय) की सर्वप्रथम निशानी व चिह्न क्या है? जन्नतियों (स्वर्गवासियों) का सर्वप्रथम भोजन क्या होगा? बच्चा अपने पिता का रंग किस प्रकार पकड़ता है? तथा बच्चा अपने मामुओं का रंग किस प्रकार से पकड़ता है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कुछ समय पूर्व ही जिब्रील ने मुझे इन सब चीज़ों के विषय में सूचना दी है, रावी (वाचक) कहते हैं किः इस पर अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः यह फ़रिश्ता यहूदियों का शत्रु है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जहाँ तक क़्यामत की सर्वप्रथम निशानी की बात है तो वह ऐसी आग होगी जो लोगों को पूरब से पश्चिम की ओर भगा कर ले जाएगी, और जन्नत वासियों का सर्वप्रथम खाना मछली का कलेजा होगा, अब रही बात बच्चा का (पिता या मामू के) समान होने की तो पुरुष जब महिला से मिलता है तो यदि पुरुष का पानी (वीर्य) महिला के पानी (वीर्य) पर प्रभुत्व प्राप्त कर ले तो बच्चा मर्द के जैसा होता है और यदि महिला का वीर्य पुरुष के वीर्य पर प्रभुत्व प्राप्त कर ले तो बच्चा महिला के जैसा होता है।

यहु सुनते ही अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बोल उठेः मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं, फिर अर्ज़ कियाः हे अल्लाह के रसूल, यहूदी लांछन लगाने एवं दोषारोपण करने वाली क़ौम है, यदि उन्हें आपके पूछने के पूर्व ही मेरे इस्लाम स्वीकार करने की सूचना मिल गई तो आपके पास मुझ पर लांछन लगाएंगे, इसी बीच यहूदी आ गए और अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु घर में छिप कर बैठ गए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अब्दुल्लाह बिन सलाम की तुम्हारे सामने क्या हैसियत व प्रतिष्ठा है? उन्होंने कहा किः वह हममें सर्वाधिक ज्ञान वाले, सर्वाधिक ज्ञान रखने वाले के पुत्र, हममें सबसे उत्तम तथा हममें सर्वोत्तम के पुत्र हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रश्न कियाः यदि अब्दुल्लाह बिन सलाम इस्लाम ले आए तो तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी? उन्होंने उत्तर दियाः अल्लाह उन्हें अपनी शरण में रखे (अर्थात ऐसा न हो), सहसा अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आए तथा बोल पड़ेः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, इस पर यहूदी कहने लगेः तुम हममें सबसे दुष्ट तथा सबसे दुष्ट के पुत्र हो, यह कह कर उन पर टूट पड़े"।[1]

जो लोग इन रिवायतों का इंकार करते हैं तथा इन्हें सत्य नहीं मानते उनके समक्ष आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत को प्रमाणित करने के लिए आवश्यक था कि मैं इस हकीकत को उन्हीं की पुस्तकों के आधार पर प्रमाणित करूँ, क्योंकि यहूदियों के अपनी पुस्तक में हेर-फेर करने तथा उसमें वर्णित

---

[1] इस ह़दीस़ को इमाम बुख़ारी रह़िमहुल्लाह ने किताबुल अंबिया में : अल्लाह तआला के फ़रमानः (जब तेरे रब ने कहा कि मैं ज़मीन में उत्तराधिकारी बनाने वाला हूँ) के अंतर्गत उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्या (३१५१) (३/ १२११-१२१२), तथा किताब फ़ज़ाइल -ए- सहाबा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा उनके सहाबा का मदीना की ओर हिजरत (पलायन) वाले पाठ, के अंतर्गत भी विस्तार से उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्या (३६९९) (३/ १४२३), तथा बैहिक़ी ने भी अल-दलाइल (२/ ५२६-५२७) में इसका उल्लेख किया है।

ह़क़ (सत्य) को छिपाने के हरसंभव प्रयास के बावजूद उन की किताबों के अंदर आपके नबी होने की बहुतेरी शुभ-सूचनाओं के प्रमाण मौजूद हैं, इस्लाम स्वीकार करने वाले उनके उलेमा के विषय में जो कुछ लिखा गया है उसके आधार पर यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है, क्योंकि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी विशेषताओं तथा स्पष्ट नामों के साथ जाना जो कि इस समय उनकी उपलब्ध पुस्तकों में नहीं पाई जाती हैं।

अबू नुऐम[1] ने अपनी पुस्तक अल-दलाइल में लिखा है किः "आपकी विशेषताएं एवं गुण आसमानी किताबों के अंदर मौजूद तथा अहल -ए- किताब के पोप, पादरी एवं रब्बियों के मध्य प्रसिद्ध एवं विख्यात हैं, अहल -ए- किताब आप की रिसालत और नबूवत के संबंध में निश्चित एवं विश्वसनीय ज्ञान को ही प्रामाणिक मानते थे, जैसाकि नबियों की वो शुभ-सूचनाएं जो उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत व रिसालत के संबंध में दी थीं, तथा अपने समुदाय को यह वसीयत की थी कि यदि मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का युग उन्हें मिल जाए तो वो आप को सच्चा मानें, इसके अतिरिक्त उनके पास जो पुस्तकें हैं एवं उनके पूर्वजों से पीढ़ी दर पीढ़ी जो प्राचीन अहद नामा (प्रतिज्ञापत्र) नकल हुआ है ये समस्त आपकी रिसालत व नबूवत से संबंधित यहूदियों के विश्वसनीय प्रमाण की हैसियत रखते हैं"।[2]

वह दलीलें जिनसे यहूदियों व ईसाइयों की पुस्तकों में आपके उल्लेख का प्रमाण मिलता है, वो निम्नलिखित हैं:

1- बनी इस्राईल के बहुत सारे नबियों जैसे ईसा, अशअया एवं दानियाल अलैहिमुस्सलाम ने छोटी-छोटी घटनाओं की सूचना दी है, जैसे आदोम (फलस्तीन का पूर्वी इलाका), नैनवा (इराक़ के एक इलाका का नाम) तथा बुख़्त नस़र आदि की घटनाएं, जब उन्होंने इस प्रकार की छोटी-छोटी घटनाओं का उल्लेख किया है तो क्या बुद्धि में यह बात समा सकती है कि उन्होंने मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन जैसी बड़ी घटना का उल्लेख नहीं किया होगा, जब्कि आप वह महान नबी हैं जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने ऐसे समुदाय को जीवनदान दिया जो भटके हुए पशुओं के समान जीवन जी रहे थे, और बाद में (आप के पथ पर्दशन के पश्चात) नेता तथा महात्मा बन गए ?!

अहले किताब जब किसी मत्न (मूल पुस्तक) का अनुवाद करते हैं तो नाम का अनुवाद भी कर बैठते हैं परिणामस्वरूप नाम के स्थान पर उसका अनुवाद डाल देते हैं, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, उनकी पुस्तकों में इसके अनेक उदाहरण मौजूद हैं[3], ऐसा ही उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भी किया।

---

[1] अह़मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अह़मद अल-ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम अल-अस़्बहानी, बड़े प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के स्वामी हैं, वह स़दूक़ (सच्चे) हैं किंतु कुछ लोगों ने उनके संबंध में बिना प्रमाण के कुछ बातें कही हैं, उनका जन्म तथा मरण दोनों अस़्बहान ही में हुआ, उनके द्वारा रचित पुस्तकों में ह़ुल्यतुल औलिया व त़बक़ातुल अस़्फ़िया उल्लेख योग्य है, उनकी मृत्यु सन ४३० हिजरी में हुई। देखें : मीज़ानुल ऐतदाल (१/ १११) तथा अल-आलाम (१/ १५७)।

[2] दलाइलुन्नबूवत (१/ ८९)।

[3] इन उदाहरणों का रह़मतुल्लाह अल-हिंदी ने अपनी पुस्तक "इज़्हारुल ह़क़" (४/ १०९७-११०८) में उल्लेख किया है।

उनकी अधिकतर आस्थाएं पोल्स[1] नामक ईसाई की आस्थाओं से ली गई हैं, वो अपने कथनों में उसी पर भरोसा करते हैं तथा उसे (ईसा अलैहिस्सलाम) के अंसार (साथियों) में गिनते हैं, जब्कि मुसलमानों के निकट वह एक धोखाबाज़ तथा फ़रेबी व्यक्ति है, जिसने अल्लाह के दीन (धर्म) को बदल दिया तथा तस्लीस़ (तीन देवी-देवताओं की उपासना) की ओर लोगों को बुलाया, उसके कथन हमारें यहाँ मरदूद, बहिष्कृत तथा निरर्थक हैं।[2]

उनकी पुस्तकों में (इस संबंध में) जो नुसूस़ (श्लोक) आए हैं वो निम्नलिखित हैं:

पहला नस़्स़: यहूदियों के निकट, सिफ़्र अल-तस़्निया पाठ संख्या ३३ में आया है:

"रब (पालनहार) सीनाई पर्वत से आया, साईर से प्रकट हुआ एवं फ़ारान पहाड़ी से चमका तथा असंख्य पवित्र समूह में पधारा जब्कि उसके दाहिनी ओर शरीअत (विधान) वाली अग्नि (Fiery law) थी"।[3]

अल्लाह तआला के सीनाई पर्वत से प्रकट होने का अर्थ है मूसा अलैहिस्सलाम पर सीनाई पर्वत से तौरात नाज़िल करना, इसी प्रकार साईर से उसके चमकने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील उतारा।

ईसा अलैहिस्सलाम साईर के रहने वाले थे जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की धरती है जो कि "अल-नास़िरा" नामक गाँव में स्थित थी तथा इसी के नाम पर आप के अनुगामी नस़ारा कहलाए।[4]

रही बात फ़ारान की चोटी से उस (रब) के प्रकट होने की तो इसका अर्थ है फ़ारान की चोटियों में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क़ुरआन अवतरित करना, जोकि मक्का है, तथा बिना किसी मतभेद के मुसलमानों एवं अहल -ए- किताब का यही अक़ीदा (आस्था) है।[5]

इस का प्रमाण उस नस़्स़ (श्लोक) से भी मिलता है जिस का उल्लेख सिफ़्र तकवीन (पैदाइश) पाठ संख्या ३१ में इस्माईल अलैहिस्सलाम के किस्सा में आया है कि:

---

[1] इसका मूल नाम शाउल है, इसका जन्म त़र्तूस (TARTUS) में हुआ तथा पालन-पोषण यरूशलेम में, उसी से वर्णित है कि वह फ़रीसी यहूदी (The Pharisees) था, तथा पाखण्ड व छल करते हुए उसने ईसाई धर्म स्वीकार किया क्योंकि अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में वह ईसाइयों बड़ा कट्टर विरोधी था, उसने ईसा अलैहिस्सलाम के शिष्यों से संपर्क साधने का प्रयास किया, फिर वह गिरजाघर बनाने तथा भाषण एवं प्रचार-प्रसार में व्यस्त हो गया, तथा वो पुस्तकें लिखीं जिनको उसके बाद ईसाइयों ने अपने धर्म का आधार बना लिया, वास्तव में ये पुस्तकें कुफ़्र व शिर्क (इंकार तथा बहुदेववादिता) एवं तस़्लीस़ (तीन देवी-देवताओं को मानना) का समर्थन करती हैं। अधिक जानकारी के लिए देखें : मुहाज़रात फी अल-नस़रानीय्या (७०-७६)।

[2] देखें : इज़्हारुल ह़क़ (४/ १०००-१११५)।

[3] देखें : सिफ़्र इस्तिस़्ना पाठ संख्या: ३३, अनुच्छेद संख्या: २।

[4] अल-जवाब अल-स़हीह़ (२/ ३००), नबूवतु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल किताब अल-मुक़द्दस (६२-६३)।

[5] देखें : अल-जवाब अल-स़हीह़ (२/ ३००)।

"अल्लाह तआला उस बच्चा के साथ था यहाँ तक कि वह बच्चा बड़ा हो गया और रेगिस्तान (मरुस्थल) में रहने लगा तथा धनुष-बाण चलाते हुए बड़ा हुआ"।

"फ़ारान की मरूभूमि में उसका ठिकाना था एवं उसकी माता उसके लिए मिस्र से पत्नी ले कर आई थीं"।

यह बात सर्वविदित है कि इस्माईल अलैहिस्सलाम का पालन-पोषण मक्का में ही हुआ, यह अकाट्य प्रमाण है, जिसका खण्डन अहले किताब नहीं कर सकते।

इस्तेअला (استعلاء) का अर्थ होता है विजयी होना, प्रभुत्व पाना, जिसकी उत्पत्ति अला यालू उलुव्वन (علا يعلوا علواً) से हुई है।[1]

अल्लाह तआला ने इस्लाम को प्रभुत्वशाली बनाया, उसे अन्य धर्म पर विजय प्राप्त हुआ तथा अल्लाह ने अपने नबी को ऐसी प्रतिष्ठा एवं सर्वोच्चता प्रदान की जो उनके पूर्व किसी नबी को प्राप्त नहीं हुई थी।

इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि फ़ारान की पहाड़ी से प्रकट होने से तात्पर्य यह है कि मक्का में फ़ारान की चोटी से इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से किसी नबी का अवतरित होना, जोकि वास्तव में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बन कर आने की शुभ-सूचना है।

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "इस्तेअला से अभिप्राय है कि फ़ारान की चोटियों से आपकी बात बुलंद होगी, जब्कि फ़ारान की चोटी बिना किसी मतभेद के हिजाज़ में स्थित है, और ऐसा केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान के द्वारा ही संभव हो सका"।

अल्लाह तआला ने इन तीनों स्थानों का घटनाक्रम के आधार पर सूचीबद्ध तरीके से उल्लेख किया है ... जब इन तीन स्थानों का उल्लेख किया तो सर्वप्रथम श्रेष्ठ का उल्लेख किया तत्पश्चात श्रेष्ठतम का एवं सबसे अंत में सर्वश्रेष्ठ का उल्लेख किया।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَٱلتِّينِ وَٱلزَّيۡتُونِ ۝١﴾ (क़सम है अंजीर एवं ज़ैतून की)। सूरह अल-तीनः १। इससे अभिप्राय बैतुल मुक़द्दस का वह स्थान है जहाँ ईसा अलैहिस्सलाम थे।

﴿وَطُورِ سِينِينَ ۝٢﴾ (और क़सम है सीनाई पर्वत की) इससे अभिप्राय वह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से वार्तालाप किया था।

---

[1] देखें : अल-सिहाह (६/ २४३४-२४३९)।

﴿وَهَٰذَا ٱلۡبَلَدِ ٱلۡأَمِينِ ۝٣﴾ (और क़सम है इस अमन वाले नगर की) इससे अभिप्रेत वह नगर है जहाँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बना कर भेजे गए।[1]

दूसरा नस़्स़: सिफ़्र अल-तस़्निया खंड १८ में हैः

"१७- रब ने मुझ से कहाः उन्होंने मुझ से अच्छी बातें कीं। १८- मैं उनके लिए उन्हीं के भाइयों के बीच से तुम्हारे समान नबी बनाउँगा जिसके मुख में अपना कलाम (श्लोक) रखूँगा तथा वह मेरी समस्त वसीयतें उन तक पहूँचाएगा। १९- फिर ऐसा होगा कि जो व्यक्ति मेरी उस बात को नहीं मानेगा जो वह मेरे नाम से उस तक पहूँचाएगा तो फिर मैं उससे तलब करूँगा"। २०- वह नबी जो उद्दंडता का परिचय देगा तथा मेरी ओर से ऐसी बात करेगा जिसकी वसीयत मैंने नहीं की होगी, या वह दूसरे उपास्यों के नाम से बातें करेगा तो वह काल के गाल में समा जाएगा। २१- यदि तुम्हारा दिल यह कहता है कि हमें कैसे पता चलेगा कि यह बात अल्लाह ने नहीं कही है। २२- तो जो बात नबी अपने रब के नाम से बोले और वह घटित न हो तो ऐसी बात रब नहीं कहता, बल्कि नबी ने अपनी उद्दंडता व दुष्टता दिखाते हुए ऐसी बात कही है, तो तुम उससे भयभीत मत होना"।[2]

यह श्लोक इस बात का प्रमाण है कि आने वाले नबी मूसा अलैहिस्सलाम के समान होंगे तथा बनी इस्राईल में मूसा अलैहिस्सलाम के समान कोई नबी नहीं पधारे।[3]

इस का प्रमाण सिफ़्र इस्तिस़्ना, पाठ ३४ में इन शब्दों के साथ हैः "१०- फि इसके बाद बनी इस्राईल में मूसा जैसा कोई नबी नहीं हुआ जिससे रब प्रत्यक्ष रूप से बात करता था"। ११- किसी और नबी ने ऐसा ईलाही (दैवीय एवं अलौकिक) आयात (निशानियाँ) एवं मोअजज़े (चमत्कार) नहीं दिखाए जैसा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़िरऔन, उसके नौकरों-चाकरों तथा समस्त देश के समक्ष उस समय प्रस्तुत किया था जब रब ने उसे मिस्र भेजा। १२- किसी और नबी ने उस तरह का बड़ा काबू व नियंत्रण नहीं दिखाया और न ऐसे महान एवं अचरज भरा कार्य अंजाम दिया जैसा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने इस्राईलियों के समक्ष प्रस्तुत किया था"।[4]

इन दलीलों के आधार पर यह राय निरर्थक एवं बातिल प्रमाणित होती है किः

इस (पाठ संख्या १८) से अभिप्रेत यीशु अलैहिस्सलाम या ईसा अलैहिस्सलाम की शुभ-सूचना है।

उपरोक्त श्लोकों में जो दूसरी दलील है वह है (हे मूसा, तुम्हारे समान), रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एवं मूसा अलैहिस्सलाम के मध्य समानता निम्नांकित बिंदुओं से स्पष्ट होती हैः

---

[1] देखें : शमाइलुर्रसूल (३४७), जामेउल बयान (३०/ २३८ तथा इसके बाद के पृष्ठ), तफ़्सीर इब्ने कसीर (७/ ३२३-३२४)।

[2] सिफ़्र इस्तिस़्ना, पाठ संख्याः १८, अनुच्छेदः १७-२२।

[3] नबूवतु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल किताब अल-मुक़द्दस (५०)।

[4] सिफ़्र इस्तिस़्ना, पाठ संख्याः ३४, अनुच्छेदः १०-१२।

1- दोनों अल्लाह के बंदे और रसूल थे, दोनों ही ऐसी शरीअत (विधान) ले कर आए थे जो नियम एवं आदेश आधारित है, दोनों के पास माता-पिता, पत्नी तथा संतान थे ... और दोनों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का आदेश दिया गया था।

2- दोनों को आश्चर्यचकित कर देने वाले मोअजज़ात (चमत्कार) दिए गए थे, उद्दंड काफ़िरों ने उनको चुनौती दी, फिर भी अल्लाह तआला ने उनकी सुरक्षा की एवं उन्हें काफ़िर क़ौम से निजात दी।

3- दोनों ही के शत्रुओं ने उन से युद्ध किया लेकिन अल्लाह ने उन्हें शत्रुओं से मुक्ति दी।

उपरोक्त श्लोकों के अंदर एक तीसरी दलील उनका यह कथन हैः "उनके भाईयों में से" बनी इस्राईल के भाई इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान हैं, यह कहना सही नहीं होगा कि इसका अभिप्राय स्वयं बनी इस्राईल है क्योंकि यदि ऐसा होता तो (उनके भाईयों के बीच से) के स्थान पर (उन्हीं में) से कहते"।[1]

चौथी दलील उनका यह कथन हैः "मैं अपनी बात उनके मुँह में डालुँगा ताकि वह मेरी प्रत्येक वसीयत को उन तक पहूँचा दे", यह क़ुरआन के नाज़िल होने की दलील है जोकि अल्लाह का कलाम (ग्रंथ) है, जिसे अल्लाह तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित किया, आप ने इसे ज्यों-का-त्यों उम्मत तक पहूँचा दिया तथा कुछ भी नहीं छिपाया, इससे यहूदियों की उस विचारधारा का निरर्थक व व्यर्थ होना प्रमाणित होता है जिसमें वो कहते हैं कि इससे अभिप्रेत यीशु (ईसा) अलैहिस्सलाम की शुभ-सूचना है, क्योंकि उनको अपनी अलग स्वतंत्र शरीअत नहीं दी गई थी बल्कि वह मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत के अधीन थे।

पाँचवीं दलील उनका यह कथन है किः "वह नबी जो उद्दंडता का परिचय देगा तथा मेरी ओर से ऐसी बात करेगा जिसकी वसीयत मैंने नहीं की होगी, या वह दूसरे उपास्यों के नाम से बातें करेगा तो वह काल के गाल में समा जाएगा ...", इसके अंदर झूठे तथा सच्चे नबी का अंतर भी बताया गया है, यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे नहीं होते तो क्या उनका धर्म बाकी रहता तथा उसे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्राप्त होता? आपका सच्चाई व सत्यवादिता को जान कर बहुतेरे यहूदी उलेमा (रब्बी) ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया जब्कि उनमें से कुछ ने उद्दंडता एवं जलन के कारण इस्लाम को स्वीकार करने से इंकार कर दिया।

तीसरा नस़्स़ (श्लोक): ज़बूर संख्या ४५ में है किः

"१- मेरे दिल से सुंदर गीत छलक रहा है, मैं इसे बादशाह के समक्ष पेश करूँगा, मेरी ज़बान सिहद्धहस्त व निपुण लेखक के कलम के समान है। तुझे सुंदरता में आदम की संतान पर वरीयता प्राप्त है, मेरी नेमतें (अनुग्रह) तेरे लबों पर बरस पड़े कि तुम को सदा के लिए अल्लाह ने बरकत वाला बना दिया। ३- हे पहलवान, तू, ओज, तेज एवं प्रताप के साथ अपनी तलवार को लटका के अपनी जांघ पर रख। ४- सच्चाई, शिष्टाचार, व्यावहारिकता तथा सरलता एवं उसके लिए लड़ने की खातिर निकल आ, तेरा दाहिना हाथ तुझे आश्चर्यजनक तथा निडर कारनामे दिखाए, तेरे तेज़ बाण बादशाह के शत्रुओं के दिलों को छेद

---

[1] देखें : अल-वफ़ा बि अह़वाल अल-मुस़्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), एवं क़ुर्तुबी की पुस्तकः अल-ऐलाम (३/ २६४) तथा इज़्हारुल ह़क़ (४/ १११८-११२०)।

डालें, क़ौम तेरे पाँव में गिर जाएं। ६- हे अल्लाह, तेरा तख़्त सदा से है तथा सदा रहेगा, तेरे राज-पाट का मार्ग सीधा मार्ग है। ७- तूने सच्चाई से प्रेम रखा तथा अधार्मिकता से घृणा किया, इसलिए अल्लाह ने जो तेरा पूज्य है सुख के रोग़न से तेरे साथियों से अधिक तुझे सुगंधित कर दिया। ८- मर्र, ऊज तथा इम्तेलास की अनमोल सुगंध तेरे वस्त्रों से फूटती है, हाथी दांत के महल में तारदार संगीत तेरा दिल बहलाती है। ९- राजाओं की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से अलंकृत होकर घूमती हैं, मल्लिका (रानी), ऊग़ैर का सोना पहने हुए तेरे दाहिने ओर खड़ी है"।[1]

अहले किताब इस बात पर एकमत हैं कि दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बाद आने वाले एक नबी की शुभ-सूचना दी थी एवं उनके उपरोक्त विशेषणों का उल्लेख किया है, ईसाईयों ने दावा किया कि वह ईसा अलैहिस्सलाम हैं, जब्कि वास्तव में वो विशेषण हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए उपयुक्त व समुचित हैं[2], निम्न में इसका उल्लेख विस्तार से किया जा रहा हैः

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विशेषणों में इस बात का उल्लेख है कि आप सबसे सुंदर थे, जैसाकि बुख़ारी व मुस्लिम में बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है किः "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सर्वाधिक सुंदर तथा सबसे अधिक शिष्टाचारी एवं चरित्रवान थे, आप न अत्याधिक लम्बे थे न ही नाटे"।[3]

इसी तरह आपने तलवार लटकाई, दाऊद अलैहिस्सलाम के पश्चात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले किसी ने भी तलवार नहीं लटकाई और न जिहाद किया, आप ही हैं जिनके चरणों में लोग आकर गिरे तथा आप के द्वारा लाए गाए धर्म में समूह तथा जत्था बना कर प्रवेश करने लगे।[4]

ठीक इसी प्रकार से उनका यह कथन किः "सच्चाई से आपने प्रेम किया तथा अधर्मिता से घृणा की" यह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुणों में से है।

इसी प्रकार उनका यह कथन कि "राजाओं की बेटियाँ (राजकुमारियाँ) तेरे ज़ेवरात व आभुषणों से अलंकृत होकर घूमती हैं", वास्तव में ऐसा ही हुआ कि रोम व फ़ारस के विघटन के पश्चात राजकुमारियाँ मुसलमानों की दासी बन गईं, उन्हीं में से फ़ारस के राजा यज्देगर्द[5] की राजकुमारी "शेहर बानो" भी थी जो ह़सन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मातहत थीं।

---

[1] ज़बूर संख्या (५४), अनुच्छेदः १-९।

[2] देखें : इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११४४)।

[3] इसको बुख़ारी ने किताबुल मनाक़िब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुण वाले पाठ के अंतर्गत ह़दीस़ संख्या (३३५६) (३/ १३०३) में ज़िक्र किया है, एवं मुस्लिम ने इसे किताबुल फ़ज़ाइल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुण वाले पाठ के अंतर्गत ह़दीस़ संख्या (२३३७) (४/ १८१८-१८१९) में इस्ह़ाक़ बिन मंसूर के द्वारा रिवायत किया है।

[4] देखें : अल-जवाब अल-स़ह़ीह़ (३/ ३१८-३१९)।

[5] फ़ारस के किसरवी राजाओं में यज्देगर्द अंतिम राजा था, उसके शासनकाल में अरब ने उसके देश पर चढ़ाई करके विजय पताका फहराया, महाशय उस़्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त (शासनकाल) में सन ११ हिजरी को इसका वध हुआ तथा मुसलमानों ने अजम (अरब के अलावा) पर विजय प्राप्त किया। दाइरह मआरिफ़ुल क़र्न अल-इशरीन (७/ १८०)।

ईसाईयों का यह दावा निराधार है कि यह गुण ईसा अलैहिस्सलाम के लिए उपयुक्त है, क्योंकि उन्हें जिहाद का नहीं बल्कि तलवार को म्यान में रखने का आदेश दिया गया था।

इंजील योहन्ना के अध्याय १८ में है किः यीशु ने पतरस से कहाः "तलवार म्यान में रख"।[1]

न तो राजा की राजकुमारियां उन के पास आ सकीं तथा न ही उनके उपहार उनको मिले, बल्कि ईसाईयों के गुमान के अनुसार तो आप को फांसी पर लटका दिया गया तथा आपका तिरस्कार किया गया।[2]

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की सातवीं स्पष्ट दलीलः

अशअया की पुस्तक के पाठ संख्या ५४ में यह कथन है किः

1- अरि ओ बांझ, गीत गा तथा चिल्ला चिल्ला के गा तथा अपनी आवाज़ को ऊँची कर, तू तो बच्चे जनती न थी, क्योंकि रब फ़रमाता है कि उजाड़ मकान के बच्चे सुहागन बेटी के बच्चों से अधिक हैं।

2- क्योंकि तू दाहिने तथा बाएं पराजित करती फिरेगी, और तेरा वंश समुदाय का वारिस होगा एवं वीरान बस्तियों को आबाद करेगा।

3- डर मत कि तू लज्जित न होगी, तथा शर्मिंदा न हो कि तुझ में दोष निकाला जाएगा, तू अपनी जवानी की लज्जा को भूल जाएगी और तू अपने वैधव्य (रंडापा) के समय को कभी याद न करेगी।[3]

इस श्लोक में अनेक प्रमाण हैं :

पहला प्रमाणः आप का फ़रमानः "अरि ओर बांझ, गीत गा", बांझ से अभिप्राय मक्का है न कि यरुशलम जैसा कि अहले किताब गुमान रखते हैं, क्योंकि मक्का ही वह धरती है जहाँ ईसा अलैहिस्सलाम के बाद कोई नबी नहीं आया, यरुशलम में तो बहुतेरे नबी आए, इसी कारणवश मक्का को बांझ महिला के समान कहा गया है।[4]

दूसरा प्रमाणः उनका यह कथन किः "उजाड़ मकान के बच्चे सुहागन बेटी के बच्चों से अधिक हैं", अहले किताब "उजाड़ मकान के बच्चे" से अभिप्राय हाजरह अलैहस्सलाम की संतान लेते हैं क्योंकि उन्होंने रेगिस्तान में पड़ाव किया था तथा फिर वहाँ से उन्हें निकाल दिया गया, सुहागन बेटी के बच्चों से अभिप्राय उनके अनुसार सारह अलैहस्सलाम हैं।

यह श्लोक उनकी पुस्तक में भी मौजूद है जैसाकि सिफ़्र तकवीन (पैदाइश) के पाठ संख्या (१६) में हैः "अल्लाह के फ़रिश्ते ने उससे कहा कि तू गर्भवती होगी तथा तुझे पुत्र की प्राप्ती होगी, उसका नाम

---

[1] इंजील योहन्ना, पाठ संख्या (१८), अनुच्छेद (११)।

[2] इज़्हारुल हक़ (४/ ११५०-११५३)।

[3] अशअया की पुस्तक पाठ (५४), अनुच्छेद (१-४)।

[4] देखें: क़ुर्तुबी की पुस्तकः अल-ऐलाम (३/ २७८-२७९), अल-जवाब अल-सहीह (३/ ३२७), इज़्हारुल हक़ (४/ ११६०) एवं नबूवतु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल किताब अल-मुक़द्दस (७७)।

इस्माईल रखना इसलिए अल्लाह ने तेरे दुख सुन लिए। १२- वह एक स्वतंत्र पुरुष होगा, उसका हाथ सबके विरुद्ध होगा तथा सबका हाथ उसके विरुद्ध होगा तथा वह अपने सभी भाईयों के सामने बसा रहेगा"।[1]

यहाँ मक्का को संबोधित किया गया है कि उसे प्रतिष्ठा तथा सम्मान मिलने वाला है क्योंकि अंतिम नबी उसी के कोख से जन्म लेगा।[2]

पाँचवां प्रमाण[3]: इंजील योहन्ना के चौदह्वें पाठ में आया है किः

"१५- यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है तो तुम वही करोगे जिसका मैंने तुझे आदेश दिया है। १६- मैं पिता से प्रार्थना करूँगा कि वह तुम्हें दूसरा सहायक प्रदान करे जो सदा तुम्हारे संग रहेगा। १७- वह सहायक अर्थात रूहुल ह़क़ जिसे संसार नहीं मानती क्योंकि संसार न तो उसे देखती है तथा न ही उसे जानती है, किंतु तुम जानते हो कि वह तुम्हारे साथ है एवं तुम में ही रहेगा"।[4]

पंद्रह्वें पाठ में यह है किः "२६- मैं तुम्हारे पास सहायक भेजूँगा जो मेरे बाप की ओर से होगा, वह सहायक सच्चाई की रूह़ -रूहुलह़क़- है जो बाप की ओर से आती है, जब वह आए तो मेरे बारे में गवाही देगी। २७- और तुम भी लोगों से मेरे बारे में कहोगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे साथ हो"।[5]

इंजील योहन्ना के ही चौदह्वें पाठ में यह भी है कि) "२६- यह सहायक जो पवित्र रूह़ है जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें प्रत्येक चीज़ की शिक्षा देगा और तुम्हें मेरी हर बात की याद दिलाएगा"।[6]

इंजील योहन्ना के सोलह्वें पाठ में है किः "७- मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि यदि मैं जाता हूँ तो तुम्हार लिए सहायक भेजूँगा, यदि मैं नहीं जाऊँग तो तुम्हारे पास सहायक नहीं आएगा। ८- जब सहायक आएगा तो वह संसार की बुराइयों को साबित करेगा तथा पाप, सच्चाई एवं न्याय के बारे में भी बताएगा"।[7]

---

[1] सिफ़्र तकवीन पाठ संख्या (१६), अनुच्छेद (११-१२)।

[2] देखें: इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११६०-११६१)।

[3] यह अहदनामा -ए- जदीद (नया नियम, New Testament) की शुभ-सूचनाओं में से है जिससे अभिप्राय चार इंजील (मत्ता, मरक़ुस, लुक़ा तथा योहन्ना) तथा इससे संबंधित अस्फ़ार (पुस्तकें) हैं। -नया नियम २७ किताबों का संग्रह है, जो कि तीन भागों में विभाजित हैं: सुसमाचार (४), कार्य (१) और पत्रियाँ (२२; १४-पॉल, ७-कैथोलिक, १-इल्हाम)। नए नियम के इन २७ पुस्तकों को ईसाई धर्म में लगभग सर्वमान्य रूप से मान्यता दी गई है-। पूर्व में जिन दलीलों का उल्लेख हुआ है वह अहले किताब के अहदनामा -ए- क़दीम (पुरान नियम, Old Testament) अर्थात तौरात तथा नबियों के अस्फ़ार से व्युत्पद (लिया गया) है।

[4] इंजील योहन्ना, पाठ संख्या (१४), अनुच्छेद (१५-१७)।

[5] इंजील योहन्ना, पाठ संख्या (१५), अनुच्छेद (२६-२७)।

[6] इंजील योहन्ना, पाठ संख्या (१४), अनुच्छेद (२६)।

[7] इंजील योहन्ना, पाठ संख्या (१६), अनुच्छेद (७-८)।

दूसरे प्रकाशन में "सहायक" के स्थान पर जगह-जगह "फ़ारक़ुलीत़ (पैरक्लीट, Paraclete)" का शब्द आया है।[1]

इन समस्त श्लोकों से यह सूचना मिलती है कि यीशु मसीह के बाद एक रसूल आने वाले हैं, जब्कि ईसाईयों का दावा है कि वह "सहायक" आ चुके हैं, इसी कारण वो इन श्लोकों को इनके सही अर्थों में न प्रयोग करके किसी और अर्थ में (तावील) करते हैं, और कहते हैं किः अक़ानीम (व्यक्तित्व, ख़ुदा) तीन हैं: बाप, बेटा एवं रूह़ (रूहुलक़ुद्स), "सहायक" से अभिप्राय तीसरा अक़नूम (रूहुलक़ुद्स) है जोकि पधार चुके हैं।[2]

शैख़ुलइस्लाम इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "इस विषय में ईसाईयों के बीच मतभेद पाया जाता हैः कुछ ईसाईयों का कहना है किः इससे अभिप्राय वह रूह़ है जो ह़वारीय्यों (ईसा अलैहिस्सलाम के संगियों) के ऊपर उतरी, जब्कि कुछ लोगों का कथन है किः ये वो ज्वलंत जीभ हैं जो आकाश से शिष्यों पर उतरीं, इसी कारणवश ईसाईयों के विषय में ज्ञान रखने वाले लोग कहते हैं किः इनमें किसी को भी उस फ़ारक़ुलीत़ के आगमन के संबंध में कोई निश्चित व सटीक जानकारी नहीं है जिसके आगम का वादा किया गया है"।

"कुछ ईसाईयों का यह भी मानना है कि इससे अभिप्राय स्वयं ईसा अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि फांसी के चालीस दिन के बाद वह (वापस) आ गए थे"।[3]

मुसलमानों का अक़ीदा (आस्था) यह है कि इससे अभिप्राय सभी नबियों के सिलसिला को समाप्त कर देने वाले अंतिम नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन की शुभ-सूचना है, निम्नलिखित दलीलों के आधार पर इस आस्था के सही व उचित होने का सहज रूप से अनुमान लगाया जा सकता हैः

1- ऐसे रूहुलक़ुद्स न तो ईसा अलैहिस्सलाम के पूर्व किसी पर उतरे तथा न आप के पश्चात, जो (पूर्वोल्लेखित) गुणों पर खड़ा उतरते हों, तथा न ही इस नाम के द्वारा किसी का नामकरण हुआ, इसके अतिरिक्त ईसा अलैहिस्सलाम को जिस चीज़ की बशारत (शुभ-सूचना) दी गई वह एक बड़ी चीज़ है।

2- उनका यह कथन किः "वह तुम्हें दूसरा सहायक प्रदान करेगा जो सदा तुम्हारे संग रहेगा", (दूसरा) यह शब्द इंगित कर रहा है कि कोई दूसरा नबी भी आने वाला है उनके समान जो उनसे पहले आ चुके हैं, यह गुण एक ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी के लिए उपयुक्त है जो दृष्टिगोचर होता हो अर्थात जिसे आँखों के द्वारा देखा जा सकता हो न कि वह जिसे देखना असंभव हो।

---

[1] देखें : इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११८५), किंतु मैंने जिस प्रकाशन को सामने रख कर उपरोक्त पंक्तियां लिखी हैं उसमें "सहायक" का शब्द आया है, इसका कारण भी वही है जिसका पूर्व में मैंने उल्लेख किया था कि ईसाई नामों का भी अनुवाद कर देते थे।

[2] देखें : नबूवतु मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल किताब अल-मुक़द्दस (९८-९९)।

[3] अल-जवाब अल-स़हीह़ (४/ ९)।

इसके अतिरिक्त उनका यह कहना किः "जो सदा तुम्हारे संग रहेगा", यह विदित है कि इससे अभिप्राय वह स्वयं नहीं हैं, बल्कि यह विशेषण उन पर सटीक बैठती हैं जो सदा (अपने शिक्षा के साथ) बाकी रहने वाला है तथा उनकी रिसालत अंतिम शरीअत (विधान) होगी।

3- उनका यह कथनः "यदि मैं नहीं जाऊँग तो तुम्हारे पास सहायक नहीं आएगा", इससे ज्ञात होता है कि उनका आगमन ईसा अलैहिस्सलाम के बाद होगा, जिस से उस विचारधारा का खण्डन होता है जिसके अनुसार इससे अभिप्राय स्वयं ईसा अलैहिस्सलाम ही हैं।

4- उनका यह कथनः "जब सहायक आएगा तो वह संसार की बुराइयों को साबित करेगा", मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुफ़्र, शिर्क तथा कुकर्म जैसी बुराईयों से संसार को सचेत किया तथा इस पर फटकार लगाई, तीन ख़ुदा वाली आस्था को नकारा, तौहीद की दावत दी तथा अहले किताब के रिवाज व चलन से अलग हो कर अल्लाह तआला के उन अस्मा व सिफ़ात (नाम तथा विशेषताओं) को स्पष्ट किया जो अल्लाह की प्रतिष्ठा तथा महानता के अनुकुल हैं, इसी प्रकार से आप ने अल्लाह तआला की इबादत व उपासना के जो अनिवार्य ढ़ंग हैं उनको भी बताया, मरणोंपरांत पेश आने वाले मामलों को इतना विस्तार से बताया कि आप से पहले किसी नबी ने इतने विस्तार के साथ इसका वर्णन नहीं किया था।

5- उनका यह कथनः "मैं गवाही दूँगा और तुम भी लोगों से मेरे बारे में कहोगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे साथ हो", इसकी पुष्टि अल्लाह तआला के इस फ़रमान से भी होती हैः ﴿وَإِذْ قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ يَٰبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ إِنِّي رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنۢ بَعْدِى ٱسْمُهُۥٓ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ قَالُوا۟ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٦﴾ (तथा याद करो जब कहा मरियम के पुत्र ईसा नेः हे इस्राईल की संतान, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ तथा पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझसे पूर्व आई है, तथा शुभ-सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद है, फिर जब वह आ गए उनके पास खुले (स्पष्ट) प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है)। सूरह सफ़्फ़ः ६ ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईसा अलैहिस्सलाम की पुष्टि की, ईसाईयों की अतिश्योक्तियों, यहूदियों द्वारा मनगढ़ंत तथा काल्पनिक बातों एवं कुकर्मियों के झूठ से उनको पाक व पवित्र किया तथा उनके विषय में वही उचित एवं प्रामाणिक बात कही जिससे अल्लाह तआला ने उन्हें विशेषित किया है।[1]

6- "फ़ारक़ुलीत (पैरक्लीट, Paraclete)" तथा (सहायक) के बारे में जो भी वर्णन आया है सभी स्रोतों में इसकी यही व्याख्या की गई है कि इसका अर्थ, हम्द (प्रशंसा) के इर्द-गिर्द घूमता है, इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "("फ़ारक़ुलीत (पैरक्लीट, Paraclete)") रोमन भाषा का एक शब्द है जिसका अरबी अर्थ मुहम्मद है"।[2]

---

[1] देखें : अल-जवाब अल-सहीह (४/ ९-१७), इज़्हारुल हक़ (४/ ११९१-११९८)।

[2] अल-ऐलाम (२/ २५५)।

एक कथन यह भी है कि वह "ह़ामिद" तथा "ह़म्माद" के अर्थ में है जोकि "अह़मद" एवं "मुह़म्मद" के समानार्थी है, इन सभी शब्दों की उत्पत्ति "ह़म्द" से हुई है[1], इसलिए कि "अह़मद" नाम को इब्रानी (हिब्रू, Hebrew) भाषा में पैरक्लीट तथा यूनानी (ग्रीक, Greece) भाषा में पैरक्लीट्सी पढ़ते हैं, जब्कि ईसा अलैहिस्सलाम ने इसे हिब्रू तथा ग्रीक भाषा में अह़मद पढ़ा था[2], जो बाद में फ़ारक़ुलीत़ में बदल गया।

एक कथन यह भी है कि इसका अर्थ है "मुख़्लिस़ (निष्ठावान)", ईसाई कहते हैं कि असल में यह ग्रीक शब्द "पराक्लेट्स (Paraclitus)" है जिसका अर्थ होता है सहायक एवं मददगार वकील, जब्कि यह शब्द अपने दोनों अर्थों के आधार पर हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की शुभ-सूचना की दलील है, पहले अर्थ के अनुसार उसका अनुवाद मुहम्मद है, और आपकी उम्मत वाले ह़म्द बयान (प्रशंसा करने) वाले लोग हैं, जो सुःख-दुःख सभी परिस्थितियों में अल्लाह की ह़म्द व प्रशंसा की माला जपते रहते हैं।

दूसरे अर्थ के अनुसार इसका अनुवाद होगा वह सम्मान देने वाला है जिसके द्वारा अल्लाह तआला ने मोमिनों एवं मुवह़्हिदों (एकेश्वरवादियों) को सम्मान दिया, तथा वही मुक्ति देने वाला भी है जो हिदायत व सत्य मार्गदर्शन वाली शरीअत ले कर आया और लोगों को शिर्क, दास प्रथा एवं ग़ैरुल्लाह की पूजा करने से मुक्ति दिलाई।[3]

छठी दलीलः इंजील मत्ता के चौथे पाठ में आया है किः

"१७- उस समय से ईसा (अलैहिस्सलाम) बार-बार यह बात पुकार रहे हैं कि तौबा करो, क्योंकि आसमानी बादशाहत समीप आ चुकी है"।

इसके अतिरिक्त उनका यह कथनः "२३- यीशु मसीह ने गलील के सभी इलाकों का चक्कर लगाया, यीशु यहूदियों के प्रार्थना स्थल में शिक्षा तथा ख़ुदा की बादशाहत के बारे में ख़ुशख़बरी व शुभ-समाचार देने लगा, यीशु ने सभी लोगों को रोगों एवं विघ्नों से मुक्ति दिलाई"।[4]

इंजील मत्ता के तीसरे पाठ में है किः "१- बपतिस्मा (Baptism अर्थात "धार्मिक स्नान" जोकि जल के प्रयोग के साथ किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को चर्च की सदस्यता प्रदान की जाती है) देने वाले योहन्ना ने यहूदियों के बयाबान व उजाड़ स्थान पर प्रवचन देना आरंभ कर दिया। योहन्ना ने पुकार कर कहाः आसमानी बादशाहत का समय निकट हो गया है तुम अपने पापों का प्रायश्चित करके अल्लाह की ओर ध्यानमग्न हो जाओ"।[5]

---

[1] देखें : अल-जवाब अल-स़हीह़ (४/ १६)।

[2] नबूवतु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल किताब अल-मुक़द्दस (९८)।

[3] देखें : अल-जवाब अल-स़हीह़ (४/ १६), इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११९०)।

[4] देखें : इंजील मत्ता, पाठ संख्या (४), अनुच्छेद (१७)।

[5] देखें : इंजील मत्ता, पाठ संख्या (३), अनुच्छेद (१-२)।

इंजील मत्ता के दसवें पाठ में यीशु मसीह अपने शिष्यों को नसीहत व सदुपदेश देते हुए कहते हैं किः "इस्राईल के पास जा कर यह ऐलान कर दो किः आसमानी बादशाहत का समय निकट आ चुका है"।[1]

चुनाँचे आसमानी बादशाहत का शुभ-समाचार ईसा अलैहिस्सलाम, यह्या अलैहिस्सलाम एवं ह़वारियों ने भी दी, जो इस बात का प्रमाण है कि यह बादशाहत उनमें से किसी के युग में नहीं थी, क्योंकि सभी लोगों ने मात्र ख़ुशख़बरी दी जिसका अर्थ यह है कि इससे अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की शुभ-सूचना है।

शब्द मलकूत (बादशाहत) के तीन अर्थ हैं :

1- यह अधिकार और वर्चस्व के रूप में हो।

2- विरोधियों के वध (के द्वारा हो)।

3- इससे अभिप्राय रब्बानी शरीअत (दिव्य नियम) है जोकि "आसमानी बादशाहत" जैसे शब्द से समझ में आता है।

ये समस्त विशेषण तथा गुण मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा लाई हुई शरीअत (विधान) व रिसालत पर बिल्कुल सटीक व फिट बैठती हैं।[2]

ये वो कुछेक नुसूस (श्लोक) हैं जिन में प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने का शुभ-समाचार दिया गया है, इसके अतिरिक्त और भी बहुतेरे नुसूस (श्लोक) हैं जिनका उल्लेख तवालत व विस्तार के भय से नहीं किया गया है।[3]

इससे हमें यह विश्वास हो जाता है कि अहले किताब इस बात से भलि-भांति परिचित हैं कि हमारे नबी अंतिम नबी हैं, जिनका उल्लेख यहाँ किया गया है उनसे भी अधिक स्पष्टता के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुणों का उल्लेख उनके यहाँ पाया जाता है, किंतु वो अल्लाह तआला के इस फ़रमान के अनुसार ह़क़ व सत्य को छिपाते हैं किः

﴿ٱلَّذِينَ ءَاتَيۡنَٰهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ يَعۡرِفُونَهُۥ كَمَا يَعۡرِفُونَ أَبۡنَآءَهُمۡۖ وَإِنَّ فَرِيقٗا مِّنۡهُمۡ لَيَكۡتُمُونَ ٱلۡحَقَّ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ١٤٦﴾
(और जिन्हें हमने पुस्तक दी है वो आपको ऐसे ही पहचानते हैं जैसे अपनी संतानों को पहचानते हैं, और उनका एक समुदाय जानते हुए भी सत्य को छुपा रहा है)। सूरह अल-बक़राः १४६ ।

---

[1] देखें : इंजील मत्ता, पाठ संख्या (१०), अनुच्छेद (७)।

[2] देखें : इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११७४-११७५)।

[3] इसके बारे में और अधिक जानकारी के लिए देखें : क़ुर्तुबी की पुस्तकः अल-ऐलाम (३/ २६३-२८०), अल-जवाब अल-स़हीह़ (३/ २७५-३३२), (४/ ३-२१) एवं इज़्हारुल ह़क़ (४/ ११११६-११८५)।

दूसरा पाठः

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का आम व व्यापक होना

हमारा यह अक़ीदा (आस्था) है तथा सभी मुसलमान इस पर एकमत हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत सभी लोगों के लिए आम व व्यापक है, बल्कि यह इस्लाम धर्म की बुनियादी ज्ञान का एक अभिन्न अंग है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समस्त मानवता के लिए भेजे गए थे[1], और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सभी इंसानों व जिन्नातों (मानवों तथा दानवों) के लिए रसूल थे, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّي رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيۡكُمۡ جَمِيعًا ١٥٨﴾ (आप कह दीजिए कि हे लोगों, मैं तुम सब की ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ)। सूरह अल-आराफ़ः १५८।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह का फ़रमान हैः ﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا كَآفَّةٗ لِّلنَّاسِ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗا ٢٨﴾ (हमने आप को समस्त लोगों के लिए शुभ-सूचना देने वाला तथा डराने वाला बना कर भेजा है)। सूरह सबाः २८।

अल्लाह तआला का इर्शाद हैः ﴿أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنۡ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ رَجُلٖ مِّنۡهُمۡ أَنۡ أَنذِرِ ٱلنَّاسَ وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنَّ لَهُمۡ قَدَمَ صِدۡقٍ عِندَ رَبِّهِمۡۗ قَالَ ٱلۡكَٰفِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٞ مُّبِينٌ ٢﴾ (क्या मानव के लिए आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें, और जो ईमान लाएं उन्हें शुभ-सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिए उनके रब व पालनहार के पास सत्य सम्मान है, तो काफिरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है)। सूरह यूनुसः २।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का कथन हैः ﴿قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدۡ جَآءَكُمُ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكُمۡۖ فَمَنِ ٱهۡتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهۡتَدِي لِنَفۡسِهِۦۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَاۖ وَمَآ أَنَا۠ عَلَيۡكُم بِوَكِيلٖ ١٠٨﴾ (-हे नबी-, कह दीजिए कि हे लोगो, तुम्हारे रब व पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया है, अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिए लाभदायक है, और जो कुपथ हो जाए तो उस का कुपथ उसी के लिए नाशकारी है, और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ)। सूरह यूनुसः १०८।

इससे ज्ञात होता है कि आप सभी लोगों के लिए डराने वाला बन कर आए थे, आपका डराना केवल अरब वासियों तक ही सीमित नहीं था, हाँ यह अलग बात है कि सर्वप्रथम आप ने अरब वासियों को ही इस्लाम की दावत दी थी।[2]

---

[1] शर्ह अल-त़हावीय्या (१३४)।

[2] देखें : अन्नबूवात (२६८)।

यदि आप सभी लोगों के रसूल नहीं होते तो आप यहूदियों तथा ईसाईयों को अपनी रिसालत मानने तथा अपने लाए हुए पैग़ाम व संदेश पर ईमान लाने की दावत नहीं देते तथा न ही इंकार करने पर उनसे युद्ध लड़ते और न उनका रक्त बहता एवं न ही उनके धन व संपत्ति को ह़लाल व जायज़ ठहराया जाता।

अतः जो भी आप की रिसालत पर ईमान लाता है उसके लिए अपरिहार्य है कि वह आपकी रिसालत के आम व व्यापक होने का भी ईमान रखे अन्यथा विरोधाभास में पड़ जाएगा क्योंकि ऐसी स्थिति में उससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन व कर्म को झुठलाना माना जाएगा। [1]

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, यदि यहूदी व ईसाई मेरे बारे में सुनता है और फिर मेरी रिसालत पर ईमान लाए बिना मर जाता है तो वह जहन्नमी (नरक वासी) है"।[2]

इसलिए मैंने यह बताना आवश्यक समझा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व पर जिन लोगों ने कीचड़ उछालने का दुस्साहस व चेष्ठा की है, उन्हें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने तथा आपके द्वारा लाई हुई शरीअत (धर्म-शास्त्र) को मानने व अंगीकार करने का आदेश दिया गया है, यदि वह ईमान नहीं लाते हैं तो सदा के लिए जहन्नम उसका ठिकाना होगी, यद्यपि वो अहले किताब होने का दावा ही क्यों न करें, क्योंकि इस्लाम धर्म ने अपने पूर्व के सभी आसमानी धर्मों को मंसूख़ अर्थात रद्द कर दिया है, बल्कि इससे बढ़ कर जिन्नातों को भी यह आदेश दिया गया है कि वो केवल आप पर ही ईमान लाएं तथा आपका ही अनुसरण करें।

रही यह बात कि इस का क्या प्रमाण है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत जिन्नातों के लिए भी है, तो अल्लाह तआला का यह फ़रमान इसका प्रमाण है: ﴿يَٰقَوۡمَنَآ أَجِيبُواْ دَاعِيَ ٱللَّهِ وَءَامِنُواْ بِهِۦ يَغۡفِرۡ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُجِرۡكُم مِّنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ ٣١﴾ (हे मेरे समुदाय के लोगों, अल्लाह की ओर बुलाने वाले का कहा मानो और उस पर ईमान ले आओ तो अल्लाह तआला तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा)। सूरह अल-अह़क़ाफ़ः ३१ ।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह फ़रमाते हैं : "इंसान के लिए यह जानना परम आवश्यक है कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इंसान तथा जिन्नात दोनों की ओर रसूल बना कर भेजा, और उनके लिए आप पर तथा आप के पैग़ाम व संदेश पर ईमान लाना तथा आपका अनुसरण करना वाजिब व अपरिहार्य करार दिया ... यह वह मूलाधार है जिस पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम, भलाई के साथ उनका अनुगमन करने वाले ताबेईन रहिमहुमुल्लाह, मुसलमानों के बड़े-बड़े ईमाम तथा समस्त इस्लामी फ़िरक़े (पंथ) जैसे अहल -ए- सुन्नत व अल-जमात आदि सभी एकमत हैं, किसी ने

---

[1] देखें : अल-जवाब अल-स़हीह़ (१/ १६६)।

[2] इस ह़दीस़ को इमाम मुस्लिम ने किताबुल ईमान में हमारे नबी मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना वाजिब है, पाठ के अंतर्गत उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्याः १५३ (१/ १३४), इसे इब्ने सय्यिदुन्नास ने भी उयूनुल अस़र में अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से इन्हीं शब्दों के साथ रिवायत किया है (१/ १६६)।

इसमें मतभेद नहीं किया, जहाँ तक अहले किताब अर्थात यहूदि व ईसाई की बात है तो वो भी मुसलमानों के समान ही इसका इकरार करते हैं, हाँ यह अलग बात है कि उनमें से कुछ लोग इसका इंकार करते हैं"।[1]

इस बात में मतभेद है कि क्या रिसालत का आम व व्यापक होना केवल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सीमित है अथवा अन्य नबी भी इस विशेषता में आप के समान हैं ? यह मतभेद नूह अलैहिस्सलाम के बारे में है।

इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह ने अल्लाह तआला के इस कथनः ﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِۦ لِيَكُونَ لِلْعَٰلَمِينَ نَذِيرًا ۝١﴾ (पाक व पवित्र है वह (अल्लाह) जिसने फ़ुर्क़ान अवतरित किया अपने बंदे व भक्त पर, ताकि समस्त संसार वासियों को सावधान करने वाला हो)। सूरह अल-फ़ुर्क़ानः १ । की तफ़्सीर व व्याख्या करते हुए लिखते हैं किः "यहाँ (अल-आलमीन) से अभिप्राय इंसान तथा जिन्नात हैं, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों की ओर रसूल तथा नज़ीर (डराने वाला) बना कर भेजे गए थे, और आप सबसे अंतिम नबी हैं, आप के सिवा किसी को भी आम व व्यापक रिसालत नहीं दी गई, सिवाय नूह अलैहिस्सलाम के, क्योंकि तूफ़ान (-ए- नूह) के पश्चात सभी लोगों को आपने अपनी रिसालत से संदेश दिया था क्योंकि आप ही के द्वारा अल्लाह तआला ने (तूफ़ान -ए- नूह के पश्चात, नई नस्ल की) रचना आरंभ की थी"।[2]

किंतु यह राय उस ह़दीस़ के विरुद्ध है जो जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

"मुझे पाँच ऐसी चीज़ें दी गई हैं जो मुझसे पहले किसी भी नबी को नहीं दी गईं : एक मास की दूरी से ही मेरे शत्रुओं के दिलों में मेरा रोब व धाक बैठाने के द्वारा मेरी सहायता की गई है, मेरे लिए समस्त धरती को पवित्र करने वाली तथा नमाज़ पढ़ने के लिए पाक बना दिया गया है, अतः मेरी उम्मत के किसी भी व्यक्ति के लिए जहाँ भी नमाज़ का समय हो जाए तो उसे चाहिए कि वह नमाज़ पढ़ ले (चाहे वह कहीं भी हो), मेरे लिए माल -ए- ग़नीमत[3] को ह़लाल (जायज़, उचित) कर दिया गया है जब्कि मुझसे पहले किसी के लिए भी ह़लाल नहीं था, मुझे शफ़ाअत (सिफ़ारिश) दी गई तथा (पूर्व में) नबी को किसी एक विशेष समुदाय के लिए भेजा जाता था जब्कि मुझे समस्त लोगों के लिए नबी बना कर भेजा गया है"।[4]

जिन आयतों (श्लोकों) में नूह अलैहिस्सलाम की रिसालत को उनके समुदाय तक ही सीमित होने की बात कही गई है, वो निम्नलिखित हैं:

---

[1] मज्मूअ अल-फ़तावा (१९/ ९-१०)।

[2] अल-जामेअ लि-अह़कामिल क़ुरआन (१३/ २)।

[3] इस्लाम धर्म में पराक्रम बल पर और विजय के पश्चात युद्ध में पराजित दुश्मन से जीते गये या उसके छोड़ कर भाग जाने पर जो कुछ क़ब्ज़े में आता है उसके लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

[4] इसे इमाम बुख़ारी ने किताबुत्तयम्मुम, ह़दीस़ संख्याः ३२८ (१/ १२८) तथा किताबुल मसाजिद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन किः मेरे लिए समस्त धरती को पवित्र करने वाली तथा नमाज़ पढ़ने के लिए पाक बना दिया गया है, अध्याय के अंतर्गत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, ह़दीस़ संख्याः ४२७ (१/ १६८)।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَٱتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَأَ نُوحٍ إِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهِۦ يَٰقَوۡمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُم مَّقَامِي وَتَذۡكِيرِي بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَعَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلۡتُ ٧١﴾ (आप उन्हें नूह की कथान सुनाएं, जब उन्होंने अपने समुदाय से कहा: हे मेरे समुदाय के लोगों, यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया है)। सूरह यूनुस: ७१ ।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿لَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ فَقَالَ يَٰقَوۡمِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرُهُۥٓ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ٥٩﴾ (मैंने नूह -अलैहिस्सलाम- को उनके समुदाय के पास भेजा तो उन्होंने कहा: हे मेरे समुदाय के लोगों, तुम -केवल- अल्लाह की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं, मुझे तुम्हारे प्रति एक घोर व बड़े दिन की यातना का अंदेशा व डर है)। सूरह आराफ़: ५९ ।

अल्लाह तआला का यह कथन: ﴿وَلَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوۡمِهِۦٓ إِنِّي لَكُمۡ نَذِيرٞ مُّبِينٌ ٢٥﴾ (नि:संदेह हमने नूह को उसके समुदाय के पास रसूल बना कर भेजा कि मैं तुम्हें साफ-साफ स्पष्ट रूप से सावधान करने वाला हूँ)। सूरह हूद: २५ ।

एक दुविधा यह भी है कि शफ़ाअत (सिफारिश) वाली ह़दीस़ में आया है कि: "नूह अलैहिस्सलाम के पास जाओ जोकि अल्लाह के भेजे हुए प्रथम रसूल हैं"।

जब्कि अल्लाह तआला ने (तूफ़ाने नूह के द्वारा) पृथ्वी पर बसने वाले सभी लोगों को जल मग्न कर (डुबा) दिया था, यदि नूह अलैहिस्सलाम उन समस्त लोगों की ओर न भेजे गए होते तो सभी लोगों का विनाश नहीं होता।

इस दुविधा के निवारण के लिए अनेक उत्तर दिए गए हैं :

यह कि: नूह अलैहिस्सलाम की रिसालत उनके नबूवत के प्रारंभ में सभी लोगों के लिए आम व व्यापक नहीं थी बल्कि तूफ़ान के पश्चात आम हुई जब्कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत आरंभ से ही आम व व्यापक रही।

यह कि: नूह अलैहिस्सलाम के (आम व व्यापक नबी) होने से किसी अन्य के होने का इंकार नहीं किया जा सकता, और यह भी कि नूह अलैहिस्सलाम की दावत सभी लोगों के लिए आम था, क्योंकि उन सभी लोगों ने आप की रिसालत को मिथ्या करार दिया था। किंतु इस पर यह एतराज़ किया जा सकता है कि: ऐसी कोई बात साबित नहीं है।

यह कि: यह विशेषता हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इसलिए सीमित है कि दूसरे अन्य नबियों के विपरीत आपकी रिसालत प्रलय आने तक बाकी रहने वाली है।[1]

[1] देखें : फ़त्हुलबारी (१/ २५०-२५१)।

यह किः यह संभावना मौजूद है कि नूह अलैहिस्सलाम की रिसालत विशेषतः उनके समुदाय तक सीमित थी, किंतु दूसरे लोगों को भी उनकी रिसालत की सूचना मिली परंतु वह शिर्क (बहुदेववादिता) के दलदल में धंसे रहे, अंततः अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया।

इस संबंध में राजेह व सबसे सटीक बात वही है जिसका उल्लेख ह़ाफ़िज़ इब्न ह़जर रह़िमहुल्लाह ने किया है किः उस समय की परिस्थिति के अनुसार यह बात सही है कि नूह अलैहिस्सलाम धरती पर वास करने वाले सभी लोगों की ओर रसूल बना कर भेजे गए थे, क्योंकि यह बात सही है कि उस समय धरती पर वास करने वाले सभी लोग उन्हीं के समुदाय से थे, इसके विपरीत हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने समुदाय तथा अन्य सभी समुदाय के लिए रसूल बना कर भेजा गया था।[1]

आपके जीवित रहते हुए भी तथा आपकी मृत्यु पश्चात भी आपकी रिसालत, इंसान व जिन्नात सभी लोगों के आम है, दलीलों से यही प्रमाणित होता है।

क़ुरआन का अरबी भाषा में अवतरित होने का यह अर्थ नहीं है कि आपकी रिसालत आम व व्यापक नहीं थी, उसके निम्नांकित कारण हैं:

1- प्राचीन सभी धार्मिक ग्रंथ उसी भाषा में अवतरित हुई थीं जो समुदाय विशेष में भेजे गए नबी की भाषा होती थी, यदि कोई यह कहे किः उन नबियों की रिसालतें तो केवल उनके समुदाय तक ही सीमित थी (इसीलिए उन्हीं की भाषा में धार्मिक ग्रंथ उतारे गए) तो इसका उत्तर यह है किः क़ुरआन अरबी भाषा में इसलिए उतारा गया कि सर्वप्रथम अरब इसको समझ सकें, तत्पश्चात इसे दूसरे समुदाय तक पहूँचाया जा सके, चाहे यह कार्य अनुवाद के द्वारा हो या इस प्रकार कि लोग उस भाषा को सीखें जिस भाषा में क़ुरआन अवतरित हुआ है, दोनों ही रूप में इस पर अमल करना संभव है, कोई भी चीज़ सामर्थ से बाहर व असंभव नहीं है।

इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह लिखते हैं किः "उलेमा इस बात पर एकमत हैं कि जो व्यक्ति अरबी भाषा नहीं जानता हो उसके लिए अनुवाद की सहायता से क़ुरआन का अध्ययन व इसे समझने का प्रयास करना जायज़ है"।

2- क़ुरआन की हरेक आयत को हरेक मुसलमान के लिए समझना वाजिब व अनिवार्य नहीं है, बल्कि केवल यह जानना वाजिब है कि अल्लाह ने क्या आदेश दिया है ताकि उसके अनुसार कर्म कर सके, तथा किस चीज़ से रोका है ताकि उससे बचे, अब चाहे यह जानकारी उसे किसी भी भाषा में प्राप्त हो।

3- यहूदी, ईसाई तथा अजमी (अरब के अलावा लोग) मुश्रिकों में भी ऐसे लोग हैं जो यद्यपि (वंश के आधार पर) अरबी तो नहीं हैं किंतु अरबी भाषा के अच्छे जानकार व विशारद हैं।

---

[1] देखें : फ़त्हुलबारी (११/ ४४२)।

दूसरा अध्याय: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत का इंकार करने वालों के शुबुहात, शंकाएं एवं भ्रांतियां

इस्लाम एवं मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्रों का सबसे भीषण एवं मारक हथकंडा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत में संदेह पैदा करने में छिप्त है, इसी कारणवश भूतकाल में भी मुश्रिकों का यही ढ़ंग रहा है और वर्तमान में भी मुस्तशरिक़ीन एवं उनके दुम-छल्लों का यही उद्देश्य है, मुसलमानों के मध्य वह्य के स्रोतों के संबंध में शंका उत्पन्न कराने के लिए वो हरसंभव प्रयासरत हैं, इसमें कोई संदेह नहीं कि क़ुरआन ने उन के बहुतेरी शंकाओं का निवारण कर दिया है तथा उन भ्रांतियों को मिथ्या क़रार दिया है, और मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने का इंकार करने के लिए जो भ्रांतियां फैलाई थीं उनमें से अधिकांश का उल्लेख क़ुरआन में भी आया है, और मुझे यह कहते हुए कोई झिझक नहीं हो रही है किः उनकी सभी भ्रांतियों का केंद्र बिंदु उनका यह दावा है किः वह्य एक ऐसी चीज़ है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा और आपके कर्मों द्वारा उपजा है, यही दावा विभिन्न शंकाओं, भ्रांतियों एवं मतों का केंद्र बिंदु है जो वास्तव में मकड़ी के जाले से भी कमज़ोर एवं निर्बल है।

ये भ्रांतियां निम्न में संक्षिप्त रूप में उल्लेखित की जा रही हैं:

पहली भ्रांतीः यह दावा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जादूगर हैं।

दूसरी भ्रांतीः यह दावा कि वह्य, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी उपज है।

तीसरी भ्रांतीः यह दावा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (वह्य को) यहूदी, ईसाई, मजूसी एवं मुश्रिकों वाले धर्म से लिया है।

चौथी भ्रांतीः यह दावा कि जिसे हम वह्य कहते हैं वास्तव में वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मानसिक रोगों का परिणाम है।

पाँचवीं भ्रांतीः यह दावा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं वह्य (प्रकाशना, आकाशवाणी) के संबंध में शंकित व भ्रमित थे।

अब इन भ्रांतियों एवं शंकाओं के निवारण तथा उनको मिथ्या एवं भ्रमात्मक प्रमाणित करने के लिए मैं अल्लाह की सहायता चाहती हूँ:

पहली भ्रांतीः मक्का के काफ़िरों ने यह दावा किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जादूगर हैं जिसके आधार पर आपकी लाई हुई वह्य उनके समीप जादू मानी जाती है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿الٓرۚ تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱلۡكِتَٰبِ ٱلۡحَكِيمِ ١ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنۡ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ رَجُلٖ مِّنۡهُمۡ أَنۡ أَنذِرِ ٱلنَّاسَ وَبَشِّرِ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَنَّ لَهُمۡ قَدَمَ صِدۡقٍ عِندَ رَبِّهِمۡۗ قَالَ ٱلۡكَٰفِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٞ مُّبِينٌ ٢﴾ (अलिफ़ लाम रा, यह तत्वज्ञता (हिकमत) से परिपूर्ण किताब (क़ुरआन) की आयतें हैं।

क्या मानव के लिए आश्चर्य की बात है कि हमने उन्हीं में से एक पुरुष पर वह्य (प्रकाशना) भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें, और जो ईमान लाएं उन्हें शुभ-सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिए उनके रब (पालनहार) के पास सत्य सम्मान है, तो काफ़िरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है)। सूरह यूनुसः १-२ ।

﴿ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ لِلۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمۡ إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا سِحۡرٞ مُّبِينٌ ٤٣﴾ (और हक़ (सत्य) उनके पास आ चुका फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि यह तो खुला हुआ जादू है)। सूरह सबाः ४३ ।

﴿فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلۡحَقُّ مِنۡ عِندِنَا قَالُوٓاْ إِنَّ هَٰذَا لَسِحۡرٞ مُّبِينٞ ٧٦﴾ (फिर जब उनको हमारे पास से सही दलील पहूँची तो वो लोग कहने लगे कि निस्संदेह यह खुला हुआ जादू है)। सूरह यूनुसः ७६ ।

उनके पूर्व भी रसूलों को झुठलाने वालों का यही ढंग रहा है, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿كَذَٰلِكَ مَآ أَتَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُواْ سَاحِرٌ أَوۡ مَجۡنُونٌ ٥٢﴾ (इसी प्रकार नहीं आया उनके पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परंतु उन्होंने कहा कि जादूगर या पागल है)। सूरह ज़ारियाः ५२ ।

﴿قَالَ ٱلۡمَلَأُ مِن قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٞ ١٠٩﴾ (फ़िरऔन की क़ौम में जो सरदार लोग थे उन्होंने कहा कि वास्तव में यह व्यक्ति बड़ा सिद्ध जादूगर है)। सूरह आराफ़ः १०९ ।

इस शंका व भ्रांति के निवारण के लिए नबी एवं जादूगर के मध्य जो अंतर हैं यहाँ उनका उल्लेख किया जा रहा है:

1- नबियों एवं रसूलों के ऊपर फ़रिश्तें उतरते हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿قُلۡ مَن كَانَ عَدُوّٗا لِّجِبۡرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلۡبِكَ بِإِذۡنِ ٱللَّهِ ٩٧﴾ (ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! आप कह दीजिए जो जिब्रील का शत्रु हो जिसने आपके हृदय पर अल्लाह तआला का आदेश उतारा है (तो अल्लाह भी उसका शत्रु है)। सूरह अल-बक़राः ९७ ।

एक दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿وَمَا تَنَزَّلَتۡ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ٢١٠ وَمَا يَنۢبَغِي لَهُمۡ وَمَا يَسۡتَطِيعُونَ ٢١١﴾ (इस क़ुरआन को शैतान लेकर नहीं आए हैं, न ही वो इस योग्य हैं, न वो ऐसा करने में सक्षम हैं)। सूरह शोअराः २१०-२११ ।

जहाँ तक बात है जादूगर एवं उनके साथियों की, तो उन पर जिन्नात एवं शैतान आते हैं, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿هَلۡ أُنَبِّئُكُمۡ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَٰطِينُ ٢٢١ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٖ ٢٢٢﴾ (क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किन पर उतरते हैं, वो हरेक झूठे गुनहगार पर उतरते हैं)। सूरह शोअराः २२१-२२२।

2- जादू का आधार ही ज़ुल्म एवं अत्याचार, शिर्क (बहुदेववादिता) तथा झूठ पर है, यही कारण है कि इसकी गिनती उन बुराईयों में होती है जिन्हें अल्लाह तआला अप्रिय समझता और उससे रोकता है, इसके विपरीत नबी जिस चीज़ को ले कर आए वह तौहीद, न्याय एवं सच्चाई की दावत है।

3- जादूगर चमत्कार के नाम पर जो असाधारण कार्य करता है उसको दूसरा जादूगर प्रभावहीन एवं निष्क्रिय कर सकता है, जब्कि नबी की ओर से जो मोअजज़ा (चमत्कार) जाहिर होते हैं कोई भी उसका न तो मुकाबला कर सकता है और न ही उसे प्रभावहीन बना सकता है, यही कारण है कि जब फ़िरऔन के जादूगरों को यह विश्वास हो गया कि मूसा अलैहिस्सलाम का लाया हुआ मोअजज़ा जादू नहीं है तो वो मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए बिना नहीं रह सके।

4- नबियों के अनुयायियों की करामात (कोई अद्भुत या अलौकिक कार्य, अचरज भरी बात, सिद्धि, चमत्कार) भी नबियों के सच्चे होने के प्रमाण हैं, इसके विपरीत जादूगर जो कुछ हाथ की सफ़ाई दिखाता है अथवा अचरज भरा कोई कार्य करता है तो वह स्पष्ट रूप से उसके जादूगर होने को ही इंगित करता है।

5- जादूगर का उद्देश्य धरती पर उपद्रव, बर्बादी एवं फ़साद फैलाना होता है जब्कि नबी व रसूल न्याय, इस्लाह, सुधार एवं उस अल्लाह की उपासना की ओर बुलाते हैं जो अकेला है और जिसका कोई साझीदार नहीं।

6- नबूवत के विपरीत, कहानत (अंतर्यामी होने का दावा करना एवं ज्योतिषी का कार्य इत्यादि) तथा जादूगरी को अभ्यास एवं परिश्रम करके सीखा जा सकता है।

7- काहिन एवं जादूगर जिस भ्रमजाल/इंद्रजाल की रचना करता है, वैसा करने में जिन्नात एवं इंसान (मानव एवं दानव) ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी सक्षम हैं, जैसे हवा में उड़ना एवं पानी पर चलना इत्यादि, इसके विपरीत नबियों के मोअजज़ा (चमत्कार) जैसा कुछ करने में कोई भी जीव-जंतु सक्षम नहीं है, जैसे किताबें नाज़िल करना एवं (अल्लाह का) मूसा अलैहिस्सलाम से वार्तालाप करना इत्यादि।

8- नबियों ने एक-दूजे को सच्चा बतलाया, जब्कि जादूगर एक-दूसरे को झुठलाते एवं एक-दूसरे का तिरस्कार करते रहते हैं।

9- नबूवत यदि अभ्यास एवं परिश्रम से मिलने वाली होती भी तो एक अकेला अल्लाह की पूजा, सच्चाई, न्याय, परोपकार एवं आत्माओं की शुद्धि के द्वारा प्राप्त होती न कि जादू एवं ज्योतिषि जैसे कार्यों के द्वारा, इसलिए कि जादू एवं नजूमी होना ऐसी चीज़ें हैं जो केवल अल्लाह के साथ शिर्क, झूठ, फरेब, मक्कारी से ही प्राप्त किया जा सकता है, दोनों (नबूवत एवं जादू) के मध्य जमीन आसमान का अंतर है।

10- यह प्रसिद्ध एवं सामान्य चीज़ें हैं जिनकी अपनी कुछ अनिवार्य विशेषताएं हैं जो नबियों के सिवा अन्य लोगों के आम तौर-तरीका तथा बात-व्यवहार के विपरीत हैं।[1]

([1]) देखें : अन्नबूवात (४३-४९, ४३९-४४९), तथा अल-जवाब अल-सहीह (१/ २१४, ४/ २६०-२६२), एवं ईसारुल हक़्क़ अलल ख़ल्क़ (204-211)।

नबूवत का इंकार करने वाले इन लोगों से यह भी प्रश्न होना चाहिए कि क्या नबूवत मिलने के पूर्व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जादू टोना करने वाले के रूप में प्रसिद्ध थे कि नबूवत मिलने के पश्चात उन्हें जादूगर होने का ताना दिया जाए? बल्कि उनके बुद्धिजीवी (इस बात को स्वीकार करते थे कि आप जादू टोना करने वाले नहीं हैं तथा वो) क़ुरान (के सच्चे होने) को मानते थे तथा उसको सुन कर प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे, जैसाकि उत्बा[1] बिन रबीआ तथा नज़्र[2] आदि की ह़दीसों में आया है।[3]

दूसरी भ्रांतिः यह दावा कि वह़्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) की जो दशा हमें दृष्टिगोचर होती है वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा से उपजी धारणा एवं उनकी कपोल कल्पना मात्र है:

यह ऐसी भ्रांति है जो भूतकाल से ले कर वर्तमान तक (इस्लाम में) शंका पैदा करने के लिए मुश्रिकों का सहारा रहा है, अल्लाह तआला इसका खण्डन करते हुए फ़रमाता हैः ﴿وَإِذَا تُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡ ءَايَاتُنَا بَيِّنَٰتٖ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرۡجُونَ لِقَآءَنَا ٱئۡتِ بِقُرۡءَانٍ غَيۡرِ هَٰذَآ أَوۡ بَدِّلۡهُۚ قُلۡ مَا يَكُونُ لِيٓ أَنۡ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلۡقَآيِ نَفۡسِيٓۖ إِنۡ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّۖ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّي عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ١٥ قُل لَّوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَا تَلَوۡتُهُۥ عَلَيۡكُمۡ وَلَآ أَدۡرَىٰكُم بِهِۦۖ فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِيكُمۡ عُمُرٗا مِّن قَبۡلِهِۦٓۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ١٦﴾ (और जब उनके समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ, या इसमें परिवर्तन कर दो, उनसे कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इसमें परिवर्तन कर दूँ, मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है, मैं यदि अपने रब (पालनहार) की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ। आप कह दें : यदि अल्लाह चाहता तो मैं क़ुरआन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और न वह तुम्हें इससे सूचित करता, फिर मैं इससे पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ, तो क्या तुम समझ-बूझ नहीं रखते हो?) सूरह यूनुसः १५-१६।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿أَمۡ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥۚ بَل لَّا يُؤۡمِنُونَ ٣٣ فَلۡيَأۡتُواْ بِحَدِيثٖ مِّثۡلِهِۦٓ إِن كَانُواْ صَٰدِقِينَ ٣٤﴾ (क्या ये कहते हैं कि इस नबी ने क़ुरआन को स्वयं अपनी ओर से गढ़ लिया

---

[1] उत्बा पुत्र रबीआ पुत्र अब्दे शम्स, अबुल वलीद, क़ुरैश का एक गणमान्य व्यक्ति था, जाहिलीय्यत वाले युग में उनके सरदारों में से एक था, वह ठोस राय एवं रणनीति, सहनशीलता तथा उपकार करने जैसे गुणों से परिपूर्ण होने के साथ-साथ एक उत्तम तथा प्रभावी वक्ता भी था... इसने इस्लाम का युग पाया किंतु अपनी धृष्टता एवं उद्दंडता पर अड़ा रहा तथा मुश्रिकों के संग बद्र नामक युद्ध में शामिल हुआ, अंततः अली, ह़मज़ा तथा उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इसे घेरे में लेकर इसका वध कर दिया।

[2] नज़्र पुत्र ह़ारिस़ पुत्र अलक़मा पुत्र कलदा पुत्र अब्दे मुनाफ़, बद्र युद्ध में मुश्रिकों का पताका इसी के हाथ में था, इसकी गिनती क़ुरैश के वीर एवं धीर-गंभीर लोगों में होती थी, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मौसेरा भाई था फिर भी इसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा दुःख पहूँचाया, बद्र युद्ध में सन २ हिजरी में इसका वध हुआ।

[3] ये ह़दीसें बैहिक़ी की पुस्तक "दलाइलुन्नबूवत" में देखी जा सकती हैं (२/ २०१-२०५)।

है, बल्कि वास्तविकता तो यह है कि वो ईमान नहीं लाते, यदि वो सच्चे हैं तो इसके समान कोई ग्रंथ लेकर आएं)। सूरह अल-तूरः ३३-३४।

मुस्तशरिक़ीन भी इसी ढंग पर चलते रहे, अर्थात वह्य की निस्बत उन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर तो की किंतु वास्तविकता से (जान-बूझ कर) अंजान बने रहे, तथा ह़क़ व सच्चाई ज्ञात होने के बाद भी वो उसको स्वीकार करने से भागते रहे।

गोल्ड ज़ीहर[1] कहता है किः "चालीस वर्ष आयु हो जाने के पश्चात –उसके इस कथन का अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं- आदतानुसार मक्का के निकटवर्ती गुफा में अकेले एकांतवास में अपना समय व्यतीत करने लगे, जहाँ उन्हें बड़े-बड़े तथा धार्मिक स्वप्न आते थे एवं उन्हें यह प्रतीत होने लगा था कि अल्लाह तआला उसे ऐसी शक्ति के साथ पुकार रहा है जो शनेः-शनेः शक्तिशाली होती जा रही है, ताकि वह जाकर अपने समुदाय को इस बात से डराए कि उनकी गुमराही व पथभ्रष्टता उन्हें स्पष्ट घाटे की ओर ले जा रही है, सहसा उन्हें एक शक्ति की अनुभूति होने लगी जिसका वह मुकाबला नहीं कर सके, बल्कि उसने उन्हें अपने समुदाय की ओर शुभ-सूचना देने वाला तथा डराने वाला बन कर लौटने के लिए प्रोत्साहित किया"।[2]

निम्नलिखित आयतों को सामने रख विभिन्न रूप में इन मुस्तशरिक़ीन का खण्डन किया जा सकता हैः

प्रथमः अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿قُلۡ مَا يَكُونُ لِيٓ أَنۡ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلۡقَآيِ نَفۡسِيٓۖ إِنۡ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّۖ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّي عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ﴾ (उनसे कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इसमें परिवर्तन कर दूँ, मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है, मैं यदि अपने रब (पालनहार) की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ)। सूरह यूनुसः १५।

यह एक निर्णायक एवं अकाट्य प्रमाण है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो वह्य उतरती थी वह न तो आपके अपने ओर से होता था एवं न ही उसकी रचना में आप का कोई हाथ था, निम्नांकित प्रमाणों के द्वारा इसकी सच्चाई बिल्कुल स्पष्ट हो जाती हैः

---

[1] गोल्ड ज़ीहर का १८५० ईस्वी में हंगरी के एक यहूदी खानदान में जन्म हुआ, प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा (हंगरी की राजधानी) बुदापेस्ट में हुई, तत्पश्चात वह बर्लिन पहूँचा, फिर उसके बाद वह लिपेत्स्क यूनिवर्सिटी गया जहाँ उसने एक और बड़े मुस्तशरिक़ फ्लेचर की शिष्यता अपनाई और सन १८७० ईस्वी में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की, कुछ समय तक क़ाहिरा में रुका रहा फिर उसके बाद सीरिया तथा फ़लस्तीन की ओर प्रस्थान किया, उसने अरबी अध्ययन में सामान्य रूप से तथा इस्लामिक अध्ययन में विशेष रूप से दिलचस्पी ली। १८९४ में बुदापेस्ट में सामी (सॅमॅटिक) भाषा का प्रोफेसर नियुक्त हुआ तथा इस्तिशराक़ से संबंधित अपनी विशेष सिम्पोज़ियम तथा शोध जारी रखा यहाँ तक कि १९२१ ईस्वी में काल के गाल में समा गया। देखें: मौसूअतुल मुस्तशरिक़ीनः (१९७-२०३)।

[2] अल-अक़ीदा व अल-शरीआः ७।

1- वो क़ुरआन के समान कोई और चीज़ ले कर आने में असमर्थ रहे, हालांकि जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है कि उन्हें ऐसा करने के लिए चुनौती दी गई थी, यदि वह्य (प्रकाशना) मानवनिर्मित होती तो इसका सामना करना संभव होता क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी एक मानव थे, तो भला आप कोई ऐसा कार्य कैसे कर सकते हैं जिसको करने में कोई दूसरा मानव असमर्थ हो, आप उन्हीं मोअजज़ों एवं निशानियों पर प्रभुत्व रखते थे जो आप के रब ने आप को दिया था।

2- यदि यह क़ुरआन आपकी अपनी रचना होती तो अधिक उपयुक्त यह होता कि आप उसे अपनी रचना बताते हुए कहते कि यह एक महान पुस्तक है (जिसका श्रेय लेना गर्व की बात होती), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अनेक घटना क्रमों का सामना करना पड़ता, एवं वह्य की प्रतीक्षा में एक दिन, दो दिन तथा यदा-कदा पूरा महीना बीत जाता, जैसाकि इफ़्क नामक घटना में तथा यहूदियों के संग उस घटना में भी हुआ जिसमें यहूदियों ने आप से कह्फ़ (गुफा) वाले एवं रूह़ (प्राण) इत्यादि के संबंध में प्रश्न किया था।

3- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन को हर प्रकार के अंतर्विरोध एवं असमानताओं से पवित्र एवं दोषहीन बताया है, जब्कि वह विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं अनेक प्रकार के विषयों पर आधारित है इसके बावजूद उन विभिन्न विषयों के मध्य पूर्णरूपेण जोड़ एवं आत्मीयता का संबंध पाया जाता है, जो इस बात का प्रमाण है कि वह अल्लाह तआला की ओर से अवतरित किया गया है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلۡقُرۡءَانَۚ وَلَوۡ كَانَ مِنۡ عِندِ غَيۡرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُواْ فِيهِ ٱخۡتِلَٰفٗا كَثِيرٗا ٨٢﴾ (क्या ये लोग क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते, यदि यह अल्लाह तआला के सिवा अन्य की ओर से होता तो निःसंदेह इसमें अत्याधिक विरोधाभास पाया जाता)। सूरह निसाः ८२।

4- क़ुरआन का पाठ करने वाले को उकताहट नहीं होती, बारंबार दोहराने के बावजूद न तो वह पुराना हुआ है तथा न ही उसके चमत्कार पुरातन एवं प्राचीन हुए हैं बल्कि वो चिरकालिक हैं जोकि मानव रचित गद्यों में नहीं पाया जाता।[1]

5- हम क़ुरआन में देखते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इताब किया (सरज़निश, फटकारा) गया है, जैसाकि अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: ﴿عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ١ أَن جَآءَهُ ٱلۡأَعۡمَىٰ ٢﴾ ((नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया। इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया। सूरह अबसाः १-२।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿عَفَا ٱللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمۡ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ ٱلَّذِينَ صَدَقُواْ وَتَعۡلَمَ ٱلۡكَٰذِبِينَ ٤٣﴾ (अल्लाह तुझे माफ़ करे, तुमने उन्हें इसकी अनुमति क्यों दी? बिना इसके कि तेरे सामने सच्चे लोग खुल जाएं और तुम झूठे लोगों को भी जान लो)। सूरह तौबाः ४३।

---

[1] देखें: इज़्हारुलह़क़ (३/ ८१९-८२३)।

अल्लाह तआला का इर्शाद हैः ﴿وَإِذۡ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنۡعَمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ وَأَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِ أَمۡسِكۡ عَلَيۡكَ زَوۡجَكَ وَٱتَّقِ ٱللَّهَ وَتُخۡفِي فِي نَفۡسِكَ مَا ٱللَّهُ مُبۡدِيهِ وَتَخۡشَى ٱلنَّاسَ وَٱللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخۡشَىٰهُۖ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيۡدٞ مِّنۡهَا وَطَرٗا زَوَّجۡنَٰكَهَا لِكَيۡ لَا يَكُونَ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ حَرَجٞ فِيٓ أَزۡوَٰجِ أَدۡعِيَآئِهِمۡ إِذَا قَضَوۡاْ مِنۡهُنَّ وَطَرٗاۚ وَكَانَ أَمۡرُ ٱللَّهِ مَفۡعُولٗا ٣٧﴾ (तथा –हे नबी- आप वह समय याद करें जब आप उस से कह कह रहे थे उपकार किया अल्लाह ने जिस पर तथा आप ने उपकार किया जिस पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर करने वाल था, तथा आप डर रहे थे लोगों से, जब्कि अल्लाह अधिक योग्य था कि उससे डरते, तो जब ज़ैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से अपनी आवश्यकता तो हम ने विवाह कर दिया उसका आप से, ताकि ईमान वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुँह बोले (दत्तक) पुत्रों की पत्नियों के विषय में जब वह पूरी कर लें उनसे अपनी आवश्यकता, तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा)। सूरह अह़्ज़ाबः ३७।

इन आयतों (श्लोकों) से इस बात का खण्डन होता है कि क़ुरआन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा स्वरचित रचना है।[1]

6- किसी भी स़हीह़ यह ज़ईफ़ ह़दीस़ में यह नहीं आया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबूवत के लिए लालायित थे और न ही इस बात के अभिलाषी थे कि प्रतिक्षित नबी वही हों।

7- वह़्य से संबंधित स़हीह़ ह़दीस़ में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि पहली बार जब आप पर वह़्य (प्रकाशना) उतरी तो आप को अपनी जान जाने का डर सताने लगा, जो इस बात का प्रमाण है कि वह़्य आप पर सहसा व एकाएक आई थी तथा आप इस से अनभिज्ञ थे। आप ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए तो उन्होंने आप को सांत्वना दिया, तथा आप को को लेकर अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले कर आईं जो ईसाई धर्म[2] स्वीकार कर चुके थे, उन्होंने आपको विश्वास दिलाया कि यह वही

---

[1] देखें: मनाहिलुल इरफ़ान (१/ ८०)।

[2] आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं किः "वह़्य का प्रारंभ आपकी नींद में सच्चे सपनों से हुआ, आप जब भी कोई सपना देखते तो वह सुबह के उजाले के समान सही व सच्चा साबित होता, फिर आप एकांत प्रिय हो गये, कई-कई रातें आप ग़ार -ए- ह़िरा में एकांतवास में इबादत करते हुए बिता देते, जब तक घर आने का दिल नहीं करता अपना तोशा (पाथेय) लिए हुए वहीं रहते, तोशा समाप्त होने पर अपनी पत्नी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते तथा फिर तोशा ले कर वहीं चले जाते, यहाँ तक कि ग़ार -ए- ह़िरा में ही आपको सत्य का ज्ञान हुआ और आप पर प्रकाशना हुई, आपके पास फरिश्ता आया और कहाः पढ़िए, आपने कहाः मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं किः फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहाः पढ़िए, आपने कहाः मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं किः फिर फरिश्ते ने मुझे पुनः दोबारा पकड़ कर ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहाः पढ़िए, आपने कहाः मैं पढ़ना नहीं जानता, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं किः फिर फरिश्ते ने मुझे पकड़ कर तीसरी बार ख़ूब ज़ोर से भींचा यहाँ तक कि मुझे तक्लीफ़ होने लगी फिर मुझे छोड़ दिया और कहाः ﴿ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ مِنۡ عَلَقٍ ٢ ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ ٣﴾[العلق]، (अपने रब के नाम से पढ़िए जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को रक्त के लोथड़े से पैदा किया, आप पढ़ते रहिए आपका रब बड़ा करम वाला है), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह आयतें सुन कर

नामूस है जो ईसा अलैहिस्सलाम पर उतरा करता था तथा यह कामना की कि काश वह कम आयु के होते ताकि आपकी नबूवत व रिसालत वाले युग को पा सकते।

यह इस बात का प्रमाण है कि अहले –ए- किताब के पास मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत से संबंधित सूचनाएं एवं निशानियाँ पहले से मौजूद थीं, जैसे मक्का से आपका निकलना और यह कि आप मदीना कि ओर हिजरत (पलायन) करेंगे इत्यादि विस्तारित विवरण।

वह्य की प्रमाणिकता की एक दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान भी है: ﴿قُلۡ مَا يَكُونُ لِيٓ أَنۡ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلۡقَآيِ نَفۡسِيٓۖ إِنۡ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَيَّۖ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّي عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ﴾ (उनसे कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इसमें परिवर्तन कर दूँ, मैं तो बस उस प्रकाशना

घर लौटे और इस अनोखी घटना से आप काँप रहे थे, आप ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए तथा कहाः मुझे कम्बल ओढ़ा दो, मुझे कम्बल ओढ़ा दो, लोगों ने आप को कम्बल ओढ़ा दिया यहाँ तक कि जब आपका भय समाप्त हो गया तो आपने ख़दीजा से बात की और उन्हें इस घटना से अवगत कराया और कहाः मुझे अपनी जान का ख़तरा लग रहा है, तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ढाढ़स बंधाते हुए कहाः अल्लाह की क़सम, कदापि ऐसा नहीं होगा कि अल्लाह आपको अपमानित करे, आप सगे-संबंधियों से मेल-मिलाप रखते हैं, दुर्बलों का बोझ उठाते हैं, निर्धनों को कमा कर खिलाते हैं, आप अतिथि का सत्कार करते हैं, विपत्ति में फंसे हुए लोगों की सहायता करते हैं।
ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको लेकर वरक़ा बिन नौफल बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा जो ख़दीजा के चचेरे भाई थे के पास आईं, और वरक़ा ऐसे आदमी थे जिन्होंने जाहिलीयत (अंधकार) वाले युग में ईसाई धर्म अपना लिया था, और किताब को इबरानी भाषा में लिखा करते थे इस प्रकार से इंजील को इबरानी भाषा में जितना अल्लाह तौफ़ीक़ देता उतना नक़ल करने का काम किया करते थे, अत्याधिक बूढ़ा हो जाने के कारण वह अंधे हो गए थे, ख़दीजा ने उनसे कहाः हे मेरे चचेरे भाई, थोड़ा अपने भतीजे की बात सुन लीजीए, तो वरक़ा ने आपसे कहाः हे मेरे भतीजे तुम क्या देखते हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ देखा था समस्त वृत्तांत सुना दिया, तो वरक़ा ने आपसे कहाः यह वही नामूस (आदरणीय भेदी फरिश्ता) है जिसको अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था, हाय मैं उस समय जवान होता, काश मैं उस समय जीवित होता जब आपकी क़ौम आपको यहाँ से निकालेगी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आश्चर्य से पूछाः क्या वो मुझे सच में निकालेंगे? उसने कहाः हाँ, जिस चीज़ को ले कर आप आए हैं उसको लेकर जो भी नबी आए उनकी क़ौम ने उनसे दुश्मनी की, यदि मुझे आपका ज़माना मिल जाए तो मैं आपकी भरपूर सहायता करूँगा, फिर कुछ दिन के बाद वरक़ा की मृत्यु हो गई तथा वह्य का सिलसिला बंद हो गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं: मैं रास्ते में जा रहा था कि अचानक आकाश से एक आवाज़ सुनी, जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो वही फरिश्ता आकाश एवं धरती के बीच कुर्सी पर बैठा हुआ दृष्टिगोचर हुआ जो हिरा में आया था, मैं उससे डर गया, और लौट कर आया तथा कहाः मुझे कम्बल ओढ़ाओ, मुझे कम्बल ओढ़ाओ, तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡمُدَّثِّرُ ۝١﴾ ﴿قُمۡ فَأَنذِرۡ ۝٢﴾ ﴿وَرَبَّكَ فَكَبِّرۡ ۝٣﴾ ﴿وَثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ۝٤﴾ ﴿وَٱلرُّجۡزَ فَٱهۡجُرۡ ۝٥﴾ (हे चादर ओढ़ने वाले। खड़े हो जा और सावधान कर। तथा अपने रब व पालनहार की महिमा का वर्णन कर। एवं अपने कपड़ों को पवित्र रखो। तथा मलीनता को त्याग दे)। (अल-मुद्दस्सिरः १-५) इसके बाद वह्य का सिलसिला आगे बढ़ा और निर्बाध वह्य उतरने लगी"। बुख़ारी ने इसे किताब बद्इल वह्य में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊपर वह्य का आरंभ कैसे हुआ के अंतर्गत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है (१/ ५०४) (६९८२)।

का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है, मैं यदि अपने रब (पालनहार) की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ)। सूरह यूनुसः १५ ।

इस आयत से कई चीज़ें प्रमाणित होती हैं:

पहली: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में सर्वविदित है कि आप उम्मी थे अर्थात पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, मुश्रिकीन भी इस बात से भलि भांति परिचित थे, तो क्या कोई बिना पढ़ा लिखा व्यक्ति इस प्रकार की मोअजज़ाना (चमत्कारी) पुस्तक पेश कर सकता है।

दूसरी: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब स्वयं के नबी होने का दावा किया तो आपकी आयु चालीस वर्ष हो चुकी थी, आप उस समय सादिक़ व अमीन (सत्यवादी व अमानतदार) के नाम से विख्यात थे, क्या इतने लम्बे समय तक आपकी स्थितियां लोगों से छिपी रह सकती थी कि अकस्मात आप झूठी नबूवत का दावा करने लगें?

तीसरी: वह किताब जिसे ले कर आप अवतरित हुए वह पिछली समुदाय के अतीत तथा भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित है, अब इन सब चीज़ों का ज्ञान मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कैसे हो सकता है?! जब्कि आपका लालन-पालन मक्का के अंदर मूर्तिपूजन करने वाले एक ऐसे समुदाय के अंदर हुई जो पढ़ने लिखने से बिल्कुल कोरा व अनभिज्ञ था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न तो शिक्षा-दीक्षा का मौका मिला तथा न ही आप के पास प्राचीन ग्रंथों की कोई जानकारी थी, यह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सत्यता एवं सच्चाई का प्रमाण है।

चौथी: अल्लाह तआला का यह फ़रमानः "क्या तुम बुद्धि नहीं रखते?"।

इस आयत से यह प्रमाणित होता है किः उन मुश्रिकीन के समक्ष यह बिल्कुल स्पष्ट था कि यह महान किताब एक ऐसा उम्मी (बिना पढ़ा लिखा आदमी) ले कर आया है जिसने इससे पहले न तो कभी किसी किताब का अध्ययन किया तथा न ही किसी शिक्षक के सानिध्य में रहा एवं न ही आपने इसके पूर्व ऐसा दावा किया था, बल्कि वह इससे भलि-भांति परिचित थे एवं उन्हें यह भी भान था कि वह क़ुरआन के समान कोई पुस्तक लाने में असमर्थ हैं, जिससे स्पष्ट रूप से यह समझ में आता है कि क़ुरआन अल्लाह तआला के द्वारा उतारा हुआ है, इस के बावजूद उन्होंने इस का इंकार किया जो उनके मूर्ख एवं निर्बुद्धि होने का प्रमाण है।[1]

पाँचवीं: अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾﴾ (उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाए, अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते)। सूरह यूनुसः १७ ।

इस आयत से प्रमाणित होता है किः क़ुरआन यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा स्वरचित होता तो इस संसार में आप से बड़ा अत्याचारी कोई नहीं होता (यदि ऐसा हुआ होता तो, क्योंकि)

---

[1] देखें: अल-फ़ख़्र अल-राज़ी की तफ़्सीर (१७/ ६१)।

आप ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया होता, जब्कि सभी प्रमाण इसके विरुद्ध हैं, जो इस बात की दलील है कि मुश्रिकीन सबसे बड़े अत्याचारी हैं जिन्होंने अल्लाह तआला पर झूठ बांधा, अल्लाह की किताब को ठुकरा दिया एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झूठा कहा।[1]

वास्तविकता तो यह है कि न्यायप्रिय मुश्रिकीन (बहुदेववादी) भी इसकी गवाही देते हैं कि यह वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) अल्लाह के सिवा किसी अन्य की तरफ से नहीं हो सकती। मोरस बोकाय कहते हैं किः "ईसाइयत एवं इस्लाम दोनों की पवित्र पुस्तकों के बीच बुनियादी अंतर पाया जाता है, कहने का तात्पर्य यह है कि ईसाई धर्म में वह्य (प्रकाशना) के प्रमाणित नुसूस़ (ग्रंथ, श्लोक) नहीं पाए जाते हैं जब्कि इस्लाम के पास ऐसा क़ुरआन है जो अल्लाह की ओर की गई वह्य है तथा अपनी असली हालत में मौजूद है जिसे अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जिब्रील के माध्यम से अवतरित किया और आप ने उसे अवतरित होते ही लिखवा लिया, ईमान वाले इसे कंठस्थ करते रहते तथा दोहराते रहते हैं"।[2]

ये मुश्रिकीन (अनेकेश्वरवादी) क़ुरआन को तीक्ष्ण, कुशाग्र बुद्धिमत्ता एवं समाज सुधारक जैसी विशेषताओं से अलंकृत तो करते हैं किंतु इसके साथ-साथ वह यह भी कहते हैं किः क़ुरआन के जिन ज्ञान, विज्ञान तथा पूर्ण कानून व विधान का आप उल्लेख करते हैं वो इस योग्य नहीं हैं कि उसमें किसी प्रकार का कोई ऐजाज़ (चमत्कार) हो, चुनाँचे यूनानी दार्शनिक सोलोन[3] ने अकेले ही ऐसा पर्याप्त कानून स्थापित किया जो प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय माना गया, किंतु किसी ने यह नहीं कहा कि इसने चमत्कार (मोअजज़ा) कर दिखाया और न ही यह कहा गया कि इस कानून साज़ी के द्वारा वह नबी बन गया।[4]

जब हम पूर्व-इस्लामिक (जाहिलीय्यत वाले) समाज का अध्ययन करते हैं, तो हमें पता चलता है कि इसे समाज सुधारकों की अति आवश्यकता थी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चालीस वर्ष तक कहाँ थे? जब्कि आप उसी समाज में रह रहे थे, किसी ने भी इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि अल्लाह तआला की ओर से वह्य आने के पूर्व आपने कभी कोई सिद्धांत, नियम अथवा संविधान बनाने का प्रयास किया हो।[5]

---

[1] देखें: अल-फ़ख़्र अल-राज़ी की तफ़्सीर (१७/ ६१)।

[2] दिरासतुल कुतुब अल-मुक़द्दसा फ़ी ज़ौ –ए- मआरिफ़ अल-ह़दीसी़य्या (१०-११)।

[3] ७०० ईसा पूर्व का एक यूनानी दार्शनिक है, उनकी माता जी एथेंस (Ancient Athens) के अंतिम शासक पीसिस्ट्राटोस (Peisistratos) के वंश से थी, वह एक अमीर एवं योद्धा आदमी था, उसने अपने देश में प्रशासनिक, सैन्य कार्य तथा सेना का नेतृत्व करने जैसे कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किए, ५९४ ईसा पूर्व सभी पार्टियों द्वारा एकमत हो कर उसे पूरे समुदाय का सरदार चुना गया, एवं उसे उसके पूर्व ड्रेको (Draco) ने देश का जो संविधान बनाया था उसे बदलने एवं देश के संविधान को अपने मन अनुसार बदलने का पूरा अधिकार दे दिया, फलस्वरूप उसने एक नया संविधान लागू किया जिसे हुकूमत तथा अवाम ने दस वर्ष तक संविधान एवं सिद्धांत के रूप में अपनाया। अधिक जानकारी के लिए देखें: मुहम्मद रशीद रज़ा की पुस्तक "अल-वह्य अल-मुहम्मदी" (१२८) एवं "अल-मनार" पत्रिका खण्डः ७, म. ३२, पृष्ठः ४२९।

[4] मनाहिलुल इरफ़ान (२/ ३२९)।

[5] मनाहिलुल इरफ़ान (६/ ४२८-४२९)।

तीसरी भ्रांतिः प्रीचीन धर्मों के नियम एवं संविधान के मिश्रण से एक नया धर्म बना लेना।

बहुत सारे मुस्तश्रिक़ीन[1] का यह दावा है कि इस इलाही वह्य (दैवीय प्रकाशना) को वास्तव में हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियत, ईसाईयत, मजूसियत[2] एवं वसनियत (मूर्तिपूजन वाला धर्म) जैसे प्राचीन धर्मों से लिया है, इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित प्रमाण पेश किए हैं:

1- इस्लाम एवं दूसरे धर्मों के मध्य कुछ मामलों में समानता।

2- यहूदियत एवं ईसाईयत जैसे धर्म अरब द्वीप में पहले से मौजूद थे।

3- वरक़ा बिन नौफ़ल[3] तथा बुहैरा राहिब जैसे ईसाईयों से आपके निजी संबंध थे।[4]

गोल्ड ज़ीहर कहता है किः "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्राचीन सभ्यताओं से लाभ उठाया, ऐसा आपने अधिकतर नबियों के किस्सों के द्वारा किया, ताकि चेतावनी एवं उदाहरण के अंदाज़ में उन प्राचीन समुदायों के अंजाम से डराएं जिन्होंने उनकी हिदायत व मार्गदर्शन के लिए भेजे गए अल्लाह तआला के रसूलों का उपहास किया"।[5]

उसका यह भी कहना है किः "भूतकाल में इसको स्वीकार किया जाता रहा है कि प्रार्थना स्थल, गिरजा तथा मस्जिद वास्तव में इबादत करने के स्थान हैं, परंतु इसके बाद स्थिति में बदलाव आया, यहूदियों के उलेमा (रब्बि) एवं ईसाईयों के राहिबों (पादरियों) पर कीचड़ उछाला जाने लगा जब्कि वह अपने धर्म के उपदेशक, शिक्षक एवं मार्गदर्शक थे"।[6]

---

[1] Orientalist, पश्चिमी देशों के उस व्यक्ति को कहा जाता है जो पूर्वी एशिया के देशों, विशेषतः इस्लाम धर्म की भाषा, संस्कृति, इतिहास या रीति-रिवाजों का अध्ययन करता है।

[2] मजूसियतः इसे "सबसे बड़ा धर्म" एवं "महान समुदाय" कहा जाता है, और वे लोग दो मूल सिद्ध करते हैं: प्रकाश जोकि शाश्वत है, और अंधेरा जो बाद में आया है, और फिर इन दोनों के प्रकार हैं: अच्छे और बुरे, लाभ और हानि तथा सुधार एवं फ़साद (उपद्रव), अंधेरा का क्या कारण है इसके बारे में उनके बीच बड़ा मतभेद है, उनका कहना है कि मानव का उद्गम क्योमर्स (अर्थात आदम) है, तथा दूसरे नबी ज़रदुश्त हैं, इसके अनेक पंथ हैं, जैसेः क्योमर्सिया (Keyumars), ज़रवानिया तथा ज़रदुश्तिया (जरथुश्त , पारसी धर्म, Zoroastrianism)। देखें: शहरिस्तानी की पुस्तकः अल-मिलल व अल-निह़ल (१/ २३३ तथा इसके बाद) तथा ऐतक़ादात फिरक़ अल-मुस्लिमीन व अल-मुश्रिकीन (१३४ तथा इसके बाद)।

[3] वरक़ा पुत्र नौफ़ल पुत्र असद पुत्र अब्दुल उज़्ज़ा, क़ुरैश कबीला से संबंध रखते थे, जाहिलीय्यत वाले युग में भी अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे, इस्लाम आने के पूर्व ही उन्होंने मूर्तिपूजन छोड़ दिया था तथा मूर्तियों को चढ़ावा को रूप में चढ़ाई गई चीज़ों को खाना छोड़ कर उन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था, उन्होंने अनेक धर्मों का अध्ययन किया था, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्मपत्नी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हु के चचेरे भाई थे, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्दीक व पुष्टि की, तथा आप पर ईमान लाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमायाः "क़यामत के दिन वह इस प्रकार से उठाए जाएंगे कि अकेले एक उम्मत (समुदाय) के समकक्ष होंगे"। अधिक जानकारी के लिए देखें: अल-इस़ाबा (६/ ३१७-३१८) तथा अल-आलाम (८/ ११४-११५)।

[4] देखें: डाक्टर उमर रिज़वान की पुस्तकः आरा अल-मुसतश्रिक़ीन ह़ौलल क़ुरआन व तफ़्सीरिही (१/ १००, १०४, ११३, १२६-१२७, १३८)।

[5] देखें: अल-अक़ीदा व अल-शरीआ (९)।

[6] अल-अक़ीद व अल-शरीआ (१३-१४, १८)।

जाहिलीय्यत के मूर्तिपूजन वाले धर्म की बातें लेने के संबंध में गोल्ड ज़ीहर कहता है: "जहाँ तक बात है ह़ज के उन शआइर (अनुष्ठानों, प्रावधानों) की जिनका आपने आयोजन किया या यों कहना अधिक उचित होगा कि आपने अरब मूर्तिपूजन वाले रस्मो रिवाज के मध्य जिन (शआइर) की आपने सुरक्षा की"।[1]

इन भ्रांतियों के फैलाने के पीछे उनका उद्देश्य किया है?

पहला: वो यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि इस्लाम कोई एक अलग व स्वतंत्र धर्म नहीं है, बल्कि वह यहूदियत व ईसाईयत का मिश्रण है, तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नैसर्गिक रूप से इस्लाम के द्वारा मार्गदर्शन नहीं मिला था, जो भी मुस्तश्रिक़ इस्लाम के विषय में बात करता है वह इस बिंदु का उल्लेख अवश्य करता है।[2]

इस भ्रांति का खण्डन:

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में इर्शाद फ़रमाया है कि क़ुरआन का उद्गम स्थल वास्तविक रब व पालनहार की ओर से है जो सर्वश्रेष्ठ, सबसे महान तथा सम्माननीय है एवं उसने अपने ज्ञान के अनुसार क़ुरआन को उतारा है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ ٱلنَّاسَ ۝٢﴾ (क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक व्यक्ति के पास वह़्य भेज दी कि सब लोगों को डराईए)। सूरह यूनुस: २।

अल्लाह तआला ने वह़्य (प्रकाशना) की निस्बत अपनी ओर की है:

﴿وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَآءَنَا ٱئْتِ بِقُرْءَانٍ غَيْرِ هَٰذَآ أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِىٓ أَنْ أُبَدِّلَهُۥ مِن تِلْقَآئِ نَفْسِىٓ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّى عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝١٥﴾ (और जब उनके समक्ष हमारी आयतों का पाठ किया जाता है जो बिल्कुल साफ-साफ (स्पष्ट) हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है यों कहते हैं कि इसके सिवा दूसरा क़ुरआन लाईए

---

[1] अल-अक़ीद व अल-शरीआ (२३), बड़ी विडंबना है कि कुछ मुस्लिम इन मुस्तश्रिक़ीन के बारे में अच्छा गुमान रखते हैं, उदाहरणस्वरूप इसी लेखक को ले लीजिए, इसकी पुस्तकों का अनुवाद करने वाले इसकी बड़ी प्रशंसा करते हुए दिखाई देते हैं तथा इसे "अल्लामा" जैसी उपाधि व पदवी देते हैं, जिसका एक उदाहरण उसका यह कथन है: "निस्संदेह उन्होंने अपने पीछे जो विरासत छोड़ी है उसके कारण एवं विशेषकर अपनी इन दो पुस्तकों के कारण मेरी राय में वह अव्वल दर्जे के मुस्तश्रिक़ तथा उन महान लोगों में से हैं जिन्होंने इस्लाम, उसके सिद्धांतों एवं उसकी बातों का बड़ी गहराई से व्यापक अध्ययन और अनुसंधान किया, इसी कारणवश वह उन महान मुस्तश्रिक़ीन में गिने जाते हैं जिन्होंने यथासंभव इस्लाम, इसकी मूल भावना तथा इसके रिती-रिवाजों एवं उसकी शिक्षाओं को समझा"।
मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है कि उसने इस्लाम का ऐसा कौन सा गूढ़ ज्ञान अर्जित कर लिया था जिसके आधार पर वह़्य तथा क़ुरआन का इंकार करने के साथ-साथ वह यह दावा कर बैठा कि इस्लमा यहूदियत तथा ईसाईयत के मिश्रण से बना धर्म है ...!! उसका यही एक दृष्टिकोण इस्लाम की मूल भावना के विरुद्ध तथा उसकी नीवं हिलाने के लिए पर्याप्त है, इसके अतिरिक्त उसकी वो भ्रांतियां तथा झूठ को छोड़ ही दीजिए जिनसे उसकी पुस्तक भरी पड़ी है।

[2] देखें: डाक्टर अब्दुल वह़ीद शिब्ली की पुस्तक: अल-वह़्य अल-मुहम्मदी (१९९)।

या इसमें फेर-बदल कर दीजिए, आप कह दीजिए कि मुझे इसकी अनुमति नहीं कि मैं अपनी ओर से इसमें फेर-बदल कर दूँ, मैं तो केवल उसी का अनुसरण करूँगा जो मेरे पास वह्य के द्वारा पहूँचा है, मैं यदि अपने रब (पालनहार) की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ)।

सूरह यूनुसः १५।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَمَا كَانَ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانُ أَن يُفْتَرَىٰ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ ٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ ٱلْكِتَٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٣٧﴾ أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا۟ بِسُورَةٍ مِّثْلِهِۦ وَٱدْعُوا۟ مَنِ ٱسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٣٨﴾﴾ (और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह (की वह्य) के बिना (अपने से ही) झूठ-मूठ बना डाले, बल्कि ये तो (उन किताबों) की पुष्टि करने वाला है जो उसके पूर्व में अवतरित हो चुकी हैं, और किताब (आवश्यक आदेशों) को विस्तार से बयान करने वाला है, निःसंदेह यह सारे संसार के रब (पालनहार) की ओर से है। क्या ये लोग कहते हैं कि आपने इसे स्वयं ही झूठ-मूठ बना लिया है, तो फिर आप कह दीजिए कि तुम इस के समान एक सूरत ही लाकर दिखला दो, और अल्लाह के सिवा जिनको तुम बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सच्चे हो)। सूरह यूनुसः ३७-३८।

इस भ्रांती का खण्डन करने के पूर्व एक बात स्पष्ट कर दूँ कि इस भ्रांति का खण्डन दो बुनियादों पर आधारित हैः

1- इस बात का खण्डन कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले किताब की पुस्तकों से कुछ भी लिया।

2- इस को प्रमाणित करने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा लाई गई शरीअत (धर्म-विधान) तथा अहले किताब का अपनी धार्मिक पुस्तकों में हेर-फेर व अपनी ओर से मिलाए गए झूठ का तुलनात्मक अध्ययन।

जहाँ तक अहले किताब के उलेमा से भेंट करने एवं बार-बार शाम (सीरिया) की यात्रा की बात है तो सीरत (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी आधारित पुस्तकों) से यह प्रमाणित है कि आपने केवल दो बार ही शाम की यात्रा की, पहली बार बाल्यकाल में अपने चाचा अबू तालिब के साथ जैसा कि तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह आदि ने अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है किः

अबू तालिब शाम (वर्तमान सीरिया) की ओर (व्यापार के लिए) निकले, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी क़ुरैश के बड़े लोगों के संग निकले, जब ये लोग बुहैरा राहिब के पास पहूँचे तो वहीं पड़ाव डाल दिया और अपनी सवारियों के कजावा (हौदा) को खोल दिया, तो बुहैरा अपने गिरजाघर से निकल कर उनके पास आया हालाँकि इससे पहले भी वो लोग उसके पास से गुजरते थे किंतु वह कभी उनकी ओर ध्यान नहीं देता था और न ही उनके समीप आता था, (रावी अर्थात वाचक कहत हैं कि) ये लोग अभी अपनी सवारी खोल ही रहे थे कि राहिब (पादरी) उनके बीच से घुसते हुए आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लिया और बोलाः यह समस्त संसार के सरदार हैं, यह समस्त संसार के

रब व पालनहार के रसूल (दूत) हैं, अल्लाह तआला उन्हें सारे संसार के लिए रहमत (दया, कृपा) बना कर भेजेगा, तो उससे क़ुरैश के बुढ़े लोगों ने पूछाः तुम्हें यह कैसे पता चला? राहिब अर्थात पादरी ने कहाः जिस समय आप लोग घाटी से निकले तो कोई पेड़ और पत्थर ऐसा बाक़ी न था जिसने इनको सज्दा (साष्टांग प्रणाम) न किया हो, और पेड़ और पत्थर सिर्फ़ नबी को ही सज्दा कर सकते हैं। इसके अलावा मैं इन्हें नुबुव्वत की मोहर से भी पहचानता हूँ जो सेब की तरह आपकी पीठ पर दोनों कन्धो के बीच है। राहिब यह कहकर वापस हो गया और सिर्फ़ आपकी वजह से तमाम क़ाफ़िले के लिये खाना तैयार कराया।

खाने के लिये सब पहुँचे मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न गये, क्योंकि आप ऊँट चराने गये हुए थे। उसने आदमी भेजकर आपको बुलवाया।

जिस वक़्त आप तशरीफ़ ला रहे थे तो देखा कि एक बादल आप पर साया किये हुए है, जब आप आ रहे थे तो आपके आने से पहले लोग वृक्ष के साये मे जगह ले चुके थे, कोई जगह छाया की बाक़ी न थी, आप एक किनारे पर बैठ गये, आपके बैठते ही दरख़्त का साया आपकी तरफ़ झुक गया। राहिब ने कहाः दरख़्त के साये को देखो किस प्रकार से आपकी और झुका हुआ है, और खड़े होकर लोगों को क़सम देने लगा और कहा कि आप लोग इनको रोम की तरफ़ न ले जायें, रोमी इनको देख लेंगे तो इनकी सिफ़ात और निशानियों को देखकर इनको पहचान लेंगे और मार डालेंगे।

बातचीत के दरमियान अचानक राहिब ने देखा कि रोम के सात आदमी किसी की तलाश मे इस तरफ़ आ रहे हैं। राहिब ने उन सात आदमियों से पूछा कि तुम किसे तलाश रहे हो? रोमियो ने कहा हम उस नबी की तलाश मे निकले हैं जिसकी तौरात व इन्जील मे ख़बर दी गई है। वह इस महीने में सफ़र के लिये निकलने वाला है। हमने हर तरफ़ अपने आदमी भेज रखे हैं। और जब हमें तुम्हारे इस मार्ग के बारे में सूचना मिली तो हम तुम्हारे इस मार्ग की ओर भेज दिए गए। तो उस राहबि ने पूछाः क्या तुम्हारे पीछे कोई और भी है जो तुमसे श्रेष्ठ हो? उन लोगों ने कहाः हमें तो तुम्हारे इस मार्ग के बारे में पता चला तो हम इस मार्ग पर चल निकले। राहिब ने कहा किः अच्छा तो यह बताओ कि जिस बात का अल्लाह तआला ने इरादा कर लिया है भला उसको कोई रोक सकता है?

रोमियों ने कहाः नहीं। उसन कहाः फिर तुम उससे बैअत (अनुसरण करने का वादा) करो तथा उसके संग रहो। इसके पश्चात वह अरब वासियों से पूछने लगा किः मैं तुम लोगों को अल्लाह का वास्ता दे कर पूछता हूँ कि तुम में से इसका वली (अभिभावक) कौन है? लोगों ने कहाः अबू तालिब, तो वह उन्हें लगातार क़सम दिलाता रहा यहाँ तक कि अबू तालिब ने उन्हें वापस मक्का भेज दिया, और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपके संग बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को भी भेज दिया और लौटते समय राहिब ने आपको केक और ज़ैतून उपहारस्वरूप दिया।[1]

---

[1] इस ह़दीस़ को इमाम तिर्मिज़ी ने किताबुल मनाक़िब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत का आरंभ कैसे हुआ, इस पाठ के अंतर्गत उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्याः ३६२४ (९/ २४३/ २४४)। वह कहते हैं किः यह ह़दीस़ ह़सन ग़रीब है, हम इसे केवल इसी सनद से जानते हैं। इब्ने जरीर ने भी लगभग इसी तरह विभिन्न तरीकों से इसे अपनी पुस्तक "अल-तारीख़" (२/ ३६३-३६६) में रिवायत किया है, इब्ने इस्ह़ाक़ ने "अल-सीरत" (१/ २३६) तथा ह़ाकिम ने

इस यात्रा के समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु नौ वर्ष थी जैसाकि इब्ने जरीर ने रिवायत किया है, एक कथन यह भी है किः उस समय आप बारह वर्ष के थे।

जहाँ तक आप की दूसरी यात्रा का प्रश्न है तो इब्ने जरीर आदि ने अपनी सनद से रिवायत किया है किः

"ख़दीजा पुत्री ख़ुवैलिद पुत्र असद पुत्र अब्दुल उज़्ज़ा पुत्र क़ुसैय एक सम्मानित, धनवान तथा व्यापारी महिला थीं, लोगों को अपना धन व्यापार करने के लिए देती थीं, तथा मुज़ारबत[1] के उसूल पर एक हिस्सा तय कर लेती थीं, क़ुरैश का पूरा क़बीला ही व्यापार से जुड़ा हुआ था, जब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई, सत्यवादिता, और अमानतदार तथा सदाचारी होने की सूचना मिली तो उन्होंने एक संदेश के द्वारा यह पेशकश की कि आप उनका धन ले कर व्यापार के लिए उनके दास मैसरा को साथ ले कर शाम (वर्तमान सीरिया) जाएं, अन्य व्यापारियों को वह जो पारिश्रमिक देती हैं उससे अधिक पारिश्रमिक आप को देंगी, आपने इस पेशकश को स्वीकार कर लिया तथा उनका धन ले कर उनके दास मैसरा के संग शाम गए, जब आपने शाम (सीरिया) की सरहद में प्रवेश किया और (एक दिन) एक वृक्ष की छाया में एक राहिब (पादरी) की गिरजाघर के निकट विश्राम कर रहे थे कि उस राहबि ने मैसरा से पूछाः यह कौन व्यक्ति हैं? मैसरा ने कहाः यह क़ुरैश नामक क़बीला के एक व्यक्ति हैं तथा ह़रम (मक्का) वासियों में से एक हैं। राहिब ने कहाः इस वृक्ष के नीचे पैग़म्बर (दूत) के सिवा कोई नहीं बैठता। आप व्यापार के लिए मक्का से जो सामान लाए थे उसको बेच कर जिस प्रकार का सामान ख़रीदना था उसको ख़रीद कर मक्का वापस आ गए। (कहते हैं कि) मैसरा ने इस यात्रा में देखा कि जिस समय धूप तेज़ होती थी तो दो फरिश्ते आप पर अपने परों से छाया कर देते थे। जब आप मक्का पधारे तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के समक्ष ख़रीदा हुआ सामान पेश किया जिसे ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब यहाँ बेचा तो दो गुणा या उससे भी अधिक लाभ हुआ, मैसरा ने राहिब वाली बात तथा फरिश्तों के द्वारा छाया करने वाला वृत्तांत भी उन्हें सुना दिया। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा चूँकि एक बुद्धिमान, सम्मानित, शरीफ़, पवित्र तथा नेक महिला थीं इसलिए इन बातों को सुन कर उन के मन में यह इच्छा जाग्रत हुई कि मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे विवाह कर लें। (कहते हैं कि) उन्होंने इस प्रकार से अपने विवाह का संदेश भेजाः हे मेरे चचेरे भाई, आप मेरे रिश्तेदार हैं तथा अमानतदारी, सत्यवादिता एवं

"मुस्तदरक" (२/ ६७२) में रिवायत किया है और कहा है किः "इस ह़दीस़ की सनद सही है, यद्यपि बुख़ारी तथा मुस्लिम ने इसे रिवायत नहीं किया है"। इस ह़दीस़ को बैहिक़ी ने "अल-दलाइल" (२/ २४-२९) में एवं इब्ने सय्यिदुन्नास ने उयूनुल अस़र (१/ १०५-१०८) में रिवायत किया है। ह़ाफ़िज़ इब्न ह़जर ने अल-इस़ाबा में लिखा है किः "इस ह़दीस़ के रावी स़िक़ा अर्थात सच्चे व तीक्षण स्मरण शक्ति रखने वाले लोग हैं, इसमें एक शब्द को छोड़ कर कुछ भी मुंकर (अस्वीकार योग्य) नहीं है, और संभव है कि यह शब्द भी किसी रावी (वाचक) के वहम (भूल) के कारण दूसरी ह़दीस़ से इस ह़दीस़ में मुदरज (दाख़िल) हो गया है"। इब्ने सय्यिदुन्नास कहते हैं किः "इस सनद में जो भी रावी हैं सभी स़हीह़ (बुख़ारी) में मौजूद हैं ..."। उयूनुल अस़र (१/ १०८)।

[1] किसी को व्यवसाय के लिए इस शर्त पर माल देना कि लाभ में साझा रहेगा।

अच्छे शिष्टाचार जैसे गुणों से विशेषित हैं, अतः मेरे मन में आप (से विवाह करने) की चाहत जाग्रत हुई है, तत्पश्चात उन्होंने स्वयं को आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया"।[1]

इन रिवायतों व ह़दीसों के आधार पर यह बात प्रमाणित हो जाती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले किताब से किसी प्रकार की कोई शिक्षा नहीं ली थी, इसके प्रमाण निम्नांकित हैं :

1- जब पहली बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चाचा के संग यात्रा किया था तो आप बहुत छोटे थे एवं अहले किताब की कोई भी बात नहीं समझ सकते थे, दूसरी बार आप व्यापार में व्यस्त थे, दोनों ही यात्राओं में आपके संग गवाह मौजूद थे, पहली यात्रा में आपके चाचा तो दूसरी यात्रा में ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का दास मैसरा, यदि ऐसी कोई बात हुई होती तो उस घटना का उल्लेख यह दोनों अवश्य करते तथा यह बात प्रसिद्ध हो गई होती, एक बात यह भी है कि क़ाफ़िला में चलने पर हर समय आपके साथियों की बड़ी संख्या आप के संग होती है जो एक-दूजे की परिस्थिति से भलि-भांति परिचित होते हैं, यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे अलग हो कर अहले किताब के पास शिक्षा अर्जित करने गए होते तो इसका शोर मच जाता तथा यह बात फैल जाती।

2- बुहैरी राहिब (पादरी) ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की शुभ-सूचना दी थी, यदि आपने उनसे कुछ अर्जित किया होता तो वह आप के नबी होने की बात न करते अपितु (यदि इसे सही मान लिया जाए तो) वह राहिब स्वयं नबी व रसूल होने के अधिक पात्र माने जाते।

3- आम तौर पर ऐसा होता नहीं है किसी ज्ञानी के पास जाए बिना, तथा उनसे बिना कुछ सीखे, और इसके साथ-साथ ज्ञान अर्जित करने पर जो कठिनाई होती है उस पर सब्र व धैर्य के बिना ही किसी व्यक्ति ने किसी कला में महारत व निपुणता प्राप्त कर ली हो, जब्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में सर्वविदित है कि न तो किसी पादरी या यहूदी आलिम (रब्बि) के पास आप का आना जाना था और न ही आपने उनसे कुछ सीखा था, बल्कि आप उम्मी थे अर्थात पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, जो इस बात की निर्णायक व अकाट्य दलील है कि आपने जो भी ज्ञान अर्जित किया था तथा जो वह्य ले कर आप आए थे वह निश्चित रूप से अल्लाह की ओर से ही थी।

4- वरक़ा बिन नौफ़ल की ह़दीस़ स़हीह़ बुख़ारी[2] में है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की स्पष्ट दलील है, क्योंकि उन्होंने आपकी नबूवत की गवाही दी तथा (भविष्यवाणी करते हुए) यह भी कहा किः आपकी क़ौम आपको निकाल देगी और ऐसा ही हुआ, इसमें आपके सच्चे नबी होने का प्रमाण है, बल्कि उनके इस कथन पर विचार करें : "यदि मुझे आपकी नबूवत का युग मिला तो मैं पूर्णरूपेण आपकी सहायता करूँगा", तो आपको समझ आ जाएगा कि इसके अंदर वह मुहम्मद

---

[1] तारीख़ुल उमम वलमुलूक (२/ ३६७-३६८)। इसे इब्ने इस्ह़ाक़ ने अल-सीरत में भी रिवायत किया है। अधिक जानकारी के लिए देखें: सीरत इब्ने हिशाम (२/ २४४-२४५), इसे बैहिक़ी ने अल-दलाइल (२/ ६५-६७) में तथा इब्ने सय्यिदुन्नास ने उयूनुल अस़र (१/ ११५-१२०) में रिवायत किया है।

[2] इस ह़दीस़ का उल्लेख इमाम बुख़ारी ने किताब बद्इल वह्य में, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह्य का आग़ाज़ कैसे हुआ, पाठ के अंतर्गत किया है, ह़दीस़ संख्याः १३ (१/ ५०४)।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण करने तथा उनकी सहायता करने का ऐलान कर रहे हैं, और कारण इसका यही है कि वह आपकी नबूवत की सच्चाई को जानते थे।

5- दलीलों से प्रमाणित होता है कि वह्य आने के पूर्व तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा वरक़ा बिन नौफ़ल के बीच कोई संबंध नहीं था, और न ही आपके मन मस्तिष्क में यह बात आई थी कि उनके पास जा कर अपने बारे में सूचना दें, बल्कि यह ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की राय थी क्योंकि वही अपने चचेरे भाई को जानती थीं तथा उन्हें यह पता था वह (वरक़ा) प्राचीन ग्रंथो के ज्ञाता हैं।

6- ह़दीस़ में आया है किः कुछ ही दिनों के पश्चात वरक़ा बिन नौफ़ल की मृत्यु हो गई तथा वह्य का सिलसिला भी थम गया, यह ह़दीस़ इस बात की दलील है कि वह्य (प्रकाशना, आकाशवाणी) के प्रारंभ होते ही कुछ ही दिनों के बाद वरक़ा का इंतेक़ाल हो गया, ऐसे में यह दावत (-ए- इस्लामी) पंद्रह शताब्दियों तक कैसे सुचारु रूप से चलती रही तथा सकारात्मक नतीजा पेश करती रही।

7- वरक़ा बिन नौफ़ल के बारे में यह विदित नहीं है कि वह ईसाई धर्म के प्रचारक थे, बल्कि उनके विषय में जो बात प्रचलित है वह यह कि वह सही व सत्य धर्म की खोज में थे ताकि उसके बताए मार्ग के अनुसार अपने रब व पालनहार की पूजा कर सकें, इसी कारणवश उन्होंने ईसाई धर्म अपनाया था।

8- हम भलि-भांति जानते हैं कि अहले किताब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किस प्रकार की कट्टर दुश्मनी रखते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने के जो प्रमाण उनकी पुस्तकों में मौजूद हैं उनको छिपाते हैं तथा आपकी नबूवत को गलत, संदेहास्पद तथा संदिग्ध साबित करने के लिए हर जतन करते हैं, यदि उन्हें इस तरह की किसी बात की जानकारी होती तो वह इसे अवश्य उछालते तथा आपके व्यक्तित्व को मलीन करने का प्रयास करते।

9- ऐसा कुछ हुआ ही नहीं (यह कोरी बकवास है), यदि ऐसा कुछ हुआ होता तो हम तक यह बात अवश्य पहूँचती, जब ऐसी कोई बात हम तक आई ही नहीं है तो फिर इस प्रकार का दावा करना निराधार है, क्योंकि दावा दलील के आधार पर किया जाता है और इसकी कोई दलील ही नहीं है अपितु दलील इसके विरुद्ध हैं।

10- मक्का में रहने वाले अरबों की जीवन शैली पर ग़ौर करने से पता चलता है कि वह एक छोटा सा समाज था जिसके अंदर किसी की कोई बात दूसरे से छिपी नहीं रहती थी, बल्कि मस्जिद -ए- ह़राम में थोड़े-थोड़े समय पर उनका आयोजन होता रहता था, (अब ऐसे खुले समाज में) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बारंबार शाम (सीरिया) की यात्रा करना लोगों की दृष्टि से ओझल कैसे रह सकता था? जब्कि आप क़बीला के प्रसिद्ध युवक थे जिन्हें मक्का वासी भलि-भांति पहचानते थे और उनके पास अपने धन को अमानत के तौर पर रखा करते थे।

11- क्या यह बात बुद्धि में समा सकती है कि दीन -ए- इस्लाम जैसा परिपूर्ण व सर्वगुण सम्पन्न धर्म किसी ऐसे धर्म से लिया गया हो जिसके मानने वाले उसकी शिक्षाओं को छिपाते हों, उसमें मनमानी हेर-फेर करते हों तथा उसकी शिक्षाओं का उल्लंघन करते हों, भला एक पूर्ण धर्म को अपूर्ण धर्म के बराबर में कैसे खड़ा किया जा सकता है?!

12- अहले किताब के पास नबियों से संबंधित जो कहानियां हैं उनमें बड़ी हद तक धृष्टता एवं ओछापन घुस आया है, उन्होंने नबियों से ऐसी बहुतेरी घटनाएं का संबंध जोड़ दिया है जिसको करने में एक

आम इंसान भी लज्जा महसूस करता है, इसका एक उदाहरण "सिफ़्र तकवीन" में पाठ संख्या ९ के अंतर्गत मौजूद है: "२०- नूह अलैहिस्सलाम खेती-बाड़ी करने लगे तथा उन्होंने अंगूर का एक बाग (उपवन) लगाया। २१- उन्होंने मदिरापान किया तथा मदमस्त हो कर अपने डेरा में निर्वस्त्र हो गए। २२- कनआन के पिता ह़ाम ने अपने पिता को निर्वस्त्र देखा तथा अपने भाइयों को बाहर आकर इसकी सूचना दी। २३- तब साम एवं याफ़िस़ ने एक कपड़ा लिया तथा उसे अपने कंधे पर रख कर पाँव पीछे उलटे चल कर अपने पिता के निकट गए और उनके शरीर पर कपड़ा डाला, उनके मुख उलटी दिशा में थे जिसके कारण उन्होंने अपने पिता की नग्नता को नहीं देखा। २४- जब नूह को होश आया तो जो उनके छोटे बेटे ने उनके साथ किया था उसका पता चला। २५- तो उन्होंने कहा किः कनआन पर धिक्कार हो, वह अपने भाइयों के दासों का दास होगा"।[1]

सिफ़्र तकवीन ही में पाठ संख्या १९ के अतंर्गत लूत अलैहिस्सलाम के किस्सा में आया है किः

"२०- लूत स़ुग्र से निकल कर पर्वत पर जा बसे तथा उनकी दोनों बेटियां भी उनके साथ थीं क्योंकि स़ुग्र में बसने में उन्हों डर लगा अतः वह तथा उनकी दोनों बेटिया गुफा में रहने लगीं। २१- तब बड़ी वाली ने छोटी से कहा किः हमारा पिताः बुढ़ा है एवं इस धरती पर कोई युवक नहीं जो विधि सम्मत हमारे पास आ सके। २२- आओ हम अपने पिता को शराब पिलाएं तथा उससे लिपटें (हमबिस्तरि, सहवास करें) ताकि हम अपने पिता से वंश आगे बढ़ाएं। २३- तो उन्होंने उस रात्रि अपने पिता को मदिरापान कराया तथा बड़ी वाली अंदर गई तथा अपने पिता के संग सहवास किया किंतु उसे पता नहीं चला कि वह कब लेटी तथा कब जागी। २४- और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि बड़ी वाली ने छोटी से कहा कि देखो कल रात को मैंने पिता के संग सहवास किया था, आओ आज भी उनको शराबि पिलाएं ताकि तुम भी जाकर उससे सहवास करो और परिणामस्वरुप हम अपने पिता से अपना वंश आगे बढ़ाएं। २५- अंततः लूत की दोनों बेटियाँ अपने पिता से (संभोग करने के कारण) गर्भवती हो गईं"।[2]

यह नबियों के लिए कदापि उचित नहीं कि उनसे ऐसे (कु)कर्म अंजाम पा जाए, यह अहले किताब की नबियों के संग धृष्टता की झलकी मात्र है[3]। अल्लाह उन्हें अपमानित व रुस्वा करे, क़ुरआन -ए- करीम की कथाओं तथा उनमें कितना बड़ा अंतर है, और यदि उन दोनों की कथाओं में कुछ समानता पाई भी जाती है तो इस कारण कि दोनों (मूल रूप से) अल्लाह की वह़्य (प्रकाशना) हैं, यद्यपि अहले किताब ने अपनी पुस्तकों में मनमानी हेर-फेर कर रखी है तथापि वह़्य का थोड़ा बहुत अंश अब भी उसमें शेष है।

गोल्ड ज़ीहर ने जब यह दावा किया तो ऐसी कोई भी दलील नहीं दी जो उसके दावा को सच साबित कर सके। इसीलिए अहले किताब यह प्रचारित करने का प्रयास करते हैं कि आप पढ़ना लिखना जानते थे तथा आप के बारे में जो यह प्रचलित है कि आप पढ़ना लिखना नहीं जानते थे वह सही नहीं है, बल्कि यह आपके मोअजज़ा को साबित करने के लिए था, जब्कि वह़्य के नुस़ूस़ (क़ुरआन व ह़दीस़) इसका खण्डन

---

[1] सिफ़्र तकवीन पाठ संख्याः १९, अनुच्छेद (२०-२५)।

[2] सिफ़्र तकवीन पाठ संख्याः १९, अनुच्छेद (२०-२६)।

[3] अधिक जानकारी के लिए देखें : इज़्हारुल ह़क़ (३/ ८३५-८३६), तथा डॉक्टर अली अब्दुल वाह़िद की पुस्तक "अल-अस़्फ़ार अल-मुक़द्दसा फिल अदयान अल-साबिक़ा" (४८-६२)।

करते हैं, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلرَّسُولَ ٱلنَّبِيَّ ٱلۡأُمِّيَّ ٱلَّذِي يَجِدُونَهُۥ مَكۡتُوبًا عِندَهُمۡ فِي ٱلتَّوۡرَىٰةِ وَٱلۡإِنجِيلِ يَأۡمُرُهُم بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَيَنۡهَىٰهُمۡ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡخَبَٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنۡهُمۡ إِصۡرَهُمۡ وَٱلۡأَغۡلَٰلَ ٱلَّتِي كَانَتۡ عَلَيۡهِمۡۚ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِهِۦ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَٱتَّبَعُواْ ٱلنُّورَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ مَعَهُۥٓ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ ١٥٧﴾ (जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी (पढ़-लिख न पाने वाले) नबी हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं, जो सदाचार का आदेश देंगे और दुराचार से रोकेंगे, और उन के लिए स्वच्छ चीज़ों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीज़ों को हराम (अवैध) करार देंगे, और उन से उनके बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुए होंगे, अतः जो लोग आप पर ईमान लाए और आप का समर्थन किया और आपकी सहायता की, तथा उस प्रकाश (क़ुरआन) का अनुसरण किया जो आपके साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे। सूरह आराफ़: १५७।

13- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बन कर आने के पूर्व जाहिलीय्यत वाले समाज की जो स्थिति थी तथा जिस बुरे परिवेश में वो जी रहे थे, कि अज्ञानता का राज था, दुराचार व अशिष्टता आम थी, ऐसे में कोई व्यक्ति भूत तथा भविष्य में घटित होने वाले सभी का ज्ञान लेकर प्रकट हो, नियम कानून बनाए, संविधान तय करे, आम तौर पर ऐसा करना असंभव है (कि कोई व्यक्ति अकेले अपनी ओर से ऐसा करे), जिससे वह्य तथा आपके सच्चे नबी होने का प्रमाण मिलता है।

14- मुश्रिकों ने जब आपकी नबूवत तथा वह्य को मलीन करना चाहा तो उसको एक अज्मी (गैर अरब) लोहार से जोड़ दिया, जो अत्यंत मूर्खता तथा अज्ञानता का घोतक है, इससे नबी व अंतिम रसूल से उनकी शत्रुता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। अल्लाह तआला ने अपने इस कथन के द्वारा इस (तोहमत) का खण्डन किया: ﴿وَلَقَدۡ نَعۡلَمُ أَنَّهُمۡ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُۥ بَشَرٞۗ لِّسَانُ ٱلَّذِي يُلۡحِدُونَ إِلَيۡهِ أَعۡجَمِيّٞ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيّٞ مُّبِينٌ ١٠٣﴾ (तथा हम भलि-भांति जानते हैं कि वे (काफ़िर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा है, जब्कि उसकी भाषा जिसकी ओर संकेत करते हैं अजमी (ग़ैर अरबी, विदेशी) है और यह स्पष्ट अरबी भाषा है)। सूरह नह्लः १०३।

इस के बावजूद उन (मुश्रिक) लोगों ने यह नहीं कहा किः आपने इस क़ुरआन को अहले किताब से सीखा है।

15- दो युक्तियां ऐसी हैं जिनसे पूर्णतया यह स्पष्ट हो जाता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह वह्य किसी मानव से नहीं लिया था:

पहली युक्ति: आप के समुदाय के लोग तथा वह समाज जिसमें आपने अपना जीवन व्यतीत किया था, जिसका उल्लेख पिछली दलीलों किया जा चुका है।

दूसरी युक्ति: उसके लिए, जिसे आपका युग नहीं मिल सका, बल्कि विभिन्न माध्यमों से सुन कर उसे जिसका ज्ञान हुआ, उनमें से:

यह है किः आपकी जीवनी तावातुर[1] सनद के साथ उपलब्ध है, जन्म से ले कर मरण तक आपके जीवन काल की सभी स्थितियां हमारे समक्ष हैं, तो भला इस जैसी अत्यंत महत्वपूर्ण बात हम से कैसे छिप्त रह सकती है, जब्कि इससे कम महत्वपूर्ण बातें भी हमारे सामने मौजूद हैं।

यह किः आपने ऐसी बहुतेरी बातों के बारे में सूचना दी जिन्हें न तो अहले किताब जानते थे और न दूसरे लोग, जैसे आद, स़मूद तथा स़ालेह अलैहिमुस्सलाम के किस्से, दस्तरख्वान उतरने एवं फ़िरऔन की पत्नी के ईमान लाने का किस्सा तथा नबियों के बारे में ऐसा विस्तारित विवरण जो अहले किताब के यहाँ मात्र संक्षिप्त रूप में मौजूद है।

यह किः आपको अपनी क़ौम तथा अहले किताब की ओर से ऐसी कट्टर दुशमनी का सामना था कि यदि ऐसी कोई बात होती तो बोलने वाला यह बोलकर लांछन लगाने से नहीं चूकता किः तुम तो सब कुछ हम से तथा हमारी पुस्तकों से ही सीखते व जानते हो।

यह किः यह एक ऐसी बात है जिसे नक़ल करने के पर्याप्त कारण व साधन मौजूद थे,यदि इस बात को छुपा कर रखने की यदि संधि भी हुई होती तो कम से कम आपके निकटतम सहाबा को इसकी भनक अवश्य मिलती, तथा दिल से इस नबी को झुठलाने के बावजूद इतने कष्ट, दुःख, हिजरत (पलायन की पीड़ा) तथा देश निकाला जैसी यातनाओं को बर्दाश्त नहीं करते, जब्कि उन्हें न तो धन-व्यापार की आशा थी और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें आलीशान महलों का वादा किया था, बल्कि इसके विपरीत आप ने उन्हें घर परिवार छोड़ कर निकल जाने का आदेश दिया था, और यह सर्वविदित है कि नैसर्गिक रूप से मानव स्वाभाव किसी झूठे का अनुसरण करने से इंकारी होता है।

16- क़ुरआन व ह़दीस़ से यह प्रमाणित है कि अहले किताब आप से ग़ैब (अलौकिक, छिप्त बातों) के संबंध में पूछा करते थे, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَيَسۡـَٔلُونَكَ عَن ذِي ٱلۡقَرۡنَيۡنِۖ قُلۡ سَأَتۡلُواْ عَلَيۡكُم مِّنۡهُ ذِكۡرٗا ٨٣﴾ (और यह लोग आप से ज़ुलक़र्नैन के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दें कि मैं उनका कुछ हाल तुम को पढ़ कर सुनाता हूँ)। सूरह अल-कह्फ़ः ८३।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَيَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنۡ أَمۡرِ رَبِّي وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلۡعِلۡمِ إِلَّا قَلِيلٗا ٨٥﴾ (यह लोग आपसे रूह़ (आत्मा, प्राण) के विषय में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि रूह़ मेरे रब के आदेश से है तथा तुम्हें अल्प ज्ञान ही दिया गया है)। सूरह अल-इस्राः ८५।

इमाम बुख़ारी रह़िमहुल्लाह ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने की घटना का उल्लेख किया है, वह कहते हैं किः

“अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने की सूचना मिली तो वह आपके पास आए और कहाः मैं आप से तीन प्रश्न करना चाहता हूँ जिनका उत्तर

[1] निरंतरता, अर्थात इन ह़दीस़ों को इतने अधिक लोगों ने रिवायत किया है जिनसे भूल-चूक होना या सभी मिल कर इस के बारे में झूठ बोलें ऐसा होना असंभव है।

केवल कोई नबी ही दे सकता है, क़यामत (प्रलय) की सर्वप्रथम निशानी व चिह्न क्या है ? जन्नतियों का सर्वप्रथम भोजन क्या होगा ? बच्चा अपने पिता का रंग किस प्रकार पकड़ता है ? तथा बच्चा अपने मामुओं का रंग किस प्रकार से पकड़ता है ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कुछ समय पूर्व ही जिब्रील ने मुझे इन सब चीज़ों के विषय में सूचना दी है, रावी (वाचक) कहते हैं किः इस पर अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः यह फ़रिश्ता यहूदियों का शत्रु है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जहाँ तक क़यामत की सर्वप्रथम निशानी की बात है तो वह ऐसी आग होगी जो लोगों को पूरब से पश्चिम की ओर भगा कर ले जाएगी, और जन्नत वासियों का सर्वप्रथम खाना मछली का कलेजा होगा, रही बात बच्चा का (पिता या मामू के) समान होने की तो पुरुष जब महिला से मिलता है तो यदि पुरुष का पानी (वीर्य) महिला के पानी (वीर्य) पर प्रभुत्व प्राप्त कर ले तो बच्चा मर्द के जैसा होता है और यदि महिला का वीर्य पुरुष के वीर्य पर प्रभुत्व प्राप्त कर ले तो बच्चा महिला के जैसा होता है।

यहु सुनते ही अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बोल उठेः मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं, फिर अर्ज़ कियाः हे अल्लाह के रसूल, यहूदी लांछन एवं दोषारोपण करने वाली क़ौम है, यदि उन्हें आपके पूछने के पूर्व ही मेरे इस्लाम स्वीकार करने की सूचना मिल गई तो आपके पास मुझ पर लांछन लगाएंगे, इसी बीच यहूदी आ गए और अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु घर में छिप कर बैठ गए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अब्दुल्लाह बिन सलाम की तुम्हारे सामने क्या हैसियत व प्रतिष्ठा है ? उन्होंने कहा किः वह हममें सर्वाधिक ज्ञान वाले, सर्वाधिक ज्ञान रखने वाले के पुत्र, हममें सबसे उत्तम तथा हममें सर्वोत्तम के पुत्र हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रश्न कियाः यदि अब्दुल्लाह बिन सलाम इस्लाम ले आए तो तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया होगी ? उन्होंने उत्तर दियाः अल्लाह उन्हें अपनी शरण में रखे (अर्थात वह इस्लाम को स्वीकार न करें), सहसा अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आए तथा बोल पड़ेः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, इस पर यहूदी कहने लगेः तुम हममें सबसे दुष्ट तथा सबसे दुष्ट के पुत्र हो, यह कह कर उन पर टूट पड़े"।[1]

यदि यह ज्ञान आपने उन (अहले किताब) से अर्जित किया होता तो सबसे पहले वो आप से इसके विषय में पूछते ही नहीं और दूसरा यह कि उन्हें पता होता कि आप ने पिछले नबियों से यह सब लिया है तो वो आपको लज्जित व रुस्वा करते, इसके अतिरिक्त यदि यह सब ज्ञान वास्तव में आप को उनसे ही मिला होता तो आप नबी नहीं होते।

17- आख़िरत (परलोक), क़यामत (महा प्रलय) तथा महशर (मरणोंपरांत जीवन) से संबंधित ग़ैब की (अलैकिक) सूचनाएं आप ने दीं, आप ग़ज़वा (युद्ध) तथा भविष्य में घटित होने वाली बहुतेरी

---

[1] इस ह़दीस़ को इमाम बुख़ारी रह़िमहुल्लाह ने किताबुल अंबिया में : अल्लाह तआला के फ़रमानः (जब तेरे रब ने कहा कि मैं ज़मीन में उत्तराधिकारी बनाने वाला हूँ) के अंतर्गत उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्या (३१५१) (३/ १२११-१२१२), तथा किताब फ़ज़ाइल -ए- सहाबा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा उनके सहाबा का मदीना की ओर हिजरत (पलायन) वाले पाठ के अंतर्गत भी विस्तार से उल्लेख किया है, ह़दीस़ संख्या (३६९९) (३/ १४२३), तथा बैहिक़ी ने भी अल-दलाइल (२/ ५२६-५२७) में इसका उल्लेख किया है।

घटनाओं के बारे में आपने सूचना दी जो ज्यों का त्यों घटित हुईं, कुछ आपके जीवन काल में तथा कुछ आपके मृत्यु के पश्चात घटित हुईं, यदि कोई यह कहे कि यह सारी सूचनाएं अहले किताब की पुस्तकों में मौजूद हैं, तो इसका उत्तर यह है किः (यदि ऐसा है तो) यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई एवं सत्यवादिता का प्रमाण है, क्योंकि यह सारी सूचनाएं उनकी पुस्तकों में किसी नबी के संबंध में दी गई हैं, और आप ही वह नबी हैं जिनका शुभ-समाचार उनकी पुस्तकों में दिया गया है।

18- उस समाज में या तो मुश्रिक थे या अहले किताब लेकिन उनमें से किसी के पास वह दावत नहीं थी जिसके ध्वजवाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे।

19- अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَمَا كُنتَ تَتْلُواْ مِن قَبْلِهِۦ مِن كِتَٰبٍ وَلَا تَخُطُّهُۥ بِيَمِينِكَ إِذًا لَّٱرْتَابَ ٱلْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾﴾ (इसके पूर्व आप न तो कोई पुस्तक पढ़ते थे और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह बातिल परस्त व मिथ्यावादी किसी भ्रम में पड़ जाएं)। सूरह अल-अन्कबूतः ४८।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "यह सर्वविदित है कि जो दूसरों से शिक्षा अर्जित करता है वह या तो सीख कर तथा याद व स्मरण करने के द्वारा अर्जित करता है अथवा उसकी पुस्तक से अर्जित करता है, जब्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न तो किसी पुस्तक से कुछ याद कर के पढ़ते थे और न ही आप को कोई लिखित चीज़ पढ़नी आती थी, जो दूसरों कि पुस्तकों से कुछ अर्जित करता है वह या तो उसे पढ़ता है या फिर उसे नकल करता है, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न तो पढ़ना आता था न ही नकल करना"।[1]

20- क़ुरआन की अनेक आयतों में इसको असंभव करार दिया गया है कि आप ने अहले किताब से कुछ फायदा उठाया था, जैसाकि अल्लाह तआला के इस कथन में इसको इंगित किया गया हैः ﴿وَإِذْ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلْكِتَٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهُۥ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُۥ فَنَبَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَٱشْتَرَوْاْ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾﴾ (-हे नबी- याद करें जब अल्लाह ने उनसे दृढ़ वचन लिया था जिन्हें पुस्तक दिया गया था कि तुम इसे अवश्य उन लोगों के लिए उजागर करते रहोगे और इसे छुपाओगे नहीं, तो उन्होंने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उसके बदले तनिक मूल्य (धन) ख़रीद लिया, तो वह कितनी बुरी चीज़ ख़रीद रहे हैं)। सूरह आल -ए- ईमरानः १८७।

एक दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَعْفُواْ عَن كَثِيرٍ قَدْ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٌ وَكِتَٰبٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾﴾

[1] अल-जवाब अल-स़हीह़ (४/ ३१)।

(हे अहले किताब, तुम्हारे पास हमारे रसूल आ गए हैं, जो तुम्हारे लिए उन बहुतेरी बातों को उजागर कर रहे हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (क़ुरआन) आ गई है। सूरह अल-माइदाः १५।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ عَلَىٰ فَتۡرَةٖ مِّنَ ٱلرُّسُلِ أَن تَقُولُواْ مَا جَآءَنَا مِنۢ بَشِيرٖ وَلَا نَذِيرٖۖ فَقَدۡ جَآءَكُم بَشِيرٞ وَنَذِيرٞۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١٩﴾ (हे अहले किताब, तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात हमारे रसूल आ गए हैं, वह तुम्हारे लिए (सत्य को) उजागर कर रहे हैं,ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ-सूचना देने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ-समाचार सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है)। सूरह अल-माइदाः १९।

﴿وَقَالَتِ ٱلۡيَهُودُ عُزَيۡرٌ ٱبۡنُ ٱللَّهِ وَقَالَتِ ٱلنَّصَٰرَى ٱلۡمَسِيحُ ٱبۡنُ ٱللَّهِۖ ذَٰلِكَ قَوۡلُهُم بِأَفۡوَٰهِهِمۡۖ يُضَٰهِـُٔونَ قَوۡلَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ مِن قَبۡلُۚ قَٰتَلَهُمُ ٱللَّهُۖ أَنَّىٰ يُؤۡفَكُونَ ٣٠﴾ (यहूदी ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के पुत्र हैं, और नसारा (ईसईयों) ने कहा कि (यीशु) मसीह अल्लाह के पुत्र हैं, यह उनके अपने मुँह (मन) की बातें हैं, वो उनके जैसी बातें कर रहे हैं जो इनके पूर्व काफिर हो गए, उन पर अल्लाह की मार, वो कहाँ बहके जा रहे हैं। सूरहा अल-तौबाः ३०।

सारांश यह है कि यहूदी धर्म व ईसाई धर्म को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह्य को स्रोत के रूप में पेश करने का खण्डन करते हुए पूर्व में जो दलीलें गुज़र चुकी हैं वही इसकी भी दलील हैं कि अन्य तमाम मान्याताएं तथा आस्थाएं भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा लाई गई वह्य व शरीअत का स्रोत नहीं हैं, क्योंकि जब यहूदियत व ईसाईयत के स्रोत होने का खण्डन हो गया तो मजूसियत तथा वसनीयत इत्यादि के आपकी वह्य का स्रोत व आधार न होने का खण्डन अपने आप हो जाता है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद पर डटे रहने तथा शिर्क को छोड़ देने की दावत ले कर आए थे, जब्कि इन धर्मों मे जिस प्रकार का बिगाड़ तथा मनमानी हेर-फेर की गई है वह जगजाहिर है तथा उसको विस्तार से लिखने का यह उचित स्थान नहीं है।[1]

चौथी भ्रांतिः जिसे हम वह्य कहते हैं वास्तव में वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तंत्रिका प्रतिक्रियाओं का परिणाम है

---

[1] देखें : अल-जवाब अल-सहीह (१/ १९७), (४/ २५, ५४, ६३), इज़्हारुल हक़ (३/ ८३५-८३६), मनाहिलुल इरफ़ान (२/ ३१७- ३२५), रशीद रज़ा की अल-वह्य अल-मुहम्मदी (२०१-२०२), डॉक्टर अब्दुल जलील शिब्ली की रद्दु मुफ़तरयात अलल इस्लाम (७८-८३), मुहम्मद इत्र की वह्युल्लाह (१३६-२३९), अहमद ग़ार्राब की रूयतुन इस्लामियतुन लिल इस्तिशराक़ (३१-३६), डॉक्टर उमर रिज़वान की आरा उल मुस्तशरिक़ीन हौलल क़ुरआन अल-करीम व तफ़्सीरिही (१/ २३९-३६५), अब्दुल्लाह अब्दुल ह्य्य की अल-वह्यु फ़िल इस्लाम व इब्तालुश्शुबुहात (३३८-३६९) जोकि एम.ए. का थेसिस है जिसे टाइपराइटर पर टंकित कर के उम्मुल क़ुरा यूनिवर्सिटी में जमा किया गया है।

किसी ने इसे हिस्टीरिया कहा है तो किसी ने इसे मिर्गी का रोग बताया है, ये लोग कहते हैं किः आपके बैचेन स्वाभाव तथा दिमागी तनाव में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

यह प्राचीन भ्रम व आक्षेप है जो रसूलों के शत्रु पेश करते आ रहे हैं, उनका यहा दावा रहा है कि उन पर पागलपन के दौरे पड़ते हैं, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿كَذَٰلِكَ مَآ أَتَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُواْ سَاحِرٌ أَوۡ مَجۡنُونٌ ۝٥٢ أَتَوَاصَوۡاْ بِهِۦۚ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٞ طَاغُونَ ۝٥٣﴾ (इसी प्रकार से जो लोग इन से पहले गुज़र चुके हैं उनके पास जो भी रसूल आया उन्होंने कह दिया कि यह या तो जादूगर है या दीवाना है। क्या ये इस बात की एक दूसरे को वसीयत करते गए हैं, नहीं बल्कि यह उद्दंड समुदाय है)। सूरह अल-ज़ारीयातः ५२-५३।

इस भ्रांति का खण्डन निम्नांकित विभिन्न प्रकार से किया जा सकता हैः

1- वह्य की जिन किस्मों का पूर्व में उल्लेख किया गया है उनमें कहीं भी हमें आपकी ऐसी दशा नहीं दिखाई देती है जिससे पता चले कि आप इस प्रकार से परेशान तथा बेचैन हुए हों कि इसका प्रभाव दूसरों को दृष्टिगोचर हो।

2- साईंटैफिक रूप से यह प्रमाणित हो चुका है कि मिर्गी का रोगी अपने होश खो देता है, उसकी स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है और सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है, बल्कि वह पूर्णरूपेण बेहोशी की स्थिति में होता है तथा वह कुछ भी अनुभव नहीं कर सकता।

वह्य उतरते समय हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कभी भी ऐसी स्थिति नहीं हुई, वह्य समाप्त हो जाने के बाद आप सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को संबोधित करते तथा बिना कुछ भूल-चूक के जिब्रील की एक-एक बात से उन्हें सूचित करते।

3- हिस्टीरिया एक लाइलाज न्यूरोलॉजिकल बीमारी है, जो अधिकतर महिलाओं मे पाई जाती है, इसके लक्षणों में से हैः सृजन की असामान्यताएं व विसंगति, सांस की तकलीफ, पाचन में गड़बड़ी। इस रोग के कारण इंसान कभी-कभी आंशिक रूप से अपाहिज (उसे पक्षाघात) भी हो जाता है जिससे पुट्ठा सिकुड़ने लगता है, कोमा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, फिर ऐसी बोखलाहट सवार होती है जिससे हाथ-पाँव कँपकपाने लगता है, तथा इधर-उधर कूदने फांदने जैसी स्थिति बन जाती है।

इस रोग के उपरोक्त लक्षण यह विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त है कि वह्य की जो दशा है वह इन परिस्थितियों से बिल्कुल भिन्न है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस रोग का रोगी बताना आपके शत्रुओं की कुंठा, दुष्टता, पूर्वाग्रह तथा मूर्खता का घोतक है।

4- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबवूत मिलने के पूर्व अपनी आयु के चालीस वर्ष क़ुरैश के बीच गुजारा, आप उनके निकट अपने साहस, सत्यवादिता, ईमानदारी, निष्ठा, बुद्धिजीविता, गंभीरता एवं पवित्रता के कारण प्रसिद्ध थे, क़ुरैश के सरदार एवं वरिष्ठ लोग विवाद के समय आप को अपना न्यायाधीश बनाते थे, जो व्यक्ति ऐसे उच्च गुणों से विशेषित हो वह इस प्रकार के लाइलाज रोग से कैसे पीड़ित हो सकता है जोकि पागलपन के समान है।

आपने अज़ीम व महान वह्य के जो नुसूस (श्लोक) पेश किए, रब के बनाए हुए जिस पूर्ण शरीअत (दिव्य विधान) से लोगों को रूबरू कराया तथा आपने जिस महान राज्य का निर्माण किया, उन सब में विचार करने से पता चलता है कि यह सब किसी पागल इंसान के बस का नहीं है, तथा यह विश्वास हो जाता है कि निःसंदेह यह दोनों जहान (लोक-प्रलोक) के रब की वह्य है जो उसने सत्यवादी एवं ईमानदार व्यक्ति के दिल पर उतारी है।

5- उन के पास इस बातिल व निराधार गुमान की कोई दलील नहीं है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म से लेकर मरण तक की पूरी जीवनी विस्तार के साथ सुरक्षित है तथा उसमें इस निराधार दावा का कोई प्रमाण नहीं है।

6- वास्तविक स्थिति का अवलोकन करने से भी यह दावा झूठा नज़र आता है, इसलिए कि मिर्गी और हिस्टीरिया का जो शिकार होता है वह बेतुकी बातें करता रहता है जिसे न तो वह समझ सकता है और न ही याद रख सकता है।

भला रोग की ये परिस्थिति, वह्य –ए- इलाही (देवीय प्रकाशना) के समान कैसे हो सकती है जिसे उन्होंने उम्मत के समक्ष रखा?! [1]

पाँचवीं भ्रांतिः यह दावा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह्य के बारे में संदेह व भ्रम थाः

जैसाकि शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह अहले किताब[2] के बारे में लिखते हैं कि वह इस विषय में अल्लाह तआला के इस कथन से दलील पकड़ते हैं: ﴿فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّآ أَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ فَسۡـَٔلِ ٱلَّذِينَ يَقۡرَءُونَ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكَۚ لَقَدۡ جَآءَكَ ٱلۡحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُمۡتَرِينَ ٩٤﴾ (फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह हो जो हमने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं, आपके पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है, अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों) सूरह यूनुसः ९४।

वो अल्लाह तआला के इस कथन को भी दलील बनाते हैं: ﴿قُلۡ مَن يَرۡزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ قُلِ ٱللَّهُۖ وَإِنَّآ أَوۡ إِيَّاكُمۡ لَعَلَىٰ هُدًى أَوۡ فِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٖ ٢٤﴾ (आप प्रश्न कीजिए कि तुम्हें आसमानों व ज़मीन से रोज़ी (जीविका) कौन पहूँचाता है, (आप स्वयं) उत्तर दीजिए कि अल्लाह तआला, (सुनो) हम या तुम निःसंदेह या तो खुली हिदायत (सही मार्ग) पर हैं अथवा खुली गुमराही में (कुपथ) हैं)। सूरह सबाः २४।

पहली आयत ﴿فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّآ أَنزَلۡنَآ....﴾ की तफ़्सीर व व्याख्या में विभिन्न मत हैं:

---

[1] देखें: मनाहिलुल इरफ़ान (१/ ७४), वह्युल्लाह (२०५-२०६), आराउल मुस्तशरिक़ीन हौलल क़ुरआन व तफ़्सीरिही (१/ ३९८) तथा अल-वह्यु फ़िल इस्लाम व इब्तालुश्शुबुहात (३६९-३७६)।

[2] देखें: अल-जवाब अल-सहीह (१/ ३३४-३४०), (२/ ७७)।

यह किः यह संबोधन तो अवश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को है किंतु इससे अभिप्रेत दूसरे लोग हैं, जिसका अर्थ यह है कि आप को तो संदेह नहीं है किंतु आप के अलावा (अन्य लोगों) को संदेह है।[1]

यह किः यहाँ संदेह से अभिप्राय दिल छोटा करना है, जिसका भावार्थ यह हुआ किः यदि झुठलाने वालों के झुठलाने से आप का दिल छोटा होता है ... शक (संदेह) के शाब्दिक अर्थ से यह दलील पकड़ी गई है क्योंकि इस (शक) का अरबी भाषा में शाब्दिक अर्थ तंग व सँकरा होता है।

यह किः यह संबोधन तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ही है किंतु इससे अभिप्राय यह नहीं है कि आप को वह्य के सिलसिले में शक था, अपितु ह़सन, सईद बिन जुबैर तथा क़तादा जैसे वरिष्ठ ताबेईन ने इस आयत की व्याख्या यों की हैः न तो आपको शक हुआ और न ही आपने किसी से इसके संबंध में प्रश्न किया।[2]

इसके अतिरिक्त इसका कोई साक्ष्य नहीं है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (आप से पहले की पुस्तकों के पढ़ने वालों से) प्रश्न किया, बल्कि यह तो अरबी भाषा में संबोधन की एक शैली है, उदाहरणस्वरूप वह कहते हैं किः यदि तुम मेरे दास हो तो मेरी बात मानो, और यह किः यदि मेरे पुत्र हो तो मेरा आज्ञापालन करो, हालांकि कहने वालों का यह शक नहीं होता कि वह उसका बेटा है या नहीं।[3]

इसके साथ-साथ इसमें यह भी दलील नहीं है कि आपने संदेह किया, संदेह होने पर आप को (अहले किताब से) पूछने का आदेश दिया गया था, इसका यह अर्थ नहीं है कि आप को संदेह हुआ था।[4]

आयत में इस बात का भी प्रमाण है कि मुश्रिकों ने आपके द्वारा लाई हुई (रिसालत) को झुठलाया, अहले किताब के पास इस की पुष्टि करने वाले प्रमाण मौजूद थे, इसलिए कि मूसा अलैहिस्सलाम ने भी एक अल्लाह की उपासना करने तथा उसके सिवाय किसी अन्य की पूजा नहीं करने की दावत दी थी, जिसका अर्थ यह है कि तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की दावत कोई नूतन व नई दावत नहीं थी कि मुश्रिकीन उसका इंकार कर दें, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَسۡـَٔلۡ مَنۡ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رُّسُلِنَآ أَجَعَلۡنَا مِن دُونِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ءَالِهَةٗ يُعۡبَدُونَ ٤٥﴾ (और हमारे उन नबियों से पूछो, जिन्हें हमने आप से पहले भेजा था कि क्या हमने सिवाय रह़मान के और उपास्य बना रखे थे जिनकी उपासना की जाए)। सूरहः अल-ज़ुख़रुफ़ः ४५।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥﴾ (हमने आप से पहले जो भी रसूल भेजा उसकी ओर यही वह्य उतारी कि मेरे सिवाय कोई सच्चा पूज्य नहीं, अतः तुम केवल मेरी ही पूजा करो)। सूरह अल-अंबियाः २५।

---

[1] अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन (८/ ३८२)।

[2] अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन (८/ ३८२)।

[3] अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन (११/ १६९)।

[4] मजमूअ अल-फ़तावा (१६/ ३२५)।

इसके अतिरिक्त अहले किताब इस बात से भलि-भांति परिचित थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले जितने भी अंबिया –अहैमुस्सलाम- पधारे वो सभी मानव जाति से ही संबंध रखते थे न कि वो फरिश्ते थे जैसाकि मुश्रिकीन गुमान करते हैं कि केवल फरिश्ते ही रसूल हो सकते हैं, इसी आधार पर उन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत को भी ठुकरा दिया (कि आप मानव जाति से संबंध रखते थे), अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿وَمَا مَنَعَ ٱلنَّاسَ أَن يُؤۡمِنُوٓاْ إِذۡ جَآءَهُمُ ٱلۡهُدَىٰٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓاْ أَبَعَثَ ٱللَّهُ بَشَرٗا رَّسُولٗا ٩٤ قُل لَّوۡ كَانَ فِي ٱلۡأَرۡضِ مَلَٰٓئِكَةٞ يَمۡشُونَ مُطۡمَئِنِّينَ لَنَزَّلۡنَا عَلَيۡهِم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَلَكٗا رَّسُولٗا ٩٥﴾ (लोगों के पास हिदायत (मार्गदर्शन) पहूँच जाने के बाद ईमान (लाने) से रोकने वाली केवल यही चीज़ रही है कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने एक मानव को ही रसूल बना कर भेजा, आप कह दीजिए कि धरती पर यदि फरिश्ते चलते फिरते तथा रहते बसते तो हम भी उनके पास आसमानी फरिश्ते ही रसूल बना कर भेजते)। सूरह अल-इस्राः ९४-९५।

इसके अलावा अहले किताब से पूछने का मतलब केवल यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत से संबंधित जो सूचनाएं और आप की जो विशेषताएं (उनकी पुस्तकों में) हैं, उनके बारे में जानकारी हासिल हो[1], जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है: ﴿ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلرَّسُولَ ٱلنَّبِيَّ ٱلۡأُمِّيَّ ٱلَّذِي يَجِدُونَهُۥ مَكۡتُوبًا عِندَهُمۡ فِي ٱلتَّوۡرَىٰةِ وَٱلۡإِنجِيلِ ١٥٧﴾ (जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात व इंजील में पाते हैं)। सूरह आराफ़ः १५७।

रही बात दूसरी आयत की तो इसमें इसकी कोई दलील नहीं है कि आप को शक हुआ।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह लिखते हैं किः "यह बिल्कुल उचित संबोधन है जिसे सुन्ने के पश्चात चाहे वह मित्र हो अथवा शत्रु यही कहेगा कि तुम्हारे साथी ने तुम्हारे साथ न्याय किया, जैसाकि वह न्यायप्रिय जिसकी न्यायप्रियता स्पष्ट हो, वह खुले आम अत्याचार करने वाले से कहता हैः या तो तुम अत्याचारी हो या मैं, वह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाले मामले में संदेह के आधार पर ऐसा नहीं कहता, बल्कि वह यह बयान करना चाहता है कि हम में से कोई एक अत्याचारी है और वह तुम हो न कि मैं, इसीलिए जब यह कहा जाए किः मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादी) जो अल्लाह की पूजा करते हैं वो या तो हिदायत पर (सुपथ) हैं अथवा गुमराही पर (कुपथ) हैं, तथा मुश्रिकीन (बहुदेववादी) जो ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हैं जो न तो लाभ पहूँचा सकती हैं और न हानि वो या तो हिदायत (सुपथ) पर हैं अथवा गुमराही (कुपथ) पर हैं, तो इस कथन का भावार्थ यही है कि मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादी) हिदायत पर हैं और मुश्रिकीन (बहुदेववादी) गुमराह हैं"।[2]

इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "इसका अर्थ यह है कि तुमने जब उस ज़ात (वजूद) के साथ शिर्क किया जो आसमान व ज़मीन से तुम को जीविका देता है तो तुम गुमराह व पथभ्रष्ट ठहरे ...

---

[1] अल-जवाब अल-सहीह (१/ ३३४-३४०)।

[2] अल-जवाब अल-सहीह (१/ ३३४-३४०)।

आयत ﴿ وَإِنَّآ أَوۡ إِيَّاكُمۡ لَعَلَىٰ هُدًى أَوۡ فِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٖ ٢٤﴾ में (औव, أو अर्थात या) बस़रा वासियों के अनुसार अपने मूल अर्थ में प्रयोग किया गया है न कि शक व संदेह के अर्थ में, किंतु इस प्रकार से इस तरह के स्थान पर अरब इसका प्रयोग उस समय करते हैं जब सूचना देने वाला उसके अर्थ को भलि-भांति जानता तो हो किंतु दूसरों के समक्ष इसे स्पष्ट नहीं करना चाहता हो"।[1]

([1]) अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन (१४/ २२९)।

सारांश

संक्षेप में कहा जाए तो इस्लाम की बेदाग छवि को विकृत करने के लिए यह निरर्थक प्रयास है, (वास्तव में) यह ऐसा क्षीण प्रयास है कि सत्य की रोशनी जब इस पर चमकती है तो इसकी लौ बुझ जाती है।

इस पुस्तक के लेखन तथा उन भ्रांतियों का उल्लेख करके उनका खण्डन करने के कारण मुझे अल्लाह से यह उम्मीद है कि मैं ने अपने नबी व आँखों की ठंडक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से दिफा (रक्षा) करने, आपसे प्रेम रखने, यथासंभव आपका समर्थन व सहायता करने एवं आपकी रिसालत पर ईमान लाने के कारण जो जिम्मेवारी हमारे ऊपर अनिवार्य होती है उसका थोड़ा सा अंश ही सही परंतु इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करने का प्रयास किया है (और संभवतः मैं इसमें सफल रही)।

मैं अल्लाह तआला से उसके परम सुंदर नामों और उच्च गुणों का हवाला देते हुए उससे प्रार्थनारत हूँ कि वह इस प्रयास को मात्र अपनी रज़ामंदी का कारण बनाए तथा इसे स्वीकार कर ले, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत का जो भी व्यक्ति आप के सुन्नत व बताए हुए तरीक़ों से विमुख है अल्लाह तआला इस पुस्तक को उसकी हिदायत व मार्गदर्शन का माध्यम बना दे, इस महान नबी का अपमान करने वालों, तथा यहूदि व ईसाई में से जिन तक यह पुस्तक पहूँचे, उनके लिए इस पुस्तक को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत पर ईमान लाने तथा इस्लाम स्वीकार करने का कारण बना दे, अल्लाह तआला बड़ा सुनने वाला तथा स्वीकार करने वाला है।

मैं इस पुस्तक की समाप्ती उलेमा के उन कथनों का उल्लेख करने के साथ करना चाहती हूँ जिसका संबंध इस बात से है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वालों का क्या हुक्म है अर्थात उसकी क्या सज़ा व दंड है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वालों के संबंध में उलेमा के कथनों का उल्लेख:

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्णरूपेण प्रेम करने व आपका सम्मान करने का अर्थ यह है कि आपका अनुसरण हो, आपके आदेशों का पालन किया जाए, दृश्य व अदृश्य दोनों रूप में आपकी सुन्नतों को जीवित किया जाए, जिस दावत को दे कर आप भेजे गए हैं उसका प्रचार-प्रसार हो, तथा इसके लिए दिल, हाथ व ज़ुबान से प्रयासरत हुआ जाए, पूर्व में गुजर चुके अंसार व मुहाजिरीन तथा भलाई के साथ उनका अनुगमन करने वाले ताबेईन का यही तरीका है"।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يُؤْذُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَعَنَهُمُ ٱللَّهُ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾﴾ (जो लोग अल्लाह व उसके रसूल को तक्लीफ़ देते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत (लोक व परलोक) में अल्लाह तआला की धिक्कार हो, तथा (अल्लाह ने) उनके लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखा है)। सूरह अल-अह़ज़ाबः ५७।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿وَٱلَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ ٱللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾﴾ (जो लोग रसूलुल्लाह -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को दुःख पहूँचाते हैं उनके लिए भयंकर कष्टदायक यातना है)। सूरह अल-तौबाः ६१।

अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا۟ رَسُولَ ٱللَّهِ وَلَآ أَن تَنكِحُوٓا۟ أَزْوَٰجَهُۥ مِنۢ بَعْدِهِۦٓ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ ٱللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾﴾ (तुम्हारे लिए यह कदापि उचित नहीं है कि नबी को पीड़ा दो, न यह कि विवाह करो उनकी पत्नियों से आपके पश्चात कभी भी, वास्तव में यह अल्लाह के समीप महा (पाप) है)। सूरह अल-अह़ज़ाबः ५३।

तथा स़ह़ीह़ ह़दीस़ में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काब बिन अशरफ़ के वध का आदेश देते हुए फ़रमायाः "काब बिन अशरफ़ का वध कौन करेगा? क्योंकि वह अल्लाह व उसके रसूल को दुःख देता है, फिर आप उस व्यक्ति की ओर मुतवज्जह हुए जिन्होंने उसका वध किया था"।[1]

तथा मक्का विजय के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने ख़त़ल तथा उसकी दासी का वध करने का आदेश दिया था क्योंकि वो दोनो अपने गीतों के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली दिया करते थे।[2]

---

[1] इसको अबू दाऊद ने रिवायत किया है, ह़दीस़ संख्या (३०००)।

[2] मजमउज़्ज़वाइद (६/ १७६)।

पशु पक्षी भी उससे प्रतिशोध लिया करते थे जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करता था या आपको गाली देता था।

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर रह़िमहुल्लाह ने अली बिन मरज़ूक बिन अबुल ह़सन अल-रिबई अल-सुलामी की जीवनी में उल्लेख किया है कि उन्होंने जमालुद्दीन इब्राहीम बिन मुह़म्मद अल-त़ीबी से रिवायत किया है कि मंगोलों के कुछ सरदारों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया तो उसके पास ईसाईयों एवं मंगोलों के विरष्ठ लोगों का एक समुह आया, और उन में से एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने लगा, वहीं पास में एक कुत्ता बंधा हुआ था, जब उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने में अति कर दी तो वह कुत्ता उसके ऊपर कूद गया तथा उसे नोच-खसोट लिया, वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने कहा किः तुम्हारे मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने के कारण ऐसा हुआ है, तो उसने उत्तर दिया किः कदापि नहीं, बल्कि यह कुत्ता बड़ा स्वाभिमानी है जब उसने देखा कि मैं उसकी ओर उँगली से इशारा कर रहा हूँ तो उसे लगा कि मैं उसे मारने वाला हू, वह पुनः एक बार फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने लगा जब उसने अति कर दी तो कुत्ते ने एक बार फिर छलांग लगाया तथा उसे गर्दन से पकड़ कर चीर दिया जिससे उसी समय उसकी मृत्यु हो गई, जिसके कारण उस वक्त लगभग चालीस हज़ार मंगोंलों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।[1]

यहाँ तक कि धरती भी उस व्यक्ति को स्वीकार नहीं करती है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देता है।

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह कहते हैं किः "एक ईसाई आदमी था (स़ह़ीह़ मुस्लिम के शब्द हैं किः बनू नज्जार कबीला का एक आदमी हमारे यहाँ था) वह मुसलमान हो गया तथा सूरह बक़रा व आले इमरान को पढ़ा (याद किया), वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए लेखन का कार्य अंजाम देता था, किंतु (किसी कारणवश) वह फिर से ईसाई हो गया (स़ह़ीह़ मुस्लिम के शब्द हैं किः वह वहाँ से भागा और अहले किताब के पास पहूँचा, वह कहते हैं किः उन लोगों ने उसे हाथों-हाथ लिया), वह कहा करता था किः मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहीं जानते हैं जो मैंने उनके लिए लिख दिया है (मुस्लिम के शब्द हैं किः उनलोगों ने कहा किः यह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए लिखा करता था, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया) (एक रिवायत में इस प्रकार है किः वह कहा करता था कि मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मैं जो लिखा करता था वह बस उसी को अच्छे ढ़ंग से जानते हैं), एक दिन अल्लाह ने उसे मौत दे दी तो लोगों ने उसे दफन कर दिया (मुस्लिम के शब्द हैं किः वह कुछ ही दिन जीवित रहा कि अल्लाह ने उसकी गर्दन तोड़ दी) सुबह में लोगों ने देखा कि धरती ने उसे उगल दिया है (मुस्लिम के शब्द हैं किः धरती ने उसे मुँह के बल उठा कर बाहर फेंक दिया है), लोगों ने कहा किः यह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा उनके साथियों का कारनामा है कि जब वह उनके पास से भाग कर हमारे पास आ गया तो उन्होंने –इसका बदला लेने के लिए- उसकी क़ब्र को खोद कर उसकी लाश बाहर फेंक दी है, तो लोगों ने उसके लिए पूर्व की तुलना में अधिक गहरा गड्ढा खोदा

[1] अल-दुरर अल-कामिना फ़ी आयान अल-मेआ अल-सामिना (4/ 153)।

(और उसे गाड़ दिया, किंतु) प्रातः काल में देखा कि धरती ने उसे (फिर से) उगल दिया है, तो लोगों ने कहा किः यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा उनके साथियों का कारनामा है कि जब वह उनके पास से भाग कर हमारे पास आ गया तो उन्होंने –इसका बदला लेने के लिए- उसकी क़ब्र को खोद कर उसकी लाश बाहर फेंक दी है, इस बार उन्होंने सामर्थ्य भर अत्यंत गहरा गड्ढा खोदा तथा उसे गाड़ दिया, पुनः सुबह में लोगों ने देखा कि धरती ने उसे उगल दिया है तो वो समझ गए कि यह किसी मानव का कारनामा नहीं है, तो उसे यों ही छोड़ दिया (मुस्लिम के शब्द हैं किः उसे फेंक कर चले गए)"।[1]

इस कथा पर टिप्पणी करते हुए शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या[2] रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "इस मलऊन व धिक्कारित व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठा लांछन लगया कि आप केवल वही जानते हैं जो वह उनके लिए लिखता है, तो अल्लाह तआला ने उसे तोड़ दिया तथा सबके सामने अपमानित किया कि कई बार दफन करने के बाद भी उसे क़ब्र से बाहर निकाल फेंका, यह करामत व चमत्कार ही है जो इस बात का प्रमाण है कि यह उसके द्वारा बोले गए वाक्यों की सज़ा व दंड है, और यह कि वह झूठा था क्योंकि सामान्य रूप से मृत के साथ ऐसा असामान्य व्यवहार नहीं होता है, और यह केवल मुर्तद हो (इस्लाम से फिर) जाने के जुर्म से भी बड़ा जुर्म है, क्योंकि मुर्तद होने वाले व्यक्तियों के साथ ऐसा नहीं होता है, इससे यह भी पता चलता है कि अल्लाह तआला उससे प्रतिशोध व इंतक़ाम लेता है जो उसके नबी को गाली देता है, उनका अपमान व तिरस्कार करता है, वह अपने दीन (धर्म) को प्रभुत्व देगा, और झूठ बोलने वाले को झुठलाएगा यदि लोग उस को इस्लामी हद्द के अनुसार सज़ा न दे सकें तो"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस प्रकार से अपमान करना नेमत (अनुग्रह) की समाप्ती तथा प्रकोप आने का संदेशवाहक है।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह (अस़्सारिम अल-मसलूल) में लिखते हैं किः "इसी के समान वह घटना भी है जिसका उल्लेख हम से ईमानदार, अनुभवी तथा बुद्धिजीवी मुसलमानों के एक समूह ने किया है जिसका अनुभव उन लोगों ने शाम (वर्तमान सीरिया) के तटीय इलाका के नगरों तथा क़िलों (गढ़, दुर्ग) में किया ... वो कहत हैं कि हम लोग एक महीना या एक महीना से भी अधिक तक चहुँ ओर सैनिकों को खड़ा कर के घेरा डाले रहते थे किंतु उसको विजय करने में असफल रहते थे यहाँ तक कि हम निराश होने लगते थे कि अब यह दुर्ग हम विजय नहीं कर पाएंगे, कि इसी बीच उस क़िला में रहने वाले लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देना तथा आपका अपमान करना शुरू कर देते, और ऐसा होते ही हमारे लिए उसे विजय कर लेना बिल्कुल सरल हो जाता, इस प्रकार की घटना के बाद एक या दो दिन के भीतर ही बल पूर्वक वह स्थान खोल दिया जाता तत्पश्चात हम महायुद्ध लड़ते, वो कहते हैं कि हमें यदि पता चल जाता कि वो लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान कर रहे हैं तो उनकी बातों से हम क्रोध से भर जाते किंतु साथ-साथ हमें यह भी विश्वास हो जाता कि इसे विजय कर

---

[1] इसे बुख़ारी (३६१७) व मुस्लिम (२७८१) ने रिवायत किया है।

[2] अल-स़ारिम अल-मसलूल (२३३)।

लेना अब अधिक दूर नहीं है, मानो उनका नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देना उनके पराजय की शुरूआत होती थी"।[1]

ख़लीफ़ा[2] हारून रशीद ने इमाम मालिक रहिमहुल्लाह से उस व्यक्ति के विषय में पूछा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देता है ... साथ ही यह भी उल्लेख किया कि इराक़ के फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने यह फ़त्वा दिया है कि ऐसे व्यक्ति को कोड़ा मारा जाए, यह सुन कर इमाम मालिक रहिमहुल्लाह क्रोधित हो गए और कहाः हे अमीरुल मोमिनीन!

उस उम्मत के जीवित रहने का क्या लाभ जिसके नबी को गाली दिया गया हो?!

जिसने नबी को गाली दी वह क़त्ल किया जाएगा!!

जिसने नबी को गाली दी उसका वध किया जाएगा!!

क़ैरवान (Kairouan) के फ़ुक़हा तथा सहनून के शिष्यों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपहास करने के कारण इब्राहीम अल-फ़ज़ारी जोकि एक माहिर व दक्ष कवि था उस के वध का फ़त्वा दिया था, यह भी कहा जाता है कि उसके क़त्ल (वध) तथा सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया गया था, अतः सर्वप्रथम चाकू के वार से उसका वध किया गया तत्पश्चात उल्टा लटका कर सूली पर चढ़ा दिया गया, फिर सूली से उतार कर आग में जला कर भस्म कर दिया गया।

कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि जब उसका नाश (अर्थी को) उठाया गया तथा उसके बंधन को खोला गया तो उसकी लाश क़िबला के विपरीत दिशा में घूम गई जो लोगों के लिए इबरत (चेतावनी) व निशानी थी (कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपहास करने वालों का क्या हाल होता है), यह देख कर लोग नारा -ए- तकबीर (अल्लाहु अकबर) बुलंद करने लगे, इसी बीच एक कुत्ता आया और उस की लाश को चीरने-फाड़ने लगा।[3]

अंदलुस के फ़ुक़हा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने, तथा मुनाज़रा (वाद-विवाद) के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ससुर होने एवं यतीम होने का ताना देने के कारण, इब्ने हातिम अल-तुलैतुली के क़त्ल (वध) तथा सूली पर चढ़ाने का फ़त्वा दिया था।

इमाम ज़हबी ने "सियरो आलाम अन्नुबला" में उल्लेख किया है कि क़ैरवान के क़ाज़ी[4] (न्यायकर्ता) मुहम्मद बिन अबुल मंज़ूर अल-अंसारी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने के कारण एक यहूदी को उस वक्त तक मारने का आदेश दिया जब तक कि वह मर न जाए।

---

[1] अल-सारिम अल-मसलूल (२३३)।

[2] मुस्लिम राष्ट्र में एक सर्वोच्च पद जिसपर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उत्तराधिकारी नियुक्त होता था और संसार भर के मुसलमानों का नेता माना जाता था।

[3] अल-शफ़ा बि तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा (२/ २१८)।

[4] मुस्लिम धर्म अर्थात शरीअत के अनुसार धर्म-अधर्म संबंधी विवादों पर न्याय करने वाला।

इब्ने तैमीय्य रहि़महुल्लाह आदि ने इस बात पर उलेमा का इज्मा (एकमत होना) नकल किया है कि जो व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली दे उस को क़त्ल कर दिया जाएगा चाहे वह मुस्लिम हो या काफ़िर।

इब्ने तैमीय्या रहि़महुल्लाह कहते हैं किः "आम उलेमा अर्थात इस्लामिक विद्वानों का यही मत है"।

इब्नुल मुंज़िर रहि़महुल्लाह कहते हैं किः "सभी उलेमा इस बात पर एकमत हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले की सजा (दंड) क़त्ल है, जिन लोगों ने यह बात कही है उनमें इमाम मालिक, लैस़, अह़मद एवं इस्ह़ाक़ रहि़महुमुल्लाह हैं, तथा यही इमाम शाफ़ई रहि़महुल्लाह का मज़हब (मत) है"।

इमाम ख़त्ताबी रहि़महुल्लाह कहते हैं: "मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि किसी मुसलमान ने उस (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले) को क़त्ल करने के विषय में मतभेद किया है", उनके कहने का अर्थ यह है कि इस मसला पर सभी उलेमा एकमत हैं।

मुह़म्मद बिन सह़नून कहते हैं किः "सभी उलेमा इस बात पर एकमत हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने वाला, आप को गाली देने वाला, काफिर है, तथा अल्लाह तआला ने जिन लोगों को घोर यातना देने की चेतावनी दी है उनमें वह भी शामिल है, और उम्मत के निकट उसका हुक्म यह है कि उसे क़त्ल कर दिया जाए, और जो मुस्लिम ऐसे (अपमान करने वाले) व्यक्ति के कुफ्र में संदेह करे वह भी काफ़िर है"।

क़ाज़ी अयाज़ रहि़महुल्लाह ने अल-शफ़ा बि तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस़्तफ़ा में ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर देने पर उलेमा का इज्मा (एकमत होना) नकल किया है, वह कहते हैं किः "जो भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली दे, या आप में दोष निकाले, या आपकी भर्त्सना करे, या आपको शारीरिक व धार्मिक रूप से बुरा-भला कहे, अथवा आपकी किसी विशेषता में कमी निकाले, या किसी बुरे विशेषण का आप के लिए प्रयोग करे, या आपकी शान में गुस्ताख़ी करे, आपके लिए अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करे, या आप पर लांछन लगाए, या आपका अनादर करे, संक्षेप में कहें तो किसी भी प्रकार से यदि आपका अपमान करता है तो वास्तव में वह आपको गाली देने वाला माना जाएगा, और उसका वही अंजाम होगा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले का होता है, अर्थात उसे क़त्ल कर दिया जाएगा"।[1]

शैख़ुल इस्लाम ने अल-स़ारिम अल-मसलूल में -नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करने वाला इस योग्य है कि उसका वध कर दिया जाए-, इस संबंध में सभी संप्रदायों के उलेमा के कथनों का उल्लेख करने के पश्चात कहते हैं किः "इसमें कोई अंतर नहीं है कि अपमान करने वाले ने ऐसा सउद्देश्य किया हो अथवा निरुद्देश्य, अर्थात जानबूझकर ऐसा किया हो चाहे अंजाने में हँसी-ठट्ठा और परिहास करते हुए"।

[1] अल-शफ़ा बि तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस़्तफ़ा (२/ २१८)।

वह आगे लिखते हैं किः

"निःसंदेह अल्लाह को या उसके रसूल को गाली देना छुपा हुआ और खुला हुआ दोनों अर्थों में कुफ्र है, यद्यपि गाली देने वाला यह समझता हो कि ऐसा करना ह़राम (अवैध) है अथवा यह समझता हो कि ऐसा करना ह़लाल (वैध) है, या इस आस्था व एतक़ाद को भूल कर ऐसा किया हो, यही फ़ुक़हा तथा उन सभी अहले सुन्नत का मत है जिनका कहना है कि ईमान कर्म तथा कथन दोनों के मिश्रण का नाम है"।[1]

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ रह़िमहुल्लाह "मजमूअ अल-फ़तावा" में कहते हैं किः

"कोई भी व्यक्ति जो अल्लाह को या उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को या अन्य किसी और रसूल को किसी भी प्रकार की गाली देता (अपशब्द, अशिष्ट बात, दुर्वचन कहता) है, या अपमान करता है, या अल्लाह अथवा उसके रसूल का उपहास करता है तो सभी मुसलमान एकमत हैं कि ऐसा करने वाला काफ़िर और इस्लाम से निष्कासित है यद्यपि वह मुसलमान होने का गुमान रखे"।

सऊदी अरब का फ़त्वा आयोग "अल-लज्ना अल-दाइमा" ने भी अल्लाह तआला या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले के काफ़िर होने का फ़त्वा दिया है, मूल फ़त्वा का उल्लेख निम्न में किया जा रहा हैः

"रिद्दत का अर्थ होता है इस्लाम से फिर जाना, जोकि कथन, कर्म, एतक़ाद (आस्था) या शक करने के द्वारा होता है, अतः जिसने अल्लाह तआला के संग किसी और को साझीदार माना ..., अथवा अल्लाह को या उसके रसूल को गाली दी ..., या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चा होने में संदेह व्यक्त करे या आपके सिवाय अन्य किसी और नबी के सच्चा होने में संदेह करे तो ऐसा आदमी काफ़िर है तथा वह इस्लाम छोड़ कर मुर्तद्द हो गया"।

शैख़ मुहम्मद बिन स़ालेह़ अल-उ़सैमीन रह़िमहुल्लाह ने "लिक़ाउल बाबिल मफ़्तूह" में इसी को कथन को राजेह़ अर्थात सबसे सही कहा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले को कत्ल किया जाएगा यद्यपि वह बाद में तौबा (पश्चाताप) ही क्यों न कर ले।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वाले के तौबा को अस्वीकार्य होने तथा अल्लाह तआला को गाली देने वाले के तौबा को स्वीकार्य होने में क्या अंतर है, जब्कि अल्लाह तआला का ह़क़ (अधिकार) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ह़क़ की तुलना में बड़ा है, शैख़ इब्ने उ़सैमीन रह़िमहुल्लाह दोनों के मध्य अंतर बताते हुए कहते हैं किः "निःसंदेह अल्लाह का हक सबसे बड़ा है, किंतु अल्लाह तआला ने अपने बारे में हमें यह सूचना दी है कि वह तौबा करने वालों की तौबा को क़बूल करता है, और यह अल्लाह तआला का अधिकार है कि जब वह स्वयं को गाली देने वाले बंदे की तौबा को क़बूल लेता है तो (उसमें अब हम कुछ नहीं कर सकते) इस प्रकार से यह अल्लाह तआला का अपना

[1] अल-स़ारिम अल-मसलूल (२/ ३८)।

मामला है, जब्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई व्यक्ति यदि गाली देता है तो (उससे बदला लेने का) ह़क़ किसका है? (यह ह़क़ है) रसूल का, और हम नहीं जानते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको माफ़ किया अथवा नहीं, क्योंकि आप वफ़ात पा चुके हैं, अतः हमारे ऊपर वाजिब व अनिवार्य है कि हम आपका बदला लें तथा ऐसे गाली देने वाले व्यक्ति को क़त्ल करें"।

जिसने इस महान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अपमान किया (इसका अर्थ यह है कि) उसने आपको भलि-भांति जाना ही नहीं एवं न ही आपके सदगुणों, श्रेष्ठता, महत्ता तथा प्रधानता का उसे कुछ भान है।

अल्लाह तआला ने आपके गुणों का उल्लेख करते हुए कहाः

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝٤﴾ (निःसंदेह आप नैतिकता के उच्चतम मापदंड पर विराजमान हैं)। सूरह अल-क़लमः ४।

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا مُبَشِّرٗا وَنَذِيرٗا ۝٥٦﴾ (हमने आप को शुभ-समाचार देने वाला तथा डराने वाला बना कर भेजा है)। सूरह अल-फ़ुर्क़ानः ५६।

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ ۝١٠٧﴾ (हमने आप को समस्त संसार के लिए रह़मत (दया, कृपा) बना कर भेजा है)। सूरह अल-अंबियाः १०७।

﴿لَقَدۡ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ إِذۡ بَعَثَ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡ أَنفُسِهِمۡ ۝١٦٤﴾ (अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा)। सूरह आले इमरानः १६४।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ (अल्लाह तथा उस के फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर, हे ईमान वालों, उन पर दरूद तथा अधिकाधिक सलाम भेजो)। सूरह अल-अह़ज़ाबः ५७।

अल्लाह की क़सम ये लोग यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सही ढ़ंग से जान लेते तो कोई भी व्यक्ति आप के विरुद्ध एक शब्द भी लिखने का दुस्साहस नहीं करता।

कहने वाले ने क्या बढ़िया बात कही हैः

तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बुराई की तो मैंने उनकी ओर से उत्तर दिया, और इसका बदला मुझे अल्लाह के यहाँ मिलेगा।

तुमने निंदा की नेक (सदाचारी), मुबारक तथा अति धार्मिक व्यक्ति की, जो अल्लाह की वह़्य के अमीन हैं तथा जिनकी विशेषता वफ़ादारी करना है।

मेरे पिता, मेरे दादा तथा स्वयं मेरा सम्मान, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्मान की रक्षा के लिए समर्पित है।

आप तो वह हैं जिनकी मुबारक हथेली पर कंकड़ ने तस्बीह़ पढ़ा!

आप तो वह हैं जिनके लिए चंद्रमा दो टुकड़े हुआ!

आप तो वह हैं जिनसे दरिंदे एवं पशु ने वार्तालाप किया!

आप तो वह हैं जिनके समक्ष पेड़ ने झुक कर सलामी दी!

आप तो वह हैं जिनके लिए वृक्ष का धड़ रोता था!

आप तो वह हैं जिनको पत्थरों एवं वृक्षों ने सलाम किया!

आप तो वह हैं जिनकी उँगलियों के बीच से पानी को फव्वारा फूट पड़ा!

ह़लीमी रह़िमहुल्लाह कहते हैं: "कुछ उलेमा का कहना है कि आप के मोअजज़ात (चमत्कारों) की संख्या एक हज़ार के आस-पास है"।

आपके नबूवत को प्रमाणित करने के लिए किसी लड़ाई-झगड़ा की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपकी नबूवत (दूत होने) का इंकार वास्तव में अल्लाह तआला की रुबूबियत व उलूहियत का इंकार है, बल्कि इससे बढ़ कर पिछली समस्त आसमानी किताबों एवं नबियों का इंकार है क्योंकि इन लोगों के सही अक़ीदा व आस्था का ज्ञान हमें केवल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से ही मिला है, इसी प्रकार से सभी नबियों ने भविष्य में आप के आने की शुभ-सूचना दी थी, अतः आप के नबी होने का इंकार करना दरअसल आपके पहले आने वाले नबियों का इंकार करना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने नबी होने के स्पष्ट आयात (निशानियां) एवं बड़ी-बड़ी दलीलें ले कर आए जिनको आपके पहले कोई नबी ले कर नहीं आए थे, तो इन प्रमाणों एवं निशानियों के बावजूद यदि आपकी नबूवत का इंकार किया जाए तो आपके पूर्व के नबियों का इंकार तो इससे अधिक सरलता से किया जा सकता है।

अंत में अल्लाह तआला से मैं प्रार्थनारत हूँ कि वह इस पुस्तक को लोगों के लिए लाभदायक बना दे, तथा इसे केवल अपनी प्रसन्नता के लिए स्वीकार कर ले, तथा इसकी लेखिका, प्रकाशक, प्रचारक, वितरक तथा विभिन्न भाषाओं में इसका अनुवाद करने वाले अनुवादकों, हमारे माता-पिता, परिवार वालों तथा हमारी नस्लों के अज्र व स़वाब को दोगुना-चौगुना कर दे, मैं अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि वह हमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ह़ौज़ (कुंड) तक पहूँचाए तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक (शुभ) हाथों से पीने का शुभ अवसर प्रदान करे कि जिसके बाद हम कभी प्यासे न हों,

हे अल्लाह, तू हमें सुन्नत एवं सीधे मार्ग पर अडिग रखना यहाँ तक कि हम तुमसे भेंट कर लें, निःसंदेह तू अत्यंत निकट तथा बड़ा सुनने वाला है।

وصلي الله وسلم علي نبينا محمد وعلي آله وصحبه وسلم

लेखिकाः

क़ज़ला बिंत मुहम्मद अल-क़हतानी

ईद मीलादुन्नबी ﷺ मनाना कैसा है?

लेखिका:

डॉक्टर क़ज़ला बिंत मुहम्मद अल-क़हतानी

अनुवाद:

साबिर हुसैन मुहम्मद मोजीबुर रहमान

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله، أرسله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله وكفى بالله شهيدا.

أرسله بين يدي الساعة بشيرا ونذيرا، وداعيا إلى الله بإذنه وسراجا منيرا، فهدى به من الضلالة، وبصر به من العمى، وأرشد به من الغي، وفتح به أعينا عميا، وآذانا صما، وقلوبا غلفا، فبلغ الرسالة وأدى الأمانة، ونصح الأمة، وجاهد في الله حق جهاده، وصلى الله عليه وعلى آله وسلم تسليما.

وبعد:

समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं हम उसकी ही प्रशंसा करते हैं एवं उससे ही सहायता मांगते हैं, हम उससे अपने पापों की क्षमा चाहते हैं तथा उसके समक्ष तौबा करते हैं, हम अपनी जान की बुराइयों एवं अपने कर्म की बुराइयों से अल्लाह की शरण चाहते हैं, जिसको अल्लाह हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) नहीं कर सकता एवं जिसे दिगभ्रमित कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा माबूद (उपास्य, पूज्य) नहीं वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदा व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) हैं जिन्होंने अमानत अदा कर दिया एवं उम्मत को नसीहत (सदुपदेश, सलाह) कर दी, एवं अल्लाह के मार्ग में पूर्णरूपेन प्रयासरत रहे और उसका हक़ अदा कर दिया, आप तथा आपके परिवार वालों पर अधिकाधिक अल्लाह तआला का दरूद व सलाम उतरे।

इन समस्त प्रशंसाओं के पश्चातः

इस्लाम के दो महान एवं अति महत्वपूर्ण मूल आधार हैं:

प्रथमः अल्लाह तआला के लिए इख़्लास़ (निष्ठा) अपनाना।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿فَمَن كَانَ يَرۡجُواْ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلٗا صَٰلِحٗا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدَۢا ١١٠﴾ (जो अपने रब वा पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिए कि सदाचार करे, तथा अपने रब की इबादत व पूजा में किसी को उसका साझीदार न बनाए)। सूरह अल-कहफः ११०।

द्वितीयः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सुन्नत व तरीका की पैरवी व अनुसरण करना।

इब्नुल क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "यही वह अमल (कर्म) है जो मक़बूल व स्वीकार्य है, जिसके सिवाय अल्लाह तआला अमल को स्वीकार नहीं करता है, वह यह है कि कर्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार हो तथा इस के द्वारा केवल अल्लाह तआला की ही रज़ा व प्रसन्नता चाही गई हो"।

शैख़ इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "ज्ञात हो कि मुताबअत (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए अनुसार कर्म करना) उस समय तक पूर्ण नहीं होगी जब तक कि वह छः मामलों में सुन्नत के अधीन न होः कारण (सबब), जिंस (जाति, किस्म), संख्या, कैफियत (ढ़ंग), समय एवं स्थान, कोई भी कर्म यदि इन छः मामलों में सुन्नत की मंशा के अनुसार न हो तो बातिल, मरदूद तथा व्यर्थ व बेकार है, क्योंकि उसने दीन (-ए- इस्लाम) में ऐसी चीज़ (नवाचार) ईजाद की जो उसमें नहीं थी"।[1] उनका कथन समाप्त हुआ।

इससे यब बात प्रमाणित होती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का अर्थ यह है किः आपको सच्चा मानना, आपका अनुसरण करना तथा आपकी लाई हुई शरीअत का पालन करना।

ये ऐसे स्तम्भ हैं जिन पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का आधार है।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "जिस (शरीअत) को ले कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आए हैं उस का इकरार करना बंदे के लिए वाजिब है, जो क़ुरआन -ए- अज़ीज़ अथवा विदित सुन्नत ले कर आप आऐ हैं संक्षिप्त जब्कि ज्ञात हो जाने पर विस्तारित रूप में उस का इकरार करना बंदा के लिए वाजिब है, कोई भी व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह उस चीज़ का इकरार न कर ले जिस को ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आए हैं, और वह है वास्तविक एवं विशुद्ध रूप में इस बात की गवाही देना कि अल्लाह तआला के सिवाय कोई सच्चा पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, अब जिसने इस बात की गवाही दी कि आप अल्लाह के रसूल हैं उसने इस बात की भी गवाही दी कि आपने अल्लाह तआला के संबंध में जो कुछ हमें सूचना दी है उन सभी में आप सच्चे हैं, आपकी रिसालत की शहादत को मुहक़्क़क़ करने (विशुद्ध रूप से सभी शर्तों का पालन करते हुए आपके रसूल होने की गवाही देना) का यही अर्थ है।[2] उनका कथन समाप्त हुआ।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿ ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗا ٣ ﴾ (आज हमने आपके लिए आपके धर्म को परिपूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी नेमतें (अनुग्रह, पुरस्कार) पूरा कर दिया, और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया)। सूरह अल-माइदाः ३ ।

अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेज कर पिछली सभी शरीअतों (धर्मों) को रद्द व समाप्त कर दिया, जिस नबी ने भलाई की हरेक बात अपनी उम्मत को बता दी तथा बुराई की हरेक बात से अपनी उम्मत को सावधान कर दिया, और अपने आज्ञा का पालन करने तथा आपके बताए हुए

---

[1] शर्हुलअरबईन अन्नौवीय्या (९८), इसी से संबंधित शैख़ रहिमहुल्लाह की एक अनमोल पुस्तक है जिसका विषय हैः अल-इब्दाअ फ़ी कमालिश्शर्अ व ख़तरिल इब्तेदाअ।

[2] मज्मूअ अल-फ़तावा (५/ १५४)।

मार्ग पर चलने का आदेश दिया, तथा आपका अनुसरण करने को आपसे प्रेम रखने व सच्चा होने का चिह्न बताया।

अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ٣١﴾ (हे नबी, कह दीजिए, यदि तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा, तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह आले इमरानः ३१।

अल्लाह तआला ने एक स्थान पर इर्शाद फ़रमाया है: ﴿وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِي مُسۡتَقِيمٗا فَٱتَّبِعُوهُۖ وَلَا تَتَّبِعُواْ ٱلسُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمۡ عَن سَبِيلِهِۦۚ ذَٰلِكُمۡ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٥٣﴾ (-उसने बताया है कि- यह दीन व धर्म मेरा मार्ग है जोकि बिल्कुल सीधा है, अतः इसी पर चलो, और दूसरे मार्गों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उसके मार्ग से दूर कर के तित्तर-बित्तर कर देंगे, यही है जिसका आदेश उसने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो)। सूरह अल-अन्आमः १५३।

अल्लाह तआला ने अपने नबी से प्रेम करने को हमारे लिए वाजिब व अपरिहार्य कर दिया है, चुनाँचे किसी भी बंदे का ईमान उस समय तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपने आप से, अपने धन, अपनी संतान तथा सभी लोगों से अधिक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम न रखे, अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: «لا يؤمنُ أحدُكم حتى أكونَ أَحبَّ إليه من ولدِه، ووالدِه، والناسِ أجمعينَ» "तुम में से कोई भी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसकी संतान, उसके माता-पिता तथा सभी लोगों से अधिक प्रिय न हो जाउं"।[1]

आप से प्रेम करने का लाजमी अर्थ यह है कि आपका अनुसरण किया जाए, आपके बताए हुए मार्ग पर चला जाए तथा किसी भी रूप में आपकी लाई हुई शरीअत का उल्लंघन न किया जाए, इसके साथ-साथ यह ईमान रखा जाए कि आपने दीन -ए- इस्लाम को पूर्णरूपेण व सही ढ़ंग से लोगों तक पहूँचा दिया, रिसालत (दूत होने) का हक अदा कर दिया तथा हमें बिद्अत (नवाचार) से सावधान कर दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: «من أحدث في أمرنا هذا ما ليس منه فهو رد» "जिसने हमारे धर्म में ऐसी बात ईजाद की जिसका आदेश मैंने नहीं दिया था तो वह मरदूद (बहिष्कृत) है"।[2]

मुस्लिम की एक रिवायत में इस प्रकार आया है: "जिसने कोई ऐसा कार्य किया जिसके करने का आदेश हमारी शरीअत में नहीं है तो वह कार्य मरदूद (बहिष्कृत) है"।

---

[1] इस ह़दीस़ को इमाम बुख़ारी (१५) ने रिवायत किया है।

[2] इस ह़दीस़ को इमाम बुख़ारी (२६९७), एवं इमाम मुस्लिम (१७१८) ने रिवायत किया है।

इब्ने रजब रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "बिद्अत से अभिप्राय है हरेक वह चीज़ जो इस धर्म में ईजाद की जाए जब्कि इस्लामी शरीअत में उसकी कोई दलील न हो"।

उन्हीं का यह कथन भी है किः "जिसने कोई नई बात ईजाद की तथा उसका संबंध दीन से जोड़ दिया जब्कि दीन में उसकी कोई दलील नहीं है तो वह गुमराही एवं पथभ्रष्टता है, चाहे उस मसले का संबंध ऐतक़ाद (श्रद्धा) से हो, कर्म से हो अथवा कथन से हो"।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ٣١﴾ (हे नबी, कह दीजिए, यदि तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा, तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है)। सूरह आले इमरानः ३१ ।

अतः इस बात का ध्यान रहे कि हरेक प्रकार की भलाई, परोपकार एवं अडिगता व दृढ़ता अनुसरण करने में है, बिद्अत (नवाचार) में नहीं।

बड़े दुःख की बात है कि यह उम्मत वर्तमान में जिन कठिनाइयों व आज़माइशों का सामना कर रही है उसमें से एक १२ रबीउल अव्वल को त्योहार के रूप में मनाना भी है, यह गुमान रखते हुए कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्मदिन है, इसको उन लोगों ने ऐसे ईद के रूप में प्रचारित कर रखा है जो हर वर्ष एक बार मनाई जाती है, और इस दिन ऐसे अनुष्ठान, रस्मो रिवाज तथा इबादतें अंजाम देते हैं जिनका कोई प्रमाण न तो क़ुरआन में है और न ही ह़दीस़ में है, चूँकि कुछ लोगों को यह अच्छा लगा अतः उन्होंने इसे बंदों के लिए शरीअत बना दिया जिसकी अल्लाह तआला ने कोई दलील नहीं उतारी है।

ज्ञात हो कि मिलादुन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मनाने को जायज़ कहना सह़ी दलीलों एवं शरीअत के मूल उद्देश्य के विरुद्ध है, इस को प्रमाणित करने के लिए हम निम्न में कुछ दलीलों का उल्लेख करेंगे जिनको पढ़ कर हर बुद्धिजिवी को इसके सही न होने का एहसास हो जाएगा। (इन शा अल्लाह)।

अल्लाह से सहायता चाहते हुए तथा उस पर ही भरोसा करते हुए मैं अपनी बात आरंभ करती हूँ:

मिलादुन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मनाना के नाजायज़ एवं बिद्अत होने के प्रमाणः

पहलाः ऐसी बिद्अत (नवाचार) है जिसे न तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने और न ही ताबेईन रहिमहुमुल्लाह ने औ न ही उनके बाद के लोगों ने इसे मनाया, जब्कि उनका युग ख़ैरुल क़ुरून (सर्वोत्तम युग) था, और हमारी तुलना में वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक प्रेम रखने वाले तथा उनका अनुसरण करने वाले थे।

ईद मीलादुन्नबी मनाना यदि दीन -ए- इस्लाम का एक अभिन्न अंग होता तो यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पूर्व भी मनाया जाता, और यदि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

जीवन काल में दीन -ए- इस्लाम का अभिन्न अंग नहीं था तो यह आज भी दीन का हिस्सा नहीं माना जाएगा।

यह सर्विदित है कि इसका आरंभ चौथी शताब्दी में हुआ, और हरेक वह कार्य जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एवं सलफ़ (नेक पूर्वजों) ने (दीन समझ कर) नहीं किया उसमें किसी प्रकार की कोई भलाई नहीं हो सकती, क्योंकि यदि इसमें किसी प्रकार की भलाई होती तो वो इस मामले में हम से आगे होते।

ह़ाफ़िज़ सख़ावी रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "ईद मीलादुन्नबी मनाना प्रारंभ के तीन सर्वोत्तम शताब्दी के किसी भी सलफ़ (नेक पूर्वज व उलेमा) से प्रमाणित नहीं है, बल्कि यह उसके बाद अस्तित्व में आया है"।[1]

इमाम शौकानी रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "ईद मीलादुन्नबी मनाने की कोई दलील मुझे अभी तक नहीं मिली है, न तो क़ुरआन से, न ह़दीस़ से, न इज्मा (उलेमा का किसी मसले पर एकमत होना) से, न क़्यास[2] (चिन्तन-मनन) से और न ही इस्तिदलाल[3] से, बल्कि इसके विपरीत प्रारंभिक ख़ैरुल क़ुरून (सर्वोत्तम युग) में इसका कोई अस्तित्व ही नहीं था"।[4]

इस बिद्अत का आरंभ उबैदीय्या शासन काल जिसे फ़ात़मीय्या शासनकाल भी कहा जाता है में हुआ, वास्तव में लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए इस बिद्अत का आरंभ किया गया था, बाह्य (ऊपरी) तौर पर यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम रखने का दिखावा करता था, जब्कि इसी शासन काल में इलह़ाद (नास्तिकता), ज़ंदक़ा (अधर्मिता), तशय्युअ (शीया धर्म) व आले बैत (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के लोग) से मोहब्बत की आड़ में सर्वाधिक फला-फूला व समृद्ध हुआ, इन लोगों ने छः मीलाद (जन्मदिन) का अविष्कार किया थाः मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), मीलादे अली (रज़ियल्लाहु अन्हु), मीलादे फ़ात़िमा (रज़ियल्लाहु अन्हा), मीलादे ह़सन व हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) तथा उस समय के वर्तमान शासक की मीलाद, उन्हीं लोगों ने इसका प्रचार-प्रसार किया और जिसे सूफियों ने इसे हाथों-हाथ लिया।[5]

ऐसा भी कहा जाता है कि इरबिल वासियों ने उनसे इस बिद्अत को अपनाया।

सर्वविदित है कि मुसलमानों के केवल दो ईद हैं: ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़्ह़ा, इसके अतिरिक्त इस्लाम में किसी तीसरी ईद का अविष्कार करना जायज़ नहीं है।

---

(1) अल-अजविबा अल-मर्ज़ीय्या फ़ीमा सुईला अल-सख़ावी अन्हु मिन अल-अह़ादीस़ अल-नबवीय्या (३/ ११९६)।

(2) किसी मसले में क़ुरआन व ह़दीस़ से स्पष्ट दलील नहीं मिलने पर उसी के समान किसी मूल मसला को सामने रख कर आत्मज्ञान, अनुमान तथा स्वविवेक से किसी मुफ्ती का उस विषय में अपनी राय कायम करना क़्यास कहलाता है।

(3) किसी वांछनीय मसले में सही राय तक पहूँचने के लिए दलील ढूँढ़ कर लाना।

(4) रिसाला फ़ी हुक्मिल मौलिद, उन्हीं की एक और पुस्तक मज्मूउल फ़त्ह़ अल-रब्बानी के अंतर्गत यह पुस्तक है (२/ १०८७)।

(5) देखें : अल-इब्दाअ फ़ी मज़ार्रिल इब्तेदाअ (२५०) तथा उसके बाद के पृष्ठ।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह कहते हैं कि जाहिलीय्यत युग में रहने वालों के लिए त्योहार के दो दिन थे जिनमें वो खेल-कूद करते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना पधारे तो आपने फ़रमायाः "तुम लोगों के पर्व के दो दिन थे जिनमें तुम खेल-कूद करते थे, अब अल्लाह तआला ने उन दो दिनों को उनसे उत्तम दो दिनों से बदल दिया है जोकिः ईदुल फ़ित्र तथा ईदुल अज़्हा हैं"।[1]

शैख़ुल इस्लाम रहि़महुल्लाह कहते हैं किः

"इस दिन को ईद व पर्व के रूप में मनाना बिद्अत है क्योंकि इसका कोई प्रमाण शरीअत में नहीं है, न तो सलफ़, अहले बैत और न इनके सिवाय किसी और ने इस दिन को पर्व के रूप में मना कर इस दिन कुछ विशेष कर्मों को अंजाम दिया है, क्योंकि ईद का दिन तय करना भी शरीअत का ही एक अंग है, अतः इस मामले में भी शरीअत के बताए मार्ग का ही अनुसरण करना होगा न कि बिद्अत ईजाद किया जाएगा"। उनका कथन समाप्त हुआ।[2]

दूसराः इसमें अहले किताब की समानता पाई जाती है।

वास्तव में जन्मदिन मनाना ईसाईयों का स्वाभाव है, उनसे यह आदत हममें से कुछ कमजोर ईमान वाले मुसलमानों ने अपना लिया, इस आधार पर देखा जाए तो जाने-अंजाने हमने अपने शत्रुओं की आदत को अपना लिया है।

शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम रहि़महुल्लाह कहते हैं किः "ईद मीलादुन्नबी मनाना दीन में बिद्अत ईजाद करना है जिसका कोई प्रमाण इस उम्मत के प्रारंभिक काल में नहीं मिलता है, ज्ञात हो कि किसी समय अथवा स्थान का किसी दूसरे समय या स्थान की तुलना में (बिना दलील के) अधिक सम्मान करना बाति़ल व निराधार है"।[3]

तीसराः इस प्रकार के समारोहों में फ़िज़ूलखर्ची, अपव्यय तथा गुनाह व बुरे कामों का पाया जाना।

सुयूती रहि़महुल्लाह ने अपनी पुस्तक "अल-ह़ावी" में इसके लिए एक उदाहरण का उल्लेख किया है, चुनाँचे वह लिखते हैं किः "मलिक मुज़फ़्फ़र ही वह व्यक्ति है जिसने ईद मीलादुन्नबी मनाने की बिद्अत ईजाद की, उसने ऐसे ही मीलादुन्नबी के एक अवसर पर एक दस्तरख़्वान तैयार करवाया जिस पर पाँच हज़ार बकरियों के भुने हुए सिर, दस हज़ार मुर्गी, एक सौ घोड़ा, एक लाख कटोरा मक्खन तथा तीस हज़ार प्लेट में ह़लवा व मिठाई रखवाया, और समाअ (संगीत की मजलिस, सभा) के लिए सूफ़ियों के एक समूह को आमंत्रित किया जिसमें ज़ुह्र से ले कर फज्र तक वह स्वयं सूफ़ियों के संग नाचता रहा"।[4]

---

[1] इस ह़दीस़ को अबू दाऊद व नसई ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे सही कहा है।

[2] इक़्तेज़ाउस़्स़िरातुल मुस्तक़ीम लि मुख़ालिफ़ति अस़्हाबिल जह़ीम (२/ १२३)।

[3] फ़तावा व रसाइल समाह़तुश्शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम (३/ ५३)।

[4] अल-ह़ावी लि अल-फ़तावी (१/ २२२)।

नाच गाने के ऐसे समारोहों की व्यवस्था लोग यदि यह सोच कर करते हैं कि इसके द्वारा वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा (कृतज्ञताज्ञापन) करते हैं कि उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल बना कर उनके बीच भेजा तो ऐसे लोगों को याद रखना चाहिए कि नाच-गाना एवं इस प्रकार के उद्दंडता के द्वारा नेमतों का शुक्र अदा नहीं किया जाता है।

चौथाः किसी व्यक्ति विशेष के बारे में अतिश्योक्ति से काम लेना।

शातबी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "बिद्अत को जायज़ ठहराने के लिए कुछ लोग इस उम्मत में बाद में पैदा होने वाले लोगों के अमल व कर्म को दलील बनाते हैं, यद्यपि वह शरीअत के विरुद्ध ही क्यों न हो, एवं हक़ की खोज करने के स्थान पर व्यक्ति विशेष के पक्षधर बन जाते हैं, (यद्यपि उस व्यक्ति विशेष का वह कर्म शरीअत के विरुद्ध ही क्यों न हो, वह उसके पक्षधर केवल इसलिए हो जाते हैं कि यह बात अमूक व्यक्ति ने कही है जो हमारे निकट अत्यंत सम्मानित हैं)"।

वह अपने कुछेक गुरूओं से नकल करते हुए आगे लिखते हैं किः "जब बिद्अत एवं शरीअत विरुद्ध कार्य किसी समाज में रिवाज पा जाए, तो अज्ञानी लोग (उसको प्रमाणित करने के लिए) कहते हैं : ऐसा करना यदि मुंकर व शरीअत विरुद्ध होता तो अमूक व्यक्ति ऐसा नहीं करता"।[1] उनका कथन समाप्त हुआ।

शौकानी रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "बिद्अत व नवाचार समाज में आग फैलने से भी अधिक तेज़ी के साथ फैलता है, क्योंकि मानव जाति नैसर्गिक रूप से इस प्रकार के कर्मकांडों की ओर आकर्षित होती है"।[2]

पाँचवां: यह महीना वास्तव में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु का महीना है।

क्योंकि पूर्ण रूप से यह प्रमाणित नहीं हो सका कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म इसी मास में हुआ था जब्कि (यह बात प्रमाणित है कि) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु इसी मास में हुई थी।

क्या आपकी मृत्यु के मास को उत्सव के रूप में मनाना उचित है?!!

क्या इस मास में उत्सव मनाने के स्थान पर शोक मनाना उचित नहीं है?!!

इसीलिए इब्नुल हाज्ज कहते हैं: "बड़े आश्चर्य की बात है कि ये लोग कैसे इस दिन गाना-बजाना, ख़ुशी मनाना एवं उत्सव का आयोजन करते हैं यह मानते हुए की इसी दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए थे, जब्कि इसी मास में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु की दुखद घटना घटी थी जो इस उम्मत के लिए व्यथा एवं विपदा थी, बल्कि इस उम्मत को ऐसी पीड़ा पहूँची जिसके समक्ष बड़ी

---

[1] अल-ऐतसाम (२/ ८७०)।

[2] मीलादुन्नबी के विषय पर लिखी गई पुस्तिका जोकि उनकी एक और पुस्तक मजमूउल फ़त्ह अल-रब्बानी (२/ १०८९) के साथ प्रकाशित है।

से बड़ी पीड़ा भी तुच्छ है, इस आधार पर होना तो यह चाहिए था कि लोग ऐसे समय में दुखी होते और रोते, क्योंकि हरेक मुस्लिम व्यक्ति के लिए यह ऐसी निजी हानि है जिसकी भरपाई असंभव है"।[1]

छठा: पूर्वोल्लेखित की तुलना में यह सबसे अधिक ख़तरनाक है, कि इस प्रकार के उत्सव के आयोजन से शिर्क व बिद्अत का प्रचार-प्रसार होता है।

जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ग़ुलू व अतिशयोक्ति से काम लेना, आप से मदद मांगना तथा अल्लाह के छोड़ कर आप से दुआ करना।

जब्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है: «لاَ تُطْرُونِي، كَمَا أَطْرَتْ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا عَبْدُ اللَّهِ، وَرَسُولُهُ» "मेरे बारे में उस प्रकार से ग़ुलू व अतिशयोक्ति न करना जिस प्रकार से ईसाईयों ने (ईसा) पुत्र मरियम के बारे में ग़ुलू किया था, मैं अल्लाह का बंदा हूँ, अतः मुझे अल्लाह का बंदा तथा उसका रसूल कहो"।

इसका एक उदाहरण वह क़सीदा बुर्दा भी है जिसे बूसीरी ने "अल-कवाकिब अल-दुर्रीय्या फ़ी मद्हि ख़ैरिल बरीय्या" के नाम से लिखा है जो आम लोगें के बीच अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसे उसने (मीठे) ज़हर तथा सड़े हुए शिर्क (बहुदेववाद) से भर दिया है, वास्तविकता तो यह है कि ईसाईयों ने जिस प्रकार से ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में अतिशयोक्ति से काम लिया ठीक उन्हीं के पद चिह्नों पर चलते हुए उसने यह काव्य लिखा है बल्कि वह इसमें ईसयाईयों से भी दो हाथ आगे बढ़ गया है।

उसके इस कथित प्रसिद्ध काव्य की कुछ पंक्तियों का निम्न में उल्लेख किया जा रहा है:

हे सबसे सम्मानित जीव मुझे क्या हो गया है कि दुःख एवं विपदा के समय आप को छोड़ कर किसी और से सहायता माँगू।

आख़िरत (परलोक) में यदि आप ने मुझ पर कृपा करते हुए मेरा हाथ नहीं पकड़ा तो यह मेरा दुर्भाग्य होगा।

निम्न पंक्त भी उसी का है:

आपके ही दानवीरता के कारण यह संसार है, आप ही के ज्ञान से लौह व क़लम का ज्ञान है।

इस पंक्ति में उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़ैब का ज्ञान रखने वाला बताया है।

एक और पंक्ति देखें:

उस मिट्टी से अच्छी मिट्टी कोई नहीं हो सकती जिसमें आपकी हड्डी मिल गई, धन्य भाग्य उस के जो आपकी क़ब्र को सूँघता तथा चूमता है।[2]

---

[1] देखें: अल-मद्ख़ल (२/ १५)।

[2] बूसीरीर की पुस्तक बुर्दतुल मदीह।

क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र का स्थान जन्नत से भी उत्तम है?

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र को चूमना तथा सूँघना जायज़ है?!

शैख़ुल इस्लाम कहते हैं किः "सभी इमाम इस पर एकमत हैं कि आप की क़ब्र को न तो छूआ जाएगा और न ही उसको चूमा जाएगा, और यह सब तौ़हीद की हिफ़ाज़त के कारण है"।[1]

उसी की एक और पंक्ति है जिसमें वह कहता हैः

तुम कैसे कहते हो कि उन्हें संसार की आवश्यकता है जब्कि संसार की रचना ही उन्हें के लिए हुई, यदि वह नहीं होते ते संसार की रचना नहीं होती।

इस पंक्ति में अतिशयोक्ति की पराकाष्ठा है क्योंकि उसका यह गुमान है कि संसार की रचना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कारण ही हुई है जब्कि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿لَيۡسَ لَكَ مِنَ ٱلۡأَمۡرِ شَيۡءٌ﴾ (हे नबी! इस विषय में आप को कोई अधिकार नहीं)। सूरह आले-इमरानः १२८।

क्या किसी मुस्लिम को इस बात में संदेह हो सकता है कि इस तरह के कथन स्पष्ट रूप से तौ़हीद की तय सीमा का उल्लंघन नहीं करते हैं?!

यदि इसे बिद्अत नहीं कहा जाए तो (कम से कम) शिर्क व बिद्अत से भरा होने के कारण शरीअत के उस नियम सद्दुज़्ज़राएअ[2] से ह़राम तो है ही।

शैख़ इब्ने बाज़ रह़िमहुल्लाह कहते हैं :

"अबीदी राफ़िज़यों ने सर्वप्रथम ईद मीलादुन्नबी मनाने का द्वार खोला, यहाँ तक कि इस्लाम की सही शिक्षा से दूर तथा उसके विरोधी होने के कारण वो लोग मजूसियों एवं ईसाईयों के त्योहार भी मनाया करते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्मदिन मनाना ग़ुलू एवं शिर्क तक पहूँचने का माध्यम है, यह नबियों एवं नेक लोगों के संबंध में ग़ुलू (अतिशयोक्ति) करने का भी साधन है, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा वो उनका महिमांडन व आदर करने में अति कर जाते हैं और इस प्रकार से प्रशंसा करने लगते हैं जिसमें अल्लाह के साथ शरीक व साझी बनाने का भाव आ जाता है, जो कि सबसे बड़ा शिर्क है"।[3]

सातवाँ: अगले पिछले सभी उलेमा का इस बिद्अत का खण्डन करना

यदि ऐसा करना मशरूअ व वैध होता तो उलेमा इसका इंकार नहीं करते, हरेक युग में समाज सुधारक उलेमा ने इसके निराधार होने की बात कही है।

---

[1] मज्मूअ अल-फ़तावा (२६/ ९७)।

[2] किसी बड़ी बुराई तक ले जाने वाले प्रारंभिक माध्यम को बंद कर देना।

[3] फ़तावा नूरुन अलद्दर्ब (३/ ४४)।

फ़ाकिहानी ने "अल-मौरिद फ़ी अमलिल मौलिद" के नाम से एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने इस बिद्अत का खण्डन किया है, वह लिखते हैं :

"ईद मीलादुन्नबी का कोई प्रमाण मुझे क़ुरआन अथवा ह़दीस़ में नहीं मिला, न ही ऐसे अनुकरणीय उलेमा जो प्राचीन उलेमा की कही गई बातों का ज्ञान रखते हैं, ने ऐसी कोई बात कही है, बल्कि यह बिद्अत है जिसका अविष्कार घटिया एवं मूर्ख लोगों ने किया है, यह अपनी मनमानी करना है, जिसे खाने-पीने के शौकीन लोगों ने अवसर के रूप में लिया है"।[1]

शैख़ इस्माईल अंसारी ने लगभग छः सौ पृष्ठ की थीसिस (शोध-ग्रंथ) लिखी है जिसका शीर्षक हैः

"अल-क़ौलुल फ़स़्ल फ़ी हुक्मिल एहतिफ़ाल बिमौलिदि ख़ैरिर्रसुल"।

जिन लोगों ने इस बिद्अत का खण्डन किया है उनमें इमाम शात़बी भी हैं, उन्होंने अपनी पुस्तक "अल-ऐतस़ाम" में इसका रद्द किया है।

तथा अबू शामा रह़िमहुल्लाह भी हैं, चुनाँचे वह अपनी पुस्तक के प्रस्तावना में कहते हैं: "इस पुस्तक का संकलन व संग्रहण मैंने उन लोगों को इस बिद्अत से सावधान करने व डराने के लिए किया है जिसको इसकी तौफीक़ मिले कि वह डरें... और इस पुस्तक का शीर्षक रखा हैः अल-बाइस़ अला इंकारिल बिद्आ वलह़वादिस़"।

और भी लोग हैं जिन्होंने इसे बिद्अत कहते हुए इसका खण्डन किया है जैसे शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम, शैख़ ह़मूद अत्तुवैजिरी, शैख़ अलबानी, शैख़ इब्ने बाज़, शैख़ इब्ने उ़सैमीन तथा पुराने व नए (प्राचीन एवं नवीन) उलेमा का एक बड़ा समूह, रह़मतुल्लाहि अलैहिम अजमईन।

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः

"मीलादुन्नबी मनाने की कोई दलील शरीत -ए- इस्लाम में नहीं है कि इस दिन को उत्सव के रूप में मनाया जाए, शरीअत का अध्ययन करने तथा शोधकर्ता व अन्वेषी उलेमा की बातों से हमें जो समझ में आया है वह यह कि ईद मीलादुन्नबी मनाना निस्संदेह बिद्अत है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो मानव के सबसे बड़े हितैषी व शुभचिंतक तथा अल्लाह की शरीअत (विधान) के सबसे बड़े ज्ञानी हैं, जो अल्लाह के आदेशों को हम तक पहूँचाने वाले हैं उन्होंने कभी अपना जन्मदिन नहीं मनाया, न आपके सहाबा ने, न (चारों) ख़ुलाफ़ाए राशिदीन और न किसी अन्य (प्राचीन उलेमा) ने, यदि आपका जन्मदिन मनाना सुन्नत व भलाई का काम होता तो वो लोग इस कार्य को हमसे पहले तथा हमसे बेहतर तौर पर करते, (यदि ऐसा करना भलाई का काम होता तो यद्यपि) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे नहीं मनाया किंतु अपनी उम्मत व अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को ऐसा करने का आदेश अवश्य देते, किंतु जब उन लोगों ने भी ऐसा नहीं किया तो हमें पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि यह शरीअत का अंग नहीं है, इसी प्रकार से क़ुरूने मुफ़ज़्ज़ला (जिस युग के उत्तम युग होने की सूचना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

[1] रसाइल फ़ी हुक्मिल एहतिफ़ाल बिलमौलिद अन्नबवी (१/ ८-९), जिसे रिआसत इदारत अल-बुहूस़ अल-इल्मीय्या व अल-इफ़्ता के पर्यवेक्षण में लिखा गया है।

सल्लम ने दी है) के लोगों ने भी ऐसा नहीं किया, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसा करना बिद्अत है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हैः (من أحدث في أمرنا هذا ما ليس منه فهو رد) "जिसने हमारे धर्म में ऐसी बात ईजाद की जिसका आदेश मैंने नहीं दिया था तो वह मरदूद (बहिष्कृत) है"।[1]

शिर्क व बिद्आत से बचने, सुन्नत को अनिवार्य रूप से पकड़ने तथा उस पर सब्र व धैर्य रखने से संबंधित उम्मत को एक नसीहत (सदुपदेश व सलाह):

इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रख कर उम्मत को सलाह देने के लिए मैंने यह पुस्तिका लिखी है, बिद्अत व नवाचार का फैलना और लोगों का उस पर चुप्पी साधे रहना बल्कि उसे मुस्तहब व रुचिकर समझना विनाश का घोतक है, यदि उलेमा व दाइयों (दावत का कार्य करने वाले लोगों) ने समय रहते इस की सुध नहीं ली तो कोई अचरज की बात नहीं होगी यदि इस उम्मत का विनाश हो जाए।

जो लोग ईद मीलादुन्नबी मनाने को जायज़ कहते हैं तथा लोगों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं दरअसल ऐसे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का उल्लंघन कर रहे हैं बल्कि आप पर झूठ बाँध रहे हैं एवं आप की शरीअत को अपूर्ण समझ कर उसे पूर्ण करने का (कथि रूप से) प्रयास कर रहे हैं।

जो कोई भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम, और आपका आदर-सम्मान करने का दावा करता है, उसे चाहिए कि सच्ची निष्ठा के साथ अडिग होकर बंदगी करता रहे तथा दीन में बिद्अत व नवाचार एवं अपनी मनमानी करने से बचे।

शिर्क व बिद्अत (बहुदेववाद व नवाचार) जंगल में लगने वाली आग के समान है यदि उस पर क़ाबू नहीं पाया गया तो मानव को जला कर राख एवं वह्य (क़ुरआन व सुन्नत) की रोशनी को बुझा देगी।

ज़रा सोचें कि नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम में मूर्तिपूजन कैसे प्रारंभ हुआ? उसका आरंभ नेक व वरिष्ठ लोगों के सम्मान में अतिशयोक्ति करने, उनकी मूर्ति बनाने तथा बिद्अत को जीवित करने के द्वारा हुआ।

चिन्तन-मनन करने का विषय है कि कैसे इसने प्रथम नबी से ले कर अंतिम नबी तक अपने पर फैला रखे हैं।

अरब द्वीप में मूर्तिपूजन का आरंभ उस समय हुआ जब अम्र अल-ख़ुज़ाई नामक व्यक्ति शाम (वर्तमान सीरिया) गया तो वहाँ उसने लोगों को अल्लाह तआला को छोड़ कर पत्थरों की पूजा करते हुए देखा, उसे यह चीज़ अच्छी लगी और उसने सोचा कि यही हक़ व सच्चा (धर्म) है।

---

[1] फ़तावा नुरुन अलद्दर्ब (१/ ३२६-३२७)।

यह पहला व्यक्ति है जिसने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की (तौहीद वाली) मिल्लत को बदल डाला और लोगों को मूर्तिपूजन का निमंत्रण दिया, अतः क़्यामत तक मूर्तिपूजन से होने वाले गुनाह का अंश उसको भी मिलता रहेगा, अल्लाह तआला उसके संग वही मामला करे जिसका वह पात्र है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मैंने अम्र बिन आमिर बिन लुहैय अल-ख़ुज़ाई को देखा कि वह जहन्नम (नरक) में अपनी आंत को घसीट रहा है, उसी ने सर्वप्रथम साइबा को छोड़ा था"।[1]

साइबा का अर्थ है किः वो लोग जाहिलीय्यत युग में ऊँट को मूर्तियों के नाम पर छोड़ दिया करते थे, एवं ऐसे पशु से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं उठाते थे।[2]

अबू उबैदा रहिमहुल्लाह कहते हैं किः "साइबा हरेक प्रकार के पशुओं में होता था, वह मूर्तियों के नाम की नज़्र (प्रतिज्ञा) मानते थे, अतः उस पशु को खुला छोड़ देते थे, और ऐसे पशु को न तो कोई चरने से रोकता न कहीं भी पानी पीने से और न ही कोई उसके ऊपर सवारी करता"।

हम ईद मीलादुन्नबी मनाने का खण्डन इसलिए करते हैं क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे वैधता नहीं दी है, हम क्या चाहते हैं इसको शरीअत में आधार नहीं बनाया जा सकता बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या चाहते हैं तथा किस चीज़ को पसंद करते हैं उसको आधार बनाया जाएगा।

ध्यान रहे कि बिद्अत, शिर्क का हरकारा व संदेशवाहक होता है, यह दीन में उन चीज़ों का समावेश करना है जिनकी अनुमति अल्लाह तआला व उसके रसूल ने नहीं दी है, इसी कारणवश शैतान इससे प्रसन्न होता है तथा लोगों के समक्ष इसे सुंदर बना कर पेश करता है।

इसीलिए उम्मत के सलफ़ (नेक पूर्वजों) ने बिद्अत व नवाचार की संगीनी से लोगों को सावधान किया है, इसकी विभीषिका से लोगों को चेताया है, और इस विषय में अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

अबू शामा रहिमहुल्लाह अपनी पुस्तक के प्रस्तावना में कहते हैं: "इस पुस्तक का संकलन व संग्रहण मैंने उन लोगों को इस बिद्अत से सावधान करने तथा डराने के लिए किया है जिसको इसकी तौफीक़ मिले कि वह डरें... और इस पुस्तक का शीर्षक रखा हैः अल-बाइस़ अला इंकारिल बिद्आ वलहवादिस़"।

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब सूचना मिली कि कुछ लोग मस्जिद में जमघटा लगा कर सामूहिक ध्वनि में अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं तथा कंकड़ पर तस्बीह़ गिन रहे हैं तो क्रोधित हो कर फ़रमायाः "तुम्हारा नाश हो, हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत, अतिशीघ्र ही तुमने अपने विनाश को निमंत्रण दे दिया जब्कि अभी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जीवित हैं, अभी नबी का कपड़ा भी पुराना नहीं हुआ, अभी तो आपके बर्तन भी नहीं टूटे (और तुमने बिद्अत ईजाद कर ली) उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं तुम लोग या तो मुहम्मद

---

[1] इस ह़दीस़ को मुस्लिम (१५५) ने रिवायत किया है।

[2] तफ़्सीर इब्ने कसीर (३/ २०८)।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से भी उँची सुन्नत का (कथित रूप से) अनुसरण करने का प्रयास कर रहे हो या फिर तुम लोग गुमराही का द्वार खोल रहे हो"।

उन लोगों के इस बिद्अत (विधर्म, नवाचार) को इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सोच कर स्वीकार नहीं किया कि यह लोग ऐसा अच्छी नीयत से कर रहे हैं।

तो उनका क्या होगा जो ऐसा केवल अपनी मनमानी एवं वासनापूर्ति के लिए करते हैं।

इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का ही कथन है किः "हे अल्लाह के बंदों, अनुसरण करो, बिद्अत (विधर्म) न करो, तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए पर्याप्त है"।

दारमी ने ह़सन (अच्छी) सनद से ह़सन बस़री रह़िमहुल्लाह से उनका कथन नकल किया हैः "तुम्हारी सुन्नत (धर्म) -अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है- अति एवं न्यून, अज्ञानता एवं बिल्कुल ही छोड़ देने के मध्य (बिल्कुल संतुलित) सुन्नत है, अतः इसके बताए अनुसार धैर्य के साथ कर्म करो -अल्लाह की तुम पर कृपा हो- याद रखो कि तुम से पहले जो लोग गुज़र चुके हैं उनमें अहले सुन्नत बहुत कम संख्या में थे, वर्तमान में जो लोग हैं उनमें भी अहले सुन्नत बहुत कम हैं, जो उद्दंडों के संग न तो उद्दंडता करते हैं और न ही बिद्अत करने वालों के साथ मिल कर बिद्अत अंजाम देते हैं, बल्कि वो धैर्य के साथ केवल सुन्नत पर अमल करते हैं यहाँ तक कि अपने रब से जा मिलें, मुझे आशा है कि तुम लोग भी इन शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा तो) ऐसे ही हो"। उनका कथन समाप्त हुआ।[1]

अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात का आदेश दिया था कि तीन चीज़ों को हम कभी ना छोड़ें : भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना तथा लोगों को सुन्नत की शिक्षा देना"।[2]

अल्लाह तआला ने भी हमें सुन्नत का उल्लंघन करने से चेताया है, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿فَلْيَحْذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾﴾ (उन्हें सावधान रहना चाहिए जो आपके आदेश का उल्लंघन करते हैं कि उन पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाए)। सूरह अल-नूरः ६३ ।

आप का "अम्र, आदेश" का अर्थ हैः आपका मार्ग, आपका तरीका, आपका ढंग, आपकी सुन्नत एवं आपकी शरीअत, जैसाकि इब्ने कस़ीर रह़िमहुल्लाह ने इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है।[3]

वह कहते हैं: "अर्थात, जो छिप्र अथवा दृश्य रूप में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत का उल्लंघन करते हैं उन्हें डरना व भयभीत होना चाहिए:

---

[1] दारमी (२२२) ने इसे, राय का अप्रिय व मकरूह होना, के अंतर्गत उल्लेख किया है।

[2] अबू शामा ने अल-बाइस़ अला इन्कारिल बिद्अ (१/ १८) में इसका उल्लेख किया है।

[3] तफ़्सीर इब्ने कस़ीर (३/ ३१८)।

﴿أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ﴾ (कि उनको फित्ना पकड़ ले) अर्थातः दिल में: जैसे कुफ्र (अधर्मिता), या निफ़ाक़ (पाखण्ड) या बिद्अत (नवाचार)"।

﴿أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (या उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाए), अर्थात संसार में: क़त्ल, या इस्लामी ह़द्द (सज़ा), या क़ैद इत्यादि के द्वारा।

जिस्से प्रमाणित होता है कि सुन्नत का उल्लंघन व विरोध करना नेमतों (अनुग्रहों) की समाप्ती तथा प्रकोप आने का कारण है।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः "संभव है कि तुम्हारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसे, मैं कहता हूँ किः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (ऐसा-ऐसा) फ़रमाया है, और तुम कहते हो किः अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने (ऐसा-ऐसा) कहा है"।[1]

जब उस युग में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने यह बात कही थी तो यदि आज वह हमारी स्थिति देख लें तो क्या कहेंगे!!

सत्य का मार्ग स्पष्ट है, उसका प्रकाश उज्ज्वल है, और उसका मार्गदर्शन पूर्ण है, अतः नाश होने लोगों की संख्या अधिक देख कर आप धोखे में ना पड़ें।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः अल्लाह तआला ने एक स्थान पर इर्शाद फ़रमाया हैः

﴿وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾﴾ (-उसने बताया है कि- यह दीन व धर्म मेरा मार्ग है जोकि बिल्कुल सीधा है, अतः इसी पर चलो, और दूसरे मार्गों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उसके मार्ग से दूर कर के तित्तर-बित्तर कर देंगे, यही है जिसका आदेश उसने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो)। सूरह अल-अन्आमः १५३.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ से एक रेखा खींची, और फ़रमायाः "यह सीधा मार्ग अल्लाह का मार्ग है, तत्पश्चात आपने उसके दाएं एवं बाएं (अनेक) रेखा खींची, फिर आपने फ़रमायाः यह विभिन्न मार्ग हैं इनमें से हरेक मार्ग पर शैतान बैठा हुआ है जो लोगों को उस ओर बुला रहा है", तत्पश्चात आपने उपरोक्त आयत कि तिलावत फ़रमाई (पाठ किया)।[2]

उस समुदाय के भविष्य का सोचें जो अपने रब के आज्ञापालन तथा रसूलों की सुन्नत से दूर हो गई हो, थोड़ा विचार करें कि उस उम्मत की शक्तिहीनता एवं कमज़ोर जीवन शैली की कैसी स्थिति होगी।!!

अल्लाह तआला ने स़मूद समुदाय के बारे में फ़रमाया हैः ﴿أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَٰهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾﴾ (क्या तुम छोड़

---

[1] अह़मद ने इसे अपनी मुस्नद (३१२१) में रिवायत किया है।

[2] इस ह़दीस़ को अह़मद (४१४२) ने मुस्नद में रिवायत किया है।

दिए जाओगे उस में जो यहाँ हैं निश्चिंत रह कर? बाग़ों तथा स्रोतों में। तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं। तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुए)। सूरह शुअराः १४६-१४९।

सबा समुदाय के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ﴿لَقَدۡ كَانَ لِسَبَإٖ فِي مَسۡكَنِهِمۡ ءَايَةٞۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٖ وَشِمَالٖۖ كُلُواْ مِن رِّزۡقِ رَبِّكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لَهُۥۚ بَلۡدَةٞ طَيِّبَةٞ وَرَبٌّ غَفُورٞ ١٥﴾ (सबा की जाति के लिए उन की बस्तियों में एक निशानी थी, बाग़ थे दायें और बायें, खाओ अपने रब का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो, स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी रब व पालनहार)। सूरह सबाः १५।

विचारणीय है कि नाशुक्री व कृतघ्नता के कारण स्थिति कैसे पलट गई, चुनाँचे अवज्ञा एवं अहसानफ़रामोशी के पश्चात उसकी क्या स्थिति हुई इसका उल्लेख अल्लाह तआला ने निम्न आयत में किया हैः

﴿فَأَعۡرَضُواْ فَأَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ سَيۡلَ ٱلۡعَرِمِ وَبَدَّلۡنَٰهُم بِجَنَّتَيۡهِمۡ جَنَّتَيۡنِ ذَوَاتَيۡ أُكُلٍ خَمۡطٖ وَأَثۡلٖ وَشَيۡءٖ مِّن سِدۡرٖ قَلِيلٖ ١٦﴾

(परंतु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़, तथा बदल दिया हमने उन के दो बाग़ों को दो कड़वे फलों के बाग़ों और झाऊ तथा कुछ बैरी से)। सूरह सबाः १६।

समूद समुदाय का क्या अंजाम हुआ इसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने इस आयत में किया हैः ﴿وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيۡنَٰهُمۡ فَٱسۡتَحَبُّواْ ٱلۡعَمَىٰ عَلَى ٱلۡهُدَىٰ فَأَخَذَتۡهُمۡ صَٰعِقَةُ ٱلۡعَذَابِ ٱلۡهُونِ بِمَا كَانُواْ يَكۡسِبُونَ ١٧﴾ (और रही समूद की बात तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा, अंततः पकड़ लिया उनको अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे)। सूरह हा मीम सज्दा (अल-सफ़्फ़): १७।

यह निश्चित ठिकाना व उदाहरण हरेक काफ़िर (अविश्वासी) तथा सुन्नत का उल्लंघन करने वालों का है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلٗا قَرۡيَةٗ كَانَتۡ ءَامِنَةٗ مُّطۡمَئِنَّةٗ يَأۡتِيهَا رِزۡقُهَا رَغَدٗا مِّن كُلِّ مَكَانٖ فَكَفَرَتۡ بِأَنۡعُمِ ٱللَّهِ فَأَذَٰقَهَا ٱللَّهُ لِبَاسَ ٱلۡجُوعِ وَٱلۡخَوۡفِ بِمَا كَانُواْ يَصۡنَعُونَ ١١٢﴾ (अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शांत संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहूँच रही थी, तो उसने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़्र किया, तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा दिया उसके बदले जो वह कर रहे थे)। सूरह नह़्लः ११२।

इब्ने कसीर रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः "इस उदाहरण का अभिप्राय मक्का वासी हैं, क्योंकि वह शांत एवं सुरक्षित थी"।

इसीलिए अल्लाह तआला ने उनके इस बस्ती की इन दो अच्छी स्थितियों को, बुरी दो स्थितियों से बदल दिया, अतः फ़रमायाः ﴿فَأَذَٰقَهَا ٱللَّهُ لِبَاسَ ٱلْجُوعِ وَٱلْخَوْفِ﴾ (तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का मज़ा चखा दिया)।

सोचनीय है कि किस प्रकार से अल्लाह तआला ने भूख एवं भय का वर्णन किया है कि वह उसके लिबास व वस्त्र के समान उसका अभिन्न अंग हो गया जो उससे जुदा नहीं होता था, जब्कि इसके पूर्व वो सुरक्षित, शांत एवं उत्तम जीवन जी रहे थे।

याद रखें, एक-दूजे से हार्दिक लगाव, एकता एवं आपसी ताल-मेल केवल सही अक़ीदा को अपनाने एवं सुन्नत पर चलने व उसका प्रचार-प्रसार के द्वारा ही संभव है।

अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ﴿وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْۚ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا مَّآ أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْۚ إِنَّهُۥ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾﴾ (और उनके दिलों को जोड़ दिया, और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (ख़र्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ (निपुण) है)। सूरह अन्फ़ालः ६३ ।

अपने संकटों के निवारण तथा अपने धर्म विरोधियों: यहूदी, ईसाई, अधर्मी, बातिनी एवं राफ़ज़ी जैसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इस उम्मत को अति आवश्यकता है सही अक़ीदा पर अडिग हो जाने एवं ईमान को मज़बूत करने की, और यह संभव है केवल सुन्नत को सही ढंग से अंगीकार करने के द्वारा न कि बिद्अतों को जीवनदान देने और बिद्अत आधारित ईद मीलादुन्नबी मनाने के द्वारा जिसने उम्मत को उलझा कर रखा है और उसे सही अक़ीदा व दीन से दूर कर दिया है, परंतु इसका कारण वही है जिसका उल्लेख कुछ उलेमा ने किया है कि क़ौमें जब कमज़ोर होती हैं तो वह अपने वरिष्ठ लोगों के सही व सीधे मार्ग व दृष्टिकोण का पालन करने के विपरीत उनके सम्मान में अति करते हुए उनके आदर-सत्कार के लिए भव्य आयोजन करने लग जाती है।

हे अल्लाह, तू मुसलमानों को अपनी ओर बेहतर ढ़ंग से फेर दे, सभी प्रकार के छिप्त अथवा दृश्य फित्नों व आज़माइशों से हमारी रक्षा कर, हे हमारे रब व प्रभु, हमें मार्गदर्शित करने के पश्चात हमारे दिलों को कुटिल न कर, तथा हम पर अपनी दया-दृष्टि बनाए रख, वास्तव में तू बड़ा दाता है।

लेखिकाः

डॉक्टर क़ज़ला बिंत मुहम्मद आले ह़व्वाश अल-क़ह़तानी

१० रबीउल अव्वल १४३६ हिजरी

संदर्भ स्रोत

1- अल-इब्दाअ फ़ी मज़ार्रिल इब्तेदाअ, लेखकः अली महफ़ूज़, संशेधनः सईद बिन नस्र बिन मुहम्मद, प्रकाशकः मकतबा अल-रुश्द – रियाज़।

2- अल-इत्क़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, लेखकः अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर जलालुद्दीन सुयूती, संशोधनः मुहम्मद अबुल फज़्ल इब्राहीम, प्रकाशकः अल-हैआ अल-मिस्रीय्या अल-आम्मा लिलकिताब, प्रकाशन वर्षः १३९४ हिजरी / १९७४ ईस्वी।

3- ईस्बातु नबूवतिन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, लेखकः अबुल हुसैन अहमद बिन अल-हुसैन बिन हारून अल-हारूनी अल-हसनी अल-ज़ैदी, प्रकाशकः अल-मकतबा अल-इल्मीय्या – लुबनान।

4- अल-अजविबा अल-मर्ज़ीय्या फ़ीमा सुईला अल-सख़ावी अन्हु मिन अल-अहादीस़ अल-नबवीय्या, लेखकः शम्स मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अल-सख़ावी, संधोधनः डॉक्टर मुहम्मद इस्हाक़ मुहम्मद इब्राहीम, प्रकाशः दारुर्राया लिन्नश्रि वत्तौज़ीअ, प्रथम संस्करण, प्रकाशन वर्षः १४१८ हिजरी।

5- आराउल मुस्तशरिक़ीन हौलल क़ुरआन व तफ़्सीरिही, लेखकः डॉक्टर उमर बिन इब्राहीम रिज़वान, प्रथम संस्करणः १४१३ हिजरी / १९९२ ईस्वी, प्रकाशकः दार तैबा, रियाज़।

6- इस्तिख़राजुल जिदाल मिनल क़ुरआन करीम, लेखकः अब्दुर्रहमान बिन नज्म बिन अब्दुल वह्हाब जज़री साअदी इबादी अबुल फरज नासेहुद्दीन हम्बली, संशोधनः डॉक्टर ज़ाहिर बिन अव्वाज़ अल-अलमई, प्रकाशकः मताबेअ अल-फ़रज़दक़ अल-तिजारीय्या।

7- अल-इस़ाबा फ़ी तम्यीज़ अल-स़हाबा, लेखकः इब्ने हजर अल-असक़लानी, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या – बैरूत।

8- इज़्हारुल हक़, लेखकः रहमतुल्लाह हिंदी, प्रथम संस्करणः १४१० हिजरी / १९८९ ईस्वी, संशोधनः मुहम्मद अहमद, प्रकाशकः इदारतुल बुहूस़ अल-इल्मीय्या व अल-दावा व अल-इफ़्ता।

9- ऐजाज़ुल क़ुरआन, लेखकः अबू बकर मुहम्मद बिन तैयब बाक़िल्लानी, संशोधनः इमादुद्दीन अहमद हैदर, प्रथम संस्करणः १४०६ हिजरी / १९८६ ईस्वी, प्रकाशकः मुअस्सिसा अल-कुतुब अल-स़क़ाफ़ीय्या।

10- अल-ऐतस़ाम, लेखकः इब्राहीम बिन मूसा बिन मुहम्मद अल-लख़मी अल-ग़रनाती जो शातबी के नाम से प्रसिद्ध थे, संशोधनः सलीम बिन अब्दुल्लाह हिलाली, प्रकाशकः दार इब्ने अफ़्फ़ान, सऊदिया अरबिया, प्रथम संस्करणः १४१२ हिजरी / १९९२ ईस्वी।

11- ऐजाज़ुल क़ुरआन वल बलाग़ा अन्नबवीय्या, लेखकः मुस्तफ़ा अल-राफिई, तृतीय संस्करण, प्रकाशकः दारुल किताब अल-अरबी।

12- आलामुन्नबूवत, लेखकः अबुल ह़सन अली बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन ह़बीब बस़्री बग़दादी जो मावरदी के नाम से प्रसिद्ध थे, प्रकाशकः दार व मकतबा अल-हिलाल – बैरूत।

13- अल-ऐलाम बिमा फ़ी दीन अल-नस़ारा मिनल फ़साद वल औहाम व इज़्हार मह़ासिनिल इस्लाम।

14- अल-आलाम, लेखकः ज़िरिक्ली, दारुल इल्म लिलमलायीन, नवम संस्करण १९९० ईस्वी।

15- इक़्तेज़ाउस़्स़िरातुल मुस्तक़ीम लि मुख़ालिफ़ति अस़्ह़ाबिल जह़ीम, लेखकः तक़ीयुद्दीन अबुल अब्बास अह़मद बिन अब्दुल ह़लीम बिन अब्दुस्सलाम बिन अब्दुल्लाह बिन अबुल क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन तैमीय्या अल-ह़र्रानी अल-ह़म्बली अल-दिमश्क़ी, संशोधनः नास़िर अब्दुल करीम अल-अक़्ल, प्रकाशकः दार आलमिल कुतुब – बैरूत – लुबनान, सप्तम संस्करणः १४१९ हिजरी / १९९९ ईस्वी।

16- अल-इंतेस़ार, लेखकः ख़य्यात़, संशोधन व आमुखः मुह़म्मद ह़िजाज़ी, प्रकाशकः मकतबा अल-स़क़ाफ़ा अल-दीनीय्या, क़ाहिरा।

17- इंजील मत्ती।

18- इंजील योहन्ना।

19- ईस़ारुल ह़क़्क़ अलल ख़ल्क़ फ़ी रद्दिल ख़िलाफ़ात इलल मज़हबिल ह़क़्क़ मिन उस़ूलित्तौह़ीद, लेखकः इब्नुल वज़ीर मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन अली बिन मुर्तज़ा बिन मुफ़ज़्ज़ल ह़सनी क़ासमी अबू अब्दिल्लाह इज़्ज़ुद्दीन यमनी, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या – बैरूत, द्वितीय संस्करणः १९८७ ईस्वी।

20- अल-बाइस़ अला इंकारिल बिदआ व अल-ह़वादिस़, लेखकः अबुल क़ासिम शिहाबुद्दीन अब्दुर्रह़मान बिन इस्माईल बिन इब्राहीम मक़दसी दिमश्की जो अबू शामा के नाम से प्रसिद्ध थे, संशोधनः उस़्मान अह़मद अंबर, प्रकाशकः दारुल हुदा – क़ाहिरा, प्रथम संस्करणः १३९८ हिजरी / १९८७ ईस्वी।

21- अल-बिदाय व अन्निहाया, लेखकः अबुल फ़िदा ह़ाफ़िज़ इब्ने कस़ीर दिमश्की, प्रथम संस्करणः १४०८ हिजरी / १९८८ ईस्वी, प्रकाशकः दारुर्रय्यान लित्तुरास़, क़ाहिरा, संशोधनः डॉक्टर अह़मद अबू मलह़म व अन्य।

22- क़सीदा बुर्दा शरीफ़ (अल-कवाकिब अल-दुर्रीय्या फ़ी मद्‌हि खैरिल बरीय्या, कविः शरफ़ुद्दीन मुह़म्मद बिन सईद बूस़ीरी, संशोधनः यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी, प्रकाशकः दारुल फिक्र।

23- अल-बुर्हान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, लेखकः बदरुद्दीन मुह़म्मद बिन अब्दुल्लाह ज़रकशी, संशोधनः मुह़म्मद अबुल फ़ज़्ल इब्राहीम, प्रकाशकः दारुल मारिफ़ा – बैरूत।

24- बस़ाइरु ज़विताम्मयीज़ फ़ी लत़ाइफ़िल किताबिल अज़ीज़, लेखकः मज्दुद्दीन अबू त़ाहिर मुह़म्मद बिन याक़ूब फ़ैरोज़ाबादी, संशोधनः मुह़म्मद अली नज्जार, प्रकाशकः अल-

मज्लिस अल-आला लिश्शुऊन अल-इस्लामीय्या – लजनता इह़याउत्तुरास अल-इस्लामी, क़ाहिरा।

25- तारीख़ुल उमम वलमुलूक, लेखकः अबू जाफ़र त़बरी, प्रथम संस्करणः १४०७ हिजरी, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या – बैरूत।

26- तारीख़ -ए- बग़दाद, लेखकः अबू बकर अह़मद बिन अली ख़तीब बग़दादी, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या।

27- तफ़्सीरुल क़ुरआन अल-अज़ीम, लेखकः इब्ने कसीर, प्रकाशकः दारुस्सलाम, रियाज़।

28- जामेउल बयान अन तावील आय अल-क़ुरआन, लेखकः अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर त़बरी, प्रकाशन वर्षः १४०५ हिजरी / १९७४ ईस्वी, प्रकाशकः दारुल फ़िक्र बैरूत – लेबनान।

29- अल-जामे लि अह़कामिल क़ुरआन, अबू अब्दिल्लाह मुहम्मद बिन अह़मद अल-अंसारी अल-कुर्तुबी, तृतीय संस्करण, प्रकाशकः दारुल मनार – जेद्दा।

30- अल़-जवाब अल- स़हीह लि मन बद्दला दीन अल-मसीह़, लेखकः शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या, प्रकाशकः अल-मदनी, आमुखः अली सय्यद मदनी।

31- अल-ख़साइ़सुल कुब्रा, लेखकः अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर जलालुद्दीन सुयूती, प्रथम संस्करणः १४०५ हिजरी / १९८५ ईस्वी, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या – बैरूत – लेबनान।

32- दाइरतु मआरिफ़ अल-क़र्न अल-इश्रीन, लेखकः मुहम्मद फ़रीद, प्रकाशकः दारुल मारिफ़ा।

33- दिरासतुल कुतुब अल-मुक़द्दसा फ़ी ज़ौई अल-मआरिफ़ अल-ह़दीसा, लेखकः मौरिस बोकाय, चतुर्थ संस्करणः १९७७ ई. प्रकाशकः दारुल मआरिफ़।

34- अल-दुरर अल-कामिना फ़ी आयान अल-मेआ अल-स़ामिना, अबुल फज़्ल अह़मद बिन अली बिन मुहम्मद बिन अह़मद बिन ह़जर अल-अस्क़लानी, संशोधनः मुहम्मद अब्दुल मुईद ख़ान, प्रकाशकः दारितुल मआरिफ़ अल-उस्मानीय्या – हैदराबाद- हिंदुस्तान, द्वितीय संस्करणः १३९२ हिजरी / १९७२ ईस्वी।

35- दलाइलुन्नबूवत, लेखकः ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम अल-अस्बहानी, द्वितीय संस्करणः १४०६ हिजरी / १९८६ ईस्वी, संशोधनः मुहम्मद वास क़लआ व अब्दुल बर्र अब्बास, प्रकाशकः दारुन्नफ़ाइस – बैरूत।

36- दलाइलुन्नबूवत व मारिफत अह़वाल साहिब अल-शरीअत, लेखकः अबू बकर अह़मद हुसैन बैहिक़ी, प्रथम संस्करणः १४०८ हिजरी / १९८८ ईस्वी, संशोधनः अब्दुल मोअती क़लअजी, प्रकाशकः दारुल बयान लित्तुरास़ – क़ाहिरा।

37- दलाइलुन्नबूवत, लेखकः अबू बकर जाफर बिन मुहम्मद बिन हुसैन फरयाबी, प्रथम संस्करणः १४०६ / १९८६, संशोधनः आमिर ह़सन स़बरी, प्रकाशकः दार ह़िरा – मक्का।

38- शोधपत्र, बहस फ़ी हुक्मिल मौलिद, मज्मूअ अल-फ़त्ह़ अल-रब्बानी के अंतर्गत।

39- अल-रिसाला, लेखकः शाफ़ई अबू अब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इदरीस बिन अब्बास बिन उस्मान बिन शाफे बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन अब्दे मनाफ मुत्तलबी कुरशी मक्की, संशोधनः अह़मद शाकिर, प्रकाशकः मकतबा अल-हलबी – मिस्र, प्रथम संस्करणः १३८५ / १९४०।

40- अर्रिसाला अश्शाफ़िया फ़ी वुजूहिल ऐजाज़, लेखकः अब्दुल क़ाहिर जुर्जानी, टिप्पणी व संशोधनः अह़मद शाकिर, प्रकाशन वर्षः १४१० / १९८९, प्रकाशकः मकतबा अल-ख़ानजी – क़ाहिरा।

41- रसाइल फ़ी हुक्मिल एहतिफ़ाल बिल मौलिद अल-नबवी, पर्यवेक्षणः रिआसा इदारा अल-बुहूस़ अल-इल्मीय्या व अल-इफ़्ता।

42- रूअया इस्लामीय्या लि अल-इस्तिशराक बायनातुल किताब – अल-मकतबा अल-मरकज़ीय्या, लेखकः अह़मद ग़र्राब, द्वितीय संस्करण १९९०, प्रकाशकः अल-मुंतदा अल-इस्लामी।

43- सिफ्र अल-तस़नीय्या।

44- सिफ्र अल-तकवीन।

45- सुनन अबू दाऊद, लेखकः ह़ाफ़िज़ अबू दाऊद सुलेमान बिन अल-अशअस़ सिजिस्तानी, प्रकाशकः दारुल जिनान – बैरूत।

46- सियरो आलाम अल-नुबला, लेखकः शमसुद्दीन ह़मद बिन अह़मद बिन उस्मान ज़हबी, नवम संस्करणः १४१३ / १९९३, प्रकाशकः मुअस्सिसा अल-रिसाला।

47- सीरत इब्ने इस्हाक (किताबुस्सियर वल मग़ाज़ी), लेखकः मुह़म्मद बिन इस्हाक बिन यसार मुत्तलबी मदनी, संशोधनः सुहैल ज़क्कार, प्रकाशकः दारुल फिक्र – बैरूत, प्रथम संस्करणः १३९८ / १९७८।

48- अल-सीरत अल-नबवीय्या, लेखकः इब्ने हिशाम, प्रथम संस्करणः १४०९ / १९८८, प्रकाशकः मकतबा अल-मनार – जॉर्डन,संशोधनः हम्माम सईद व मुह़म्मद बिन अब्दुल्लाह अबू सुऐलीक।

49- शर्हुल अरबईन अन्नौवीय्या, लेखकः मुह़म्मद बिन सालेह अल-उसैमीन, प्रकाशकः दार अल-सुरैया।

50- शर्हुल अक़ीदा अल-अस़्फ़हानीय्या, शैख़ुल इस्लाम अह़मद बिन अब्दुल ह़लीम इब्ने तैमीय्या अल-ह़र्रानी, प्रथम संस्करणः १४१५, प्रकाशकः मकतबा रुश्द, रियाज, संशोधनः इब्राहीम सईदानी।

51- शर्हुल अक़ीदा अल-अत्तहावीय्या, लेखकः अबुल इज्ज अल-ह़नफ़ी, प्रकाशकः अल-मकतब अल-इस्लामी।

52- अल-शफ़ा बि तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफा, लेखकः अबुल फज़्ल ऐयाज़ बिन मूसा बिन अयाज़ यहसुबी, प्रकाशकः ईसा अल-हलबी, संशोधनः अली मुहम्मद अल-बुजावी।

53- शमाइलुर्रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), लेखकः ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर, द्वितीय संस्करणः १४०९ / १९८८, प्रकाशकः दारुल क़िब्ला लिस्सकाफा अल-इस्लामीय्या व मुअस्सतु उलूमिल क़ुरआन, संशोधनः डॉक्टर मुस्तफा अब्दुल वाहिद।

54- अल-सारिम अल-मसलूल अला शातिम अल-रसूल, लेखकः तक़ीयुद्दीन अबुल अब्बास अह़मद बिन अब्दुल ह़लीम बिन अब्दुस्सलाम बिन अब्दुल्लाह बिन अबुल क़ासिम बिन मुहम्मद बिन तैमीय्या अल-ह़र्रानी अल-ह़म्बली अल-दिमश्क़ी, संशोधनः मुहम्मद मुहयुद्दीन अब्दुल ह़मीद, प्रकाशकः अल-ह़र्स अल-वत़नी अल-सऊदी, सऊदी अरबिया।

55- अल-सिहाह, लेखकः इस्माईल बिन ह़म्माद जौहरी, संशोधनः अह़द अब्दुल ग़फ़ूर उतारद, दारुलइल्म लिलमलायीन, तृतीय संस्करणः १४०४ / १९८४।

56- स़ह़ीह़ अल-बुख़ारी, लेखकः अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुख़ारी, संशोधनः डॉक्टर मुस्तफा दीब अल-बुग़ा, चतुर्थ संस्करणः १४१०, प्रकाशकः दार इब्ने कसीर।

57- स़ह़ीह़ मुस्लिम, लेखकः अबुल हुसैन मुस्लिम बिन अल-ह़ज्जाज अल-क़ुशैरी नीशापूरी, संशोधनः मुहम्मद फवाद अब्दुल बाकी, प्रकाशकः अल-मकतबा अल-इस्लामिया – इस्तांबुल – तुर्की।

58- अल-अक़ीदा अल-नज़्ज़ामिया फ़ी अल-अरकान अल-इस्लामिया, लेखकः इमामुल ह़रमैन अबुल मआली अब्दुल मलिक बिन अब्दुल्लाह अल-जुवैनी, प्रकाशकः मकतबा अल-कुल्लियात अल-अज़हरिया – अल-क़ाहिरा, आमुख व संशोधनः डॉक्टर अह़मद हिजाज़ी अल-सक़्क़ा।

59- अल-अक़ीदा व अल-शरीआ फ़ी अल-इस्लाम, लेखकः अज्नास गोल्ड ज़ीहर, अनुवाद व टिप्पणीः मुहम्मद यूसुफ व अब्दुल अज़ीज़ अब्दुल ह़क़ व अली हसन अब्दुल क़ादिर, प्रकाशकः दारुल किताब मिस्री, प्रकाशन वर्षः १९४६ ।

60- उयूनुल अस़र फ़ी फुनून अल-मग़ाज़ी व अल-शमाइल व अल-सियर, लेखकः ह़ाफ़िज़ अबुल फ़त्ह मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सय्यिदुन्नास, संशोधनः मुहम्मद अल-ईद व मुहयुद्दीन मस्तू, प्रकाशन वर्षः १४१३ / १९९२, प्रकाशकः दार इब्ने कसीर – बैरूत।

61- फ़तावा नूरुन अलद्दर्ब।

62- फ़तावा व रसाइल समाह़त अल-शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम।

63- फत्हुल बारी शर्ह स़ह़ीह़ बुख़ारी, लेखकः अबुल फज़्ल अह़मद बिन अली बिन मुहम्मद बिन अह़मद बिन ह़जर अल-अस्क़लानी, प्रथम संस्करणः १४१० / १९८९, प्रकाशकः दारुल कुतुब अल-इल्मीय्या, बैरूत – लेबनान।

64- अल-फ़र्क़ बैन अल-फ़िरक़ व बयान अल-फ़िरक़ा अल-नाजिया मिंहुम, लेखकः उस्ताद अब्दुल क़ाहिर बिन ताहिर बग़दादी, संशोधनः लजना ऐहयाउत्तुरास़ अल-अरबी, प्रकाशन वर्षः १४०८ / १९८७, प्रकाशकः दारुल जील – दारुल आफ़ाक़ – बैरूत।

65- अल-फ़स़्ल फ़ी अल-मिलल व अल-अह्वा व अल-निह़ल, लेखकः इब्ने ह़ज़्म ज़ाहिरी, प्रकाशकः मकतबा अल-ख़ानजी – क़ाहिरा।

66- अल-फ़वायद, लेखकः शमसुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन क़ैयिम अल-जौज़ीय्या, द्वितीय संस्करणः १४०८ / १९८८, प्रकाशकः मकतबा अल-मुअय्यिद – ताइफ, मकतबा दारुलबयान – दमिश्क़।

67- लवामिउल अनवार अल-बहीय्या व सवातिउल असरार अल-अस़रिया लि शर्ह अद्दुर्रा अल-मज़ीया फ़ी अक़्दिल फ़िरक़ अल-मरज़ीय्या, लेखकः शैख़ मुह़म्मद बिन अह़मद सफ्फारीनी अस़री हम्बली, द्वितीय संस्करणः १४१२ / १९९२, प्रकाशकः मुअस्सिसा अल-ख़ाफेक़ीन – दमिश्क़।

68- मबाहिस़ फ़ी ऐजाज़िल क़ुरआन, लेखकः मुस्तफा मुस्लिम, प्रथम संस्करण १४९८ हिजरी।

69- मबाहिस़ फ़ी उलूमिल क़ुरआन, लेखकः शैख़ मन्नाअ ख़लील अल-क़त्तान, पंचम संस्करणः १४०१, प्रकाशकः मकतबा वहबा।

70- मजमउज़्ज़वाइद, लेखकः हैस़मी, प्रकाशन वर्षः १४०७, दारुर्रय्यान लित्तुरास़ व दारुल किताब अल-अरबी – क़ाहिरा – बैरूत।

71- मज्मूअ अल-फ़तावा, लेखकः शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमीय्या, संशोधनः अब्दुर्रह़मान बिन मुह़म्मद अल-क़ासिम, प्रकाशकः मकतबा इब्ने तैमीय्या।

72- मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़ी अल-किताब अल-मुक़द्दस, लेखकः अब्दुल अह़द दाऊद।

73- मुस्नद इमाम अह़मद बिन हम्बल, संशोधनः अह़मद शाकिर, प्रकाशकः दारुल मआरिफ़।

74- अल-मोअजज़ा अल-कुब्रा अल-क़ुरआन, लेखकः मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मुस्तफा बिन अह़मद प्रसिद्ध नाम अबू ज़ुह्रा, प्रकाशकः दारुल फिक्र अल-अरबी।

75- मनाहिलुल इरफ़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन अल-करीम, लेखकः शैक़ मुह़म्मद अब्दुल अज़ीम ज़रक़ानी, प्रकाशकः दारु एह्याउत कुतुब अल-अरबिया।

76- अल-मिन्हाज फ़ी शुअबिल ईमान, लेखकः अल-ह़लीमी, संशोधनः हुल्मी मुह़म्मद फोदा, प्रथम संस्करणः १३९९, प्रकाशकः दारुल फिक्र।

77- मौसूअतुल मुस्तशरिकीन, लेखकः अब्दुर्रह़मान बदवी, प्रकाशन वर्षः १९९३।

78- मीज़ानुल एतदा फ़ी नक्दिर्रिजाल, लेखकः अबू अब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद बिन उस्मान ज़हबी, संशोधनः अली मुह़म्मद अल-बुजावी, प्रकाशकः दारुल फिक्र।

79- अल-नुबुव्वात, लेखकः तक़ीयुद्दीन अबुल अब्बास अह़मद बिन अब्दुल ह़लीम बिन अब्दुस्सलाम बिन अब्दुल्लाह बिन अबुल क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन तैमीय्या, प्रकाशन वर्षः १४०५ / १९८५, प्रकाशकः दारुलकिताब अल-अरबी – बैरूत, संशोधनः मुह़म्मद अब्दुर्रह़मान एवज़।

80- हिदायतुल ह़्यारा फ़ी अजविबति अल-यहूद व अल-नस़ारा, लेखकः इब्नु कैयिमिल जौज़िया, प्रकाशकः दारुल मतबआ अस्सलफिया, वितरणः दारुर्रय्यान, संशोधनः डॉक्टर अह़मद अल-सक़्क़ा।

81- वह़्युल्लाह, लेखकः हसन ज़ियाउद्दीन इत्र, द्वितीय संस्करणः प्रकाशकः दारुल फुनून – जेद्दा।

82- अल-वह़्य अल-मुह़म्मदी, लेखकः डॉक्टर अब्दुल जलील शलबी, प्रकाशन वर्षः १४०६ / १९८५, प्रकाशकः मताबिउश्शरूक़ – क़ाहिरा।

83- अल-वह़्य फिल इस्लाम व इब्तालुश्शुबुहात, लेखकः अब्दुल्लाह अब्दुल ह़य्य अबू बकर (जोकि एम.ए. का थेसिस है जिसे टाइपराइटर पर टंकित कर के उम्मुल क़ुरा यूनिवर्सिटी में जमा किया गया है)।

84- अल-वफ़ा बि अह़वालिल मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), लेखकः अबुल फरज अब्दुर्रह़मान बिन अल-जौज़ी, प्रथम संस्करणः १३८६ / १९६६, प्रकाशकः मतबआ अस्सआदह – दारुल कुतुब अल-ह़दीस़ह, संशोधनः मुस्तफ़ा अब्दुल वाह़िद।

विषय सूची

जरूरी संदेश 3

प्राक्कथन..... 4

पहला अध्याय..... 7

क़ुरआन की चुनौती का उल्लेख इसके अनेक आयतों (श्लोकों) में हुआ हैः 10

क़ुरआन के ऐजाज़ (चमत्कार) की किस्मों के बारे में उलेमा के विभिन्न कथन..... 14

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की दूसरी स्पष्ट दलीलः नबूवत के पूर्व तथा पश्चात के आप की स्थितियों तथा विशेषताओं में चिंतन-मनन एवं विशलेषण करके आपकी नबूवत को प्रमाणित करनाः 25

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की तीसरी स्पष्ट दलीलः गुज़श्ता क़ौम के विषय में तथा पिछले नबियों के बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो सूचनाएं दी हैं, उनके द्वारा आपकी नबूवत को प्रमाणित करनाः 28

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की चौथी स्पष्ट दलीलः प्रारंभ काल से नबियों की उपस्थिति को साबित करके आपकी नबूवत की सच्चाई को सामने लानाः..... 29

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की पाँचवीं स्पष्ट दलीलः आप की नबूवत के सत्य होने का एक प्रमाण यह भी है कि आपको ऐसे युग में नबी बना कर भेजा गया जब लोगों को एक रसूल की अत्यंत आवश्यकता थीः 31

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की छठी स्पष्ट दलीलः प्राचीन आसमानी किताबों में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत की शुभ-सूचना का पाया जानाः..... 32

वह दलीलें जिनसे यहूदियों व ईसाइयों की पुस्तकों में आपके उल्लेख का प्रमाण मिलता है..... 35

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत की सातवीं स्पष्ट दलीलः 41

दूसरा पाठः..... 47

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का आम व व्यापक होना 47

क़ुरआन का अरबी भाषा में अवतरित होने का यह अर्थ नहीं है कि आपकी रिसालत आम व व्यापक नहीं थी 51

दूसरा अध्यायः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबूवत का इंकार करने वालों के शुबुहात, शंकाएं एवं भ्रांतियां..... 52

पहली भ्रांतीः मक्का के काफ़िरों ने यह दावा किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जादूगर हैं जिसके आधार पर आपकी लाई हुई वह्य उनके समीप जादू मानी जाती है। 52

दूसरी भ्रांतिः यह दावा कि वह्य (आकाशवाणी, प्रकाशना) की जो दशा हमें दृष्टिगोचर होती है वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा से उपजी धारणा एवं उनकी कपोल कल्पना मात्र हैः 55

तीसरी भ्रांतिः प्रीचीन धर्मों के नियम एवं संविधान के मिश्रण से एक नया धर्म बना लेना 62

चौथी भ्रांतिः जिसे हम वह्य कहते हैं वास्तव में वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तंत्रिका प्रतिक्रियाओं का परिणाम है 74

पाँचवीं भ्रांतिः यह दावा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह्य के बारे में संदेह व भ्रम थाः . 76

सारांश 80

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने वालों के संबंध में उलेमा के कथनों का उल्लेखः.... 81

ईद मीलादुन्नबी ﷺ मनाना कैसा है? 91

संदर्भ स्रोत 109

विषय सूची 116